Plagiarism Detector v. 2867 - Originality Report 3/27/2025 4:56:21 PM

Analyzed document: CPS-2.pdf Licensed to: Pitamber Dutt Pant

Comparison Preset: Rewrite Detected language: Hi

Check type: Internet Check

TEE and encoding: PdfPig

Detailed document body analysis:

Relation chart:

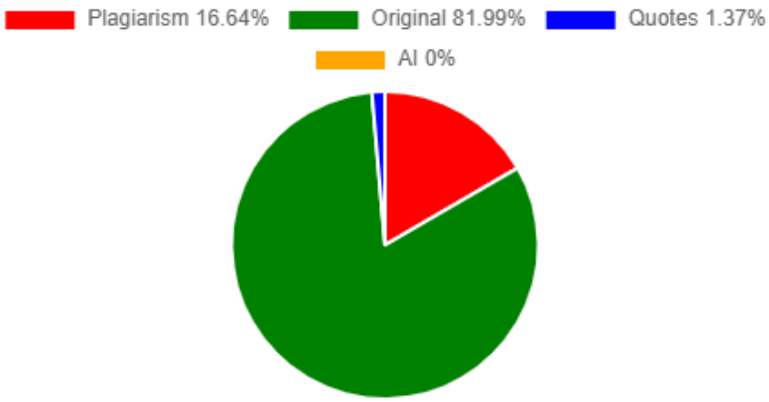

Distribution graph:

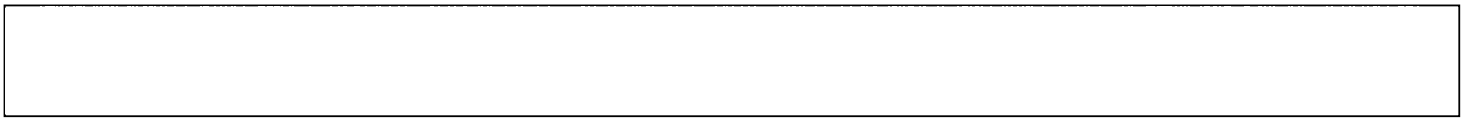

Top sources of plagiarism: 46

6%	3531	1. https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shabd
5%	3120	2. https://www.munotes.in/Articles/Macro Economics Concepts and applications (Marathi Version)-munotes.html
5%	1142	3. https://web-crawler.plagiarism-detector.com/get-doc-pt?did=9EilOYK6-jVJng

Processed resources details: 252 - Ok / 4 - Failed

Important notes:

Wikipedia:	Google Books:	Ghostwriting services:	Anti-cheating:
WIKIPEDIA	Google Book Search		
Wiki Detected!	[not detected]	[not detected]	[not detected]

UACE: UniCode Anti-Cheat Engine report:

1. Status: Analyzer On Normalizer On character similarity set to **100%**
2. Detected UniCode contamination percent: **0%** with limit of: 5%
3. Document not normalized: percent not reached 5%
4. All suspicious symbols will be marked in purple color: Abcd...

5. Invisible symbols found: 0

Assessment recommendation:

No special action is required. Document is Ok.

Alphabet stats and symbol analyzes:

UACE does not support the doc language! UACE logics skipped!

Active References (Urls Extracted from the Document):

No URLs detected

Excluded Urls:

No URLs detected

Included Urls:

No URLs detected

Detailed document analysis:

BED I- CPS 2 शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध ं Understanding Disciplines and Subjects वशक्षक वशक्षा ववभाग, वशक्षाशास्त्र ववद्याशाखा उत्तराखण्ड मक्त ववश्वववद्यालय, हल्द्वानी ु ISBN: 13-978-93-85740-67-1 BED I- CPS 2 (BAR CODE) BED I- CPS 2 शा#$ एव िवषय$ का अवबोध ं Understanding Disciplines and Subjects िश#क िश#ा िवभाग, िश#ाशा% िव'ाशाखा उ

Quotes detected: **0.01%** id: **1**

"राख&ड म* िव-िव.ालय, ह"

#ानी ु अ

Quotes detected: **0.02%** id: **2**

"ययन बोड(िवशेष& सिमित !ोफे सर एच० पी० श#ल (अ"

य$- पदने), िनदशे क, िश(ाशा* िव,ाशाखा, !ोफे सर एच० पी० श#ल (अ

Quotes detected: **0.02%** id: **3**

"य$- पदने), िनदशे क, िश(ाशा* ु ु उ"

राख&ड म* िव-िव.ालय िव#ाशाखा, उ(राख*ड म. िव/िव#ालय ु ु !ोफे सर मह$मद िमयाँ (बा# िवशषे)- सद#य), पव$ अिध(ाता, िश#ा सकाय, !ोफे सर सी० बी० शमा$ (बा# िवशषे)- सद#य), अ&य', रा*+ीय ु ू ं जािमया िमि&लया इ)लािमया व पव- कलपित, मौलाना आजाद रा*+ीय उद 0 म# िव&ालयी िश,ा स/थान, नोएडा ू ु ु ं ू िव#िव$ालय, हदै राबाद !ोफे सर पवन कमार शमा/ (बा# िवशषे)- सद#य), अिध(ाता, ु !ोफे सर एन० एन० पा#डेय (बा# िवशषे)- सद#य), िवभागा&य(, िश#ा िवभाग, िश#ा सकाय व सामािजक िव,ान सकाय, अटल िबहारी बाजपेयी िह7दी ं ं एम० जे० पी० !हले ख&ड िव*िव+ालय, बरेली िव#िव$ालय, भोपाल !ोफे सर के ० बी० बधोरी (बा# िवशषे)- सद#य), पव(अिध,ाता, िश0ा सकाय, !ोफे सर जे० के ० जोशी (िवशषे आम)ी- सद#य), िश'ाशा) ु ू ं ं एच० एन० बी० गढ़वाल िव'िव(ालय, *ीनगर, उ/राख1ड िव#ाशाखा, उ(राख*ड म. िव/िव#ालय ु !ोफे सर जे० के ० जोशी (िवशषे आम)ी- सद#य), िश'ाशा) िव+ाशाखा, !ोफे सर र'भा जोशी (िवशषे आम)ी- सद#य), िश#ाशा% ं ं उ"राख&ड म* िव-िव.ालय िव#ाशाखा, उ(राख*ड म. िव/िव#ालय ु ु !ोफे सर र'भा जोशी (िवशषे आम)ी- सद#य), िश'ाशा) िव+ाशाखा, उ.राख0ड डॉ० िदनेश कमार (सद#य), सहायक (ोफे सर, िश/ाशा0 ु ं म# िव&िव'ालय िव#ाशाखा, उ(राख*ड म. िव/िव#ालय ु ु डॉ० िदनेश कमार (सद#य), सहायक (ोफे सर, िश/ाशा0 िव2ाशाखा, उ5राख6ड डॉ० भावना पलिड़या (सद#य), सहायक (ोफे सर, िश/ाशा0 ु म# िव&िव'ालय िव#ाशाखा, उ(राख*ड म. िव/िव#ालय ु ु डॉ० भावना पलिड़या (सद#य), सहायक (ोफे सर, िश/ाशा0 िव2ाशाखा, स!ी ममता कमारी (सद#य), सहायक (ोफे सर, िश/ाशा0 ु ु उ"राख&ड म* िव-िव.ालय िव#ाशाखा एव सह-सम#वयक बी० एड० काय$%म, उ(राख+ड म. ु ु ं िव#िव$ालय स#ी ममता कमारी (सद#य), सहायक (ोफे सर, िश/ाशा0 िव2ाशाखा एव सह- ु ु ं डॉ० !वीण कमार ितवारी (सद#य एव सयोजक), सहायक -ोफे सर, सम#वयक बी० एड० काय$%म, उ(राख+ड म. िव1िव2लय ु ं ं ु िश#ाशा% िव'ाशाखा एव सम-वयक बी० एड० काय$%म, उ(राख!ड ं डॉ० !वीण कमार ितवारी (सद#य एव सयोजक), सहायक -ोफे सर, िश3ाशा4 ु ं ं म# िव&िव'ालय ु िव#ाशाखा एव सम+वयक बी० एड० काय$%म, उ(राख+ड म. िव1िव!ालय ु ं िदशाबोध: (ोफे सर जे० के ० जोशी, पव$ िनदशे क, िश+ाशा- िव.ाशाखा, उ1राख3ड म7 िव8िव.ालय, ह =ानी ू ु काय$%म सम(वयक: काय$%म सह-सम#वयक: पाठय&म सम)वयक: पाठय&म सह सम*वयक: ृ ृ डॉ० !वीण कमार ितवारी स#ी ममता कमारी डॉ० !वीण कमार ितवारी स#ी ममता कमारी ु ु ु ु ु ु सम#वयक, िश)क िश)ा िवभाग, सह-सम#वयक, िश)क िश)ा िवभाग, सम#वयक, िश)क िश)ा िवभाग, सह-सम#वयक, िश)क िश)ा िवभाग, िश#ाशा% िव'ाशाखा, िश#ाशा% िव'ाशाखा, उ*राख,ड िश#ाशा% िव'ाशाखा, िश#ाशा% िव'ाशाखा, उ*राख,ड उ

Quotes detected: **0.02%** id: **4**

"राख&ड म* िव#िव$ालय, म# िव&िव'ालय, ह,-ानी, नैनीताल, उ"

राख&ड म* िव-िव.ालय, म# िव&िव'ालय, ह

Quotes detected: **0.01%** id: **5**

"#ानी, नैनीताल, ु ु ु ु ह"

#ानी, नैनीताल, उ+राख.ड उ

Quotes detected: **0%** id: **6**

"राख&ड ह"

#ानी, नैनीताल, उ+राख.ड उ

Quotes detected: **0.06%** id: **7**

"राख&ड !धान स&पादक उप स$पादक डॉ० !वीण कमार ितवारी स#ी ममता कमारी ु ु ु सम#वयक, िश)क िश)ा िवभाग, िश)ाशा- िव.ाशाखा, सह-सम#वयक, िश)क िश)ा िवभाग, िश)ाशा- िव.ाशाखा, उ"

राख&ड म* िव-िव.ालय, ह23ानी, नैनीताल, उ

Quotes detected: **0%** id: **8**

"राख&ड उ"

राख&ड म* िव-िव.ालय, ह23ानी, नैनीताल, उ"राख&ड ु ु िवषयव%त स)पादक भाषा स%पादक !ा#प स&पादक !फ़ सशोधक ु ू ं स#ी ममता कमारी स#ी ममता कमारी स#ी ममता कमारी स#ी ममता कमारी ु ु ु ु ु ु ु ु सहायक &ोफे सर, िश-ाशा. सहायक &ोफे सर, िश-ाशा. सहायक &ोफे सर, िश-ाशा. सहायक &ोफे सर, िश-ाशा. िव#ाशाखा, उ(राख*ड म# िव#ाशाखा, उ(राख*ड म. िव#ाशाखा, उ(राख*ड म. िव#ाशाखा, उ(राख*ड म. ु ु ु ु िव#िव$ालय िव#िव$ालय िव#िव$ालय िव#िव$ालय साम$ी िनमा(ण !ोफे सर एच० पी० श#ल !ोफे सर आर० सी० िम# ु िनदशे क, िश'ाशा) िव+ाशाखा, उ.राख0ड म4 िव5िव+ालय िनदशे क, एम० पी० डी० डी०, उ"राख&ड म* िव-िव.ालय ु ु © उ

Quotes detected: **0.08%** id: **9**

"राख&ड म# िव&िव'ालय, 2017 ु ISBN-13-978-93-85740-67-1 !थम स&करण: 2017 (पाठय&म का नाम: शा#$ एव िवषय$ का अवबोध, पाठय&म कोड- BED I- CPS 2) ृ ृ ं ं सवा$िधकार सरि%त। इस प%तक के िकसी भी अश को !ान के िकसी भी मा+यम म - .योग करने से पव5 उ"

राख&ड म* िव-िव.ालय से िलिखत अनमित लेना आव7यक ह।ै इकाई ु ु ं ू ु ु लेखन से सबिधत िकसी भी िववाद के िलए पण65 पेण लेखक िज8मदे ार होगा। िकसी भी िववाद का िनपटारा उ"राख&ड उ(च *यायालय, नैनीताल म 2 होगा। ं ं ू िनदशे क, िश'ाशा) िव+ाशाखा, उ.राख0ड म4 िव#िव$ालय (ारा िनदशे क, एम० पी० डी० डी० के मा%यम से उ)राख,ड म/ िव2िव3ालय के िलए मि6त व 8िकाशत। ु ु ु !काशक: उ"राख&ड म* िव-िव.ालय; म#क: उ"राख&ड म* िव-िव.ालय। ु ु ु काय$%म का नाम: बी० एड०, काय$%म कोड: BED- 17 पाठय&म का नाम: शा#$ एव िवषय$ का अवबोध, पाठय&म कोड- BED I- CPS 2 ृ ृ ं ख"ड इकाई स#या स#या इकाई लेखक ं ं 1 2 व 3 डॉ ० आ"ािश& राय सह #ोफे सर, िविश+ िश,ा सकाय, शक2तला िम6ा रा78ीय पनवा स िव=िव ालय, लखनऊ 2 3 ं ु ु 1 4 डॉ० !वेता ि"वेदी 2 1 सहायक &ोफे सर, िश#ा सकाय, िमजोरम के ()ीय िव#िव$ालय, आइजोल, िमजोरम ं 1 5 डॉ० सज$दय भ(ाचाय+ ु सहायक &ोफे सर, िश#ा िवभाग, राजक%य महािव+ालय, मगरउरा, /तापगढ़, उ3र/दशे 2 4 डॉ० कनक शमा& पो#ट डॉ'टोरल फे लो, आई० ए० एस० ई०, िजामया िमि&लया इ)लािमया, नई िद%ली 2 5 डॉ० िगरीश कमार ितवारी ु अितिथ %या(याता, िश#ा िवभाग, मिहला महािव'ालय, काशी िह,द िव/िव'ालय, वाराणसी ू BED I- CPS 2 शा#$ एव िवषय$ का अवबोध ं Understanding Disciplines and Subjects ख"ड 1: शा#$ क& 'िकत म, 'ितमान प/रवत2न ृ इकाई स० इकाई का नाम प# स० ृ ं ं 1 इकाई: एक - 2-14 2 !ान के िविवध)ोत; सचना, समक एव 'ान म * अतर ू ं ं ं 15-31 3 िविभ$न अ'ययन)े+, / अनशासन, के उ3व और वत7मान समय म 9 कल ;ान प=र ?य म " ु ु उनका %थान, िव)ालयी पाठयचया1 म 3 काम से सबिधत िवषय; जैसे बागवानी और ृ ं ं आित$य के समावेशन क. साथ0कता 32-48 4 िविभ$न िवषय(का िव+ालयी पाठयचया2 म 4 भिमका और 8थान ृ ू 49-69 5 िव#ालयीय पाठय+म म - िवषय-व"त का चयन एव अन-मण ृ ु ु ं ख"ड 2: िव#ालयी िश)ा म+ ,मख शा/ सबधी)े5 ु ं ं इकाई स० इकाई का नाम प# स० ृ ं ं 71-87 1 मानिवक' (ान क' एक शाखा के -प म,/ उनका िव1ालयी पाठयचया8 म / 9थान, िशात ृ ं िश#ा एव िविवधता के िलए स.मान के बीजारोपण के स8दभ ; म मानिवक= म सि.मिलत ं िवषय% से स(बिधत म/ े और चनौितयाँ ु ु ं 2 इकाई: दो - 88-99 3 गिणत %ान क) एक शाखा के #प म&, िव#ालयी पाठयचया(म " इसका 'थान, गिणत िश&ण ृ के म% े तथा चनौितयाँ, रा#$ीय िवकास के एक मा'यम के)प म + इसक- भिमका के सबध ु ु ू ं ं म " 100-111 4 !ान क% एक शाखा के 'प म * िव-ान 112-125 5 भाषा: $ान क" एक शाखा के !प म " शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं खण्ड 1 Block 1 उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 1 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं इकाई 2 - ज्ञान के विविध स्रोत; सूचना, समंक एिं ज्ञान में अतं र Various sources of knowledge; differences in Information, Data and Knowledge 2.1 प्रस्तिाना 2.2 उद्दश्ेय 2.3 ज्ञान के विविध स्रोत 2.4 सचना, समक एिं ज्ञान में अतर ू ं ं ं 2.4.1 समक ं 2.4.2 सचना ू 2.4.3 ज्ञान 2.4.4 सचना, समक एिं ज्ञान में अतर ू ं ं ं 2.5 साराश ं 2.6 शब्दािली 2.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 2.8 सदर्भ ग्रथ सची ू ं ं 2.9 सहायक/उपयोगी पाठयसामग्री ृ 2.10 वनबधात्मक प्रश्न ं 2.1 प्रस्तावना यह सिभ विवदत ह ै वक मनष्य अन्य प्रावियों से वर्न्न ह।ै अन्य प्रावियों की अपेक्षा मनष्य अपने

Plagiarism detected: **0.07%** https://alphabetsinhindi.com/hindi-alphabets-wi… id: **10**

ज्ञान को ु ु आग े बढाता ह ै और अपन े ज्ञान िवि एिं शवक्त िवि स े अपने िितारि म ें एक समनि्य स्थावपत करन े ृ

ृ ं का प्रयास करता ह।ै ज्ञान के क्षेत्र म

ें वनरतर प्रगवत उसकी विज्ञासा का प्रवतफल ह।ै एक विज्ञास मानि की ु ं शवक्त असीवमत ह।ै अतः वकसी ॉरी समस्या के वनदान के वलए उसकी शारीररक एि मानवसक शवक्तया ं ं एकाग्रवचत होकर उसका समाधान खोिने लगती ह।ै प्रयास सफल हो की नहीं यह आिश्यक नहीं परन्त ु उसकी विज्ञासा की ज्योवत प्रज्ज्िवलत हो िाती ह।ै ज्ञान स्थलता से सक्ष्मता की ओर ले िाता ह ै ू ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 2 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं यह अध्याय ज्ञान एि ज्ञान के विवर्न्न स्रोतों की वििेचना पर आधाररत ह।ै ज्ञान की पररॉाषा, ज्ञान , ं आकड़े एि सचना के मध्य अतर को इस अध्याय म ें सवममवललत वकया गया ह।ै िहा ॉौवतक ज्ञा

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व… + 2 resources! id: **11**

न का ू ं ं ं ं आधार मन ह ै िही आध्यावत्मक ज्ञान का आधार आत्मा ह।ै यह ॉरी ज्ञात करना आिश्यक ह ै वक वकस ोँ प्रकार क

े मानि व्यिहार को ज्ञान की श्रेणी म ें वलया िा सकता है।प्रस्तत अध्याय म ें ज्ञान अविवत करने के ु पारपररक एि आधवनक साधन पर ॉरी बल वदया गया ह।ै वकसी ॉरी समस्या को हल करने के वलए वचतन, ु ं ं ं मनन एि पररश्रम की आिश्यकता होती ह।ै परन्त कॉरी कॉरी समस्या का हल प्रयास एि र्ल से ॉरी हो ु ू ं ं िाता ह।ै 2.2 उद्दश्े य प्रस्तत इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप : ु 1. ज्ञान की धारणा से क्या अवर्प्राय ह ै बता सकें गे। 2. ज्ञान के आधारों को अपने शब्दों म ें व्यक्त कर सकें गे। 3.

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 5 resources! id: **12**

ज्ञान प्राप्त करने के विविध स्रोत की चचाभ कर सकें गे। 4. ज्ञान प्राप्त की िज

्ञै ावनक विवध क्

Plagiarism detected: **0.12%** https://www.hindwi.org/poets/sarahpa/profile id: **13**

या ह ै और इसकी क्या क्या विशषे ताए का विश्लेषि कर सकें ग े ं 5. ज्ञान का अवस्तत्ि क्या ह ै और इसकी विवर्न्न अिधाराओ को बता सकें ग।े ं 6. ज्ञान, सचना एि समक म ें अतर स्पष्ट कर सकें ग।े ू ं ं ं 2.3 ज्ञान के वववववध स्रोत यह सिवभ िवदत ह ै की वशक्षा का प्रमख उद्दश्े य ज्ञान प्रदान करना ह।ै ज्ञान क

ा सत्य से िही समबन्ध ह ै िो ु सरि का गमी से ह।ै सत्य का अवस्तत्ि तॉरी मान्य ह ै िब उसका ज्ञान हो। सत्य को ज्ञान से अलग नहीं ू वकया िा सकता । इसीवलए तत्िमीमासा के साथ ज्ञान मीमासा िडी ु ं ं

Plagiarism detected: **0.13%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 3 resources! id: **14**

होती ह ै । ज्ञान और सत्य एक ही ह ै क्योंवक यह व्यवक्त के मन म ें होता ह ै । ू ज्ञान की उपयोवगता तॉरी ह ै िब उसे दसरों तक पहचाया िा सके । यही मत ं ू सतो एि धमप्रविभकों का ॉरी ह ै । वशक्षा ं ं द्वारा ज्ञान की उपयोवगता को वसि वकया िा सकता ह ै । ज्ञान िह ह ै िो हमारे िीिन पर लाग होता ह,

ै प्राचीन ू होने पर ॉरी विसका अवस्तत्ि विद्यमान उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 3 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं ह,ै िो िविभमान म ें ॉरी ताज़ा बना हआ ह।ै ज्ञानी नए एि पराने को िोड़ कर िीिन को िीना िानते ह ै । ु ं प्राचीन

Plagiarism detected: **0.06%** https://alphabetsinhindi.com/hindi-alphabets-wi… id: **15**

ज्ञान के अनसार नए और पराने का समन्िय होना वनतात आिश्यक ह ै , िसै े एक िक्ष का तना ृ ु ु ं पराना होता ह ै पर उसकी िमका आिश्यक होती ह ै और

उसकी शाखाए नयी होती ह,ै उसी प्रकार से ु ू ं व्यवक्त का िीिन ॉरी अनकलनशील होना चावहए । ऋग्िदे का प्रथम श्लोक ह,ै ु ू "अवननपिवभ र्ऋवषवर्ररधौ नतानैरुतः" प्राचीन और निीन दोनों एक साथ विद्यमान ह ै और यही ज्ञान ह ै । ू ू कोई ॉरी व्यवक्त दखी या व्यवथत नहीं रहना चाहता । िो हम ें दःख से दर ले िाए ,िो हम ें दरदवशतभ ा ु ु ू ू वदखाए िो हमारे िीिन को स्फवतभ प्रदान करे, और िो हमारे व्यवक्तगत को सवष्ट से िोड़े , िही

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.deepawali.info/ka-se-gya-tak-k-se-… id: **16**

ज्ञान ह ै । ृ ू ज्ञान अत्यत सतोष प्रदान करता ह,ै और यह सबको उपलब्ध ह ै । अतः ज्ञान िह

ह ै िो िीिन म ें उत्सि ं ं लाये, िो चेहरे पर मस्कान लाये,और िो िीिन म ें दरदवशतभ ा लाने का अतबोध द े । ज्ञान सक्ष्म ह ै अथिा ु ू ं ू स्थल, यह एक अवत महत्िपि भ प्रश्न ह ै । िहा वशक्षकों एि विद्यावथभयों के मन म ें िानकारी के रूप म ें ज्ञान ू ू ं ं को सक्ष्म की श्रखला म ें रखा िा सकता ह ै िही, पस्तकों में िवितभ ॉाषा म ें वलखा ज्ञान स्थल होता ह ै । ृ ोँ ू ु ू उदहारि के वलए विस प्रकार िल म ें नमक घल िाता ह ै पर एक बड़ा ढेला स्थल रूप म ें वदखाई दते ा ह ै , ु ू उसी प्रकार विद्यावथभयों के वलए पस्तक िही नमक का ढेला ह ै विससे उनके

Plagiarism detected: **0.13%** https://instapdf.in/hindi-varnamala-chart/ id: **17**

ज्ञान का िधभन होता ह ै । ु ज्ञान की सवियता एव असवियता ं वशक्षा की द्दवष्ट से ज्ञान की सवियता एि असवियता को ज्ञात कर लेना अवत आियशक ह ै । वशक्षक द्वारा ं पाठ योिना का स्िरुप बनाना विससे वक िह विद्यावथभयों को ज्ञान का अिनभ कराने के वलए उवचत वस्थवतयों का वनमाभि कर सके , सविय ज्ञान की श्रेिी म ें आता है। वशक्षक का उद्दश्े य होता ह ै वक विद्याथी उस ज्ञान क

ा उपयोग कर सके । प्रयोग के माध्यम से ज्ञान रुवचकर हो िाती ह ै । अन्यथा ज्ञान यवद बोझ लगने लग े तो विद्याथी उससे लाऱावन्ित नहीं हो पाता । प्रत्यक्ष ज्ञान एव अप्रत्यक्ष ज्ञान :ज्ञान के दो पक्ष होते ह:ैं प्रत्यक्ष ज्ञान एि अप्रत्यक्ष ज्ञान । ऐसा ज्ञान िो ं ं हमारी ज्ञानेवन्ियों

Plagiarism detected: **0.29%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 8 resources! id: **18**

से प्राप्त होता ह ै , विसे व्यवक्त अपने िीिन म ें स्िय प्राप्त करता ह,ै प्रत्यक्ष ज्ञान ह ै । ऐस े ं ज्ञान को ताज़ा ज्ञान कहा िाता ह ै िही दसरी ओर िह ज्ञान िो कथनों एि पस्तकों से प्राप्त वकया िाता ह,ै िीँ ु ं ू परोक्ष ज्ञान होता ह ै । परोक्ष ज्ञान को इवसवलये बासी ज्ञान ऱी कहा िाता ह ै । िैनवभमान यथाथािादी दाशवभ नक एि ज्ञािावनक प्रत्यक्ष ज्ञान को मानते ह ैं । परन्त वशक्षा के क्षेत्र म ें दोनों पक्ष के ज्ञान की ईमका ह ै । ऱारतीय ु ू ं दशनभ म ें प्रत्यक्ष ज्ञान को प्रमा एि परोक्ष ज्ञान को अप्रमा कहा गया ह ै । ऱारतीय दशनभ म ें आग े इस बात का ं ऱी िीिनभ ह ै की ज्ञान एि अज्ञान के र्द को वकस प्रकार समझा िाए। प्रत्यक्ष एि परोक्ष ज्ञान के अलग ं ं अलग लक्षि ऱी िविभत वकये गए ह।ैं इसके अवतररक्त मीमासा दशनभ म ें ऱी दोनों प्रकार के ज्ञान क

ी ं वििेचे ना की गयी ह ै । इस से यह पवष्ट होती ह ै की वशक्षक वशक्षा के माध्यम से िह विद्यावथभयों को भ्रम से ु मक्त करने का प्रयास करता ह ै । ऐसी वशक्षा विससे विद्याथी

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.deepawali.info/ka-se-gya-tak-k-se-… id: **19**

को ज्ञान का स्िरुप समझाया िा सके । ु क्या ज्ञान परिवततवनय है अथवा अपरिववततनीय :यह एक अवत महत्िपि भ प्रश्न ह ै की ज्ञान

का स्िरुप ू पररिवतभत होता ह ै अथिा नहीं? ज्ञान के तत्ि बदलते ह ैं अथिा नहीं? वशक्षक अपने विद्यावथभयों को विस उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 4 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं ज्ञान के तथ्य, विचार , प्रत्यय, वनयम एि वनष्कष भ आवद ज्ञान के कथ्य को समझाता ह ै , उनम े पररितभन ं अथिा बदलाि होता ह ै अथिा नहीं ? यहा ंीँ पर ध्यान दने े की बात यह ह ै वक ज्ञान के कछ तत्ि तो बदलते ु ह ैं पर ि े इतने समय काल म ें होते ह ै वक उनका बदलाि अनिर् नहीं हो पाता । िीिन मलय लगर्ग िैसे ु ू ही रहते ह ैं , और ऐसे तथ्य ,वनयम अथिा प्रत्यय प्रायः नहीं बदलते और ज्ञान के ये तत्ि वशक्षा के वलए अवत महत्त्िपि भ ह ै ।वशक्षा द्वारा इन िीिन मलयों के प्रवत विद्यावथभयों में आस्था पैदा की िाती ह ै । परन्त ू ू ु ऐसा नहीं ह ै की ज्ञान के तत्िों म ें पररितभन नही होता । ज्ञान के कछ तत्ि पररितभन से प्रऱावित होते ह ैं । िब ु ज्ञान म ें अवर्िवध होती ह ै तो ज्ञान म ें पररितभन वनवश्चत ह ै । पाठयिम म ें समय समय पर बदलाि ृ ् आियशक ह ै विससे की पररिवतभत

Plagiarism detected: **0.07%** https://instapdf.in/hindi-varnamala-chart/ id: **20**

ज्ञान को वशक्षा के माध्यम से विद्यावथभयों तक पहचीँ ाया िा सके । तऱी वशक्षा को प्रगवतशील कहा िा सकता ह ै । सत्य के अन्िषे ि से िो नए वसिात और वनयम उिागर होते ह ै ं ि े ज्ञान क

े स्थल रूप म ें पररितभन की अपेक्षा रखते ह ैं ।यह सत्य ह ै वक शरीर की आखीँ ें सब कछ नहीं दखे ू ु सकती परन्त ज्ञान चक्ष सब कछ दखे सकती ह ै । वशक्षा हमारे ज्ञान चक्ष खोल दते ी ह ै अतः कलयािकारी ु ु ु ु वसि हो सकती ह ै । आि के िैनवभमान पररपेक्ष्य म,ें वशक्षा मात्र सचनात्मक तथ्यों को विद्यावथभयों तक ू पहचाने का कायभ करती ह ै न वक ठोस

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 5 resources! id: **21**

ज्ञान का , इससे इसका खोखलापन प्रकट होता ह ै । ं ज्ञान के प्रकाि ज्ञान के चार प्रकार होते ह:ैं 1.

आगमनात्मक ज्ञान 2. प्रागनिऱ ज्ञान ु 3. विश्लेषि ज्ञान 4. एि सश्लेषि ज्ञान ं ं 1. अनिीिन्य ज्ञान (A posteriori Knowledge): अनिर् एि वनरक्षि पर आधाररत ज्ञान ही ु ु ं अनिीिन्य ज्ञान ह ै । इसके मख्य प्रितभक िॉन लोक थे । उनके अनसार, विद्याथी मन िन्म म ें कोरा ु ु ु

Plagiarism detected: **0.04%** https://bsebresult.in/ka-kha-ga-gha/ id: **22**

होता ह ै परन्त अनिर् के साथ उसके मन की पट्टी पर लेखन प्रारमर् हो िाता ह ै । अतः यह

कहा िा ु ु सकता ह ै वक अनिर् से ज्ञान की िवि होती ह ै । इस प्रकार के ज्ञान म ें अलौवकक का स्थान नहीं होता ृ ु ह ै । समग्र अनिर् से सीखने की प्रबलता बढती ह।ै िॉन लोक के अनसार,

Quotes detected: **0.07%** id: **23**

" हमारी बवि एि हमारी ु ु ु ं ज्ञानेवन्ियों म ें कछ ्री वनवहत नहीं होता ह ै । िन्म के प्रत्यय के विचार को लोक वनरस्त करते ह ैं और ु प्रत्यक्षीकरि द्वारा ज्ञान को ही िास्तविक ज्ञान मानते ह ैं ।"

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 5 resources! id: **24**

अनभवजन्य ज्ञान की ववशेषताए : ु ं i. हम ें अपने दवै नक िीिन म ें िो ज्ञान प्राप्त होता ह ै िह यथाथभ नहीं बवलक िही ज्ञान का िास्तविक उदाहरि ह ै । ii. इस ज्ञान के अनसार अनिर् ही ज्ञान क

ा मख्य स्रोत ह ै । अनिर् का अथभ इवन्िय अनिर् से ह।ै ु ु ु ु ु iii. िन्म ित मन म ें कोई प्रत्यय नहीं होता बवलक िह अनिर् के द्वारा होता ह ै । ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 5 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं iv. प्रारमर् म ें मन वनवष्िय रूप म ें सिदे नाओ को ले लेता ह ै । मन की सवियता प्रारमर् म ें नहीं ं ं होती ह ै बवलक अनिर् से होती ह ै । ु v.

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… id: **25**

ज्ञान के मौवलक तत्ि प्रत्यय ह ै और उसकी पिवत आध्यावत्मक ह ै । vi. ्रौवतक ज्ञान म ें ही आदश भ ज्ञान वनवहत होता ह ै ।विज्ञान

सािभ ौम ज्ञान दते ा ह ै परन्त उसमे ु अवनियभता नहीं होती । 2. प्रागनभव ज्ञान (A priori Knowledge) : िब वसात को समझ वलया िाता ह,ै तो सत्य की ु ं पहचान होती ह।ै वफर, वनररक्षि, अनिर् एि प्रयोग द्वारा उसे प्रमावित करने की आिश्यकता नहीं ु ं होती। काट इस विचार के प्रितभक थे । िहीँ आगमनात्मक ज्ञान अनिर् पर बल दते ा ह,ै िही ीँ ु ं प्रागनिर् ज्ञान अनिर् से स्िति होने की बात कहता ह ै । उनके अनसार, सामान्य सत्य स्पष्ट, वनवश्चत ु ु ु ं होता ह ै । गवित का उदाहरि दते े हए इस ज्ञान को समझा िा सकता ह ै । गवित का ज्ञान प्रागनिर् ु ज्ञान ह ै । काट ने तकभ एि अनिर् के परस्पर सहयोग से ज्ञान की प्रावप्त की बात करते । दोनों ही ज्ञान ु ं ं के स्रोत ह ैं और दोनों का समान महत्ि ह ै । वकसी एक की आलोचना करना ठीक नहीं ह ै । काट के अनसार, ज्ञान की तीन विशषे ताए ह ैं : सािभ ौवमकता, आिश्यकता एि निीनता । ु ं ं ं काट ने ्रौवतक विज्ञान एि गवित के ज्ञान का सस्लेषि वकया एि िास्तविक ज्ञान की सिरं ाना का ं ं ं ं ं उललेख वकया । बारह पक्षों को सवममवलत वकया िो इस प्रकार स े ह ै : अनेकता, एकता, समग्रता, िा, अिा, सेवमत्ता, करता, गनाथभकता, अन्योंतता , सिरं ाना, िास्तविकता, एि अवनियभता । ु ं ं ं काट द्वारा ज्ञान की परी व्याख्या की गयी ह ै । इसका आरमर् सिदे नाओ से होता हआ अतद्दवभ ष्ट पर ू ं ं ं ं िाकर समाप्त होता ह ै । सिदे नाओ के द्वारा ही बाह्य ससार का बोध कर के ज्ञान का अिनभ वकया ं ं ं िाता ह ै । काट दो प्रकार के विश्व की चचाभ करते ह ैं : परमाथभ सत्य एि सिवत्त सत्य । पहले िाले से ृ ं ं ं बोध होता ह ै एि दसरे से सिदे ना होती ह ै । इन दोनों विचारों का एकाकीकरि कर के ज्ञान पर प्रकाश ं ं ु डालते । इन दोनों विचारों म ें अनिर् और तकभ सवममवलत ह ैं । ु 3. ववश्ले षण (Analyt Ic Method) : वकसी ्री समस्या म ें क्या ह ै और क्या ज्ञात करना ह,ै कै से ज्ञात करना ह,ै

Plagiarism detected: **0.1%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… id: **26**

विश्लेषि की श्रखला म ें आता ह ै । इन स्री घटकों को अलग अलग पढने की विवध ही ृ ं विश्लेषि ह ै । इसे समस्या का हल खोिने की सिोत्तम विवध कहा िाता ह ै ।ज्ञात से अज्ञात का पता वकया िाता ह ै । हल प्राप्त करने के वलए प्रश्नों म ें वदए गए तथ्यों का विश्लेष

ि करके िम म ें रखा िाता ह ै । ज्ञात से अज्ञात बढ़ने की प्रविया प्रारमर् हो िाती ह ै । वदए गए तथ्यों पर प्रकाश डाल के , उनकी सहायता से पररिामों को प्राप्त वकया िाता ह ै , वफर दोनों के मध्य परस्पर समायोिन बैठाया िाता ह ै । विश्लेषि विवध के तीन मख्य सोपान ह ै – ज्ञात करना, हल एि उत्पवत्त। ु ं इस विवध से तकभ सगत वचतन विकवसत होने के साथ प्राप्त ज्ञान के स्थायी होने की सवनवश्चतता

Plagiarism detected: **0.06%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… id: **27**

होती ु ं ं ह।ै विद्याथी प्रारमर् स े अत तक समस्त प्रवियाओ से गज़ुरता ह ै इस प्रकार िह विषयिस्त को समझने ु ु ं ं म ें सक्षम हो िाता ह ै । व

िद्याथी की रटने की अपेक्षा स्िय की ्रागीदारी से तकभ करने की क्षमता प्रबल ं हो िाती ह ै । ्रागीदारी से उसके अन्िेषि करने की शवक्त बढती ह ै िो उसम े आत्मविश्वास प्रदान उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 6 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं करता ह ै । परन्त यह विवध लमबी होने के कारि अवधक समय लेती ह ै । सामान्य बवि िाले बच्चों के ु ु वलए यह इतनी सरल नहीं ह ै अतः उनके वलए इसका कोई उपयोग नहीं ह ै । पररशिता प्राप्त करना ु कवठन हो िाता ह ै । यह विवध िहीँ उपयोगी वसि होती ह ै िहा विषय िास्त को छोटे छोटे वहस्सों म ें ु ं बाटकर

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… id: **28**

विश्लेषि वकया िा सकता ह ै और वफर पनः उसे सगवठत कर ज्ञात से अज्ञात को सबोवधत ु ं ं ं वकया िा सकता ह ै । 4. सस्लेषि विवध (Synthesis Method) : विश्लेष

ि के विपरीत विवध को सस्लेषि विवध कहते ह ैं । ं ं सस्लेषि से तात्पयभ ह,ै अलग अलग िस्तओ को एकत्र करने की प्रविया । समस्या के अलग अलग ु ं ं ंरागों को एकवत्रत करते हए ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ा िाता ह।ै पररकलपना करते हए अज्ञात कथनों से िोड़कर, वनष्कष भ को प्राप्त वकया िाता ह ै । चीँवक यह विवध लमबी नहीं होती अतः इससे समय की बचत होती । गवित एि विज्ञान िसै े विषयों के ू ं वलए ये विवध अवधक उपयक्त ह ै । यह विवध अपेक्षाकत अवधक सरल, सवक्षप्त एि सचारू ह ै । ृ ु ु ं ं परन्त िही दसरी ओरमी बनी रहती, यह विवध विद्यावथयों म ें रटने की ओर ले िाती ह ै और उन्ह ें ीँ ु ू वनवष्िय बनाती ह ै । विद्यावथभयों के म ें म ें कई शकाए उत्पन्न होती ह ै और उनके सतोषिनक उत्तर ने ं ं ं वमल पाने की वस्थवत म ें अन्दर

Plagiarism detected: **0.06%** https://ndtv.in/cricket/shane-watson-mesmerise… id: **29**

आत्मविश्वास की कमी हो िाती ह ै । इस विवध म ें तकभ की कमी बनी रहती ह ै , न ही समपि भ समझ विकवसत हो पाती ह ै न ही विद्यावथभयों मीँ आत्मविश्वास

। अतः इस ू विवध को अमनीौज्ञावनक विवध ंरी कहा िाता ह ै । वनष्कष भ रूप म ें यह कहा िा सकता ह ै की

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… id: **30**

विश्लेषि एि सस्लेषि विवध एक दसरे के प्रवतयोगी नहीं ं ं ु िरन परक ह ैं । विश्लेष

ि के माध्यम से रचना को करने का कारि और पद के प्रयोग का चनिा करके ू ु और वफर सस्लेषि विवध से इस समस्या को िमबि एि ससगवठत ढग से हल करना सबसे उवचत ु ं ं ं होगा । ज्ञान के स्रोत : ज्ञान के प्रमख स्रोत वनमन प्रकार से ह ै ु i. इवन्िय अनभव : ज्ञानेवन्ियीँ व्यवक्त को ससार की िस्तओ के सपकभ म ें लाता ह ै और व्यवक्त के ु ु ं ं ं अन्दर सिदे ना उत्पन्न करता ह ै । यही सिदे ना िास्त

Plagiarism detected: **0.07%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 2 resources! id: **31**

का िज्ञान प्रदान करती ह ै । िस्तओ के ु ु ं ं ं प्रत्यक्षीकरि होने से ही सिदे नाओ को लीँ ंरीँतीसमझा िा सकता ह ै । प्रत्याक्षी करि चेतन ं ं मन म ें अिधारिा उत्पन्न करता ह ै और

हमारा ज्ञान इन अिधारिाओ पर ही वनरभ्र करता ह ै । ं अनिर्ादी, तावकभ क प्रत्यक्षिादी, यथाथभिादी, तथा विज्ञानिादी , इवन्िय अनिर् को ही मख्य ु ु ु स्रोत मानते ह ै । यह ध्यान दने े योनय ह ै वक इन इवन्िय अनिर्

Plagiarism detected: **0.1%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 5 resources! id: **32**

से प्राप्त ज्ञान की विश्वसनीयता का ु आकलन तो सिर् ह ै वकन्त इसकी िधै ता ज्ञात करना कवठन कायभ ह ै । ं ii. साक्ष्य :साक्ष्य दसरों के प्राप्त अनिर् एि वनररक्षि को आधार मानते हए ज्ञान प्राप्त करना साक्ष्य ु ं ू कहलाता ह ै । स्िय करने की अपेक्षा, व्यवक्त दसरों के वनररक्षि से ही तथ्य प्राप्त

करके ज्ञान ं ू अवितभ करता ह ै । औरों के अनिर् पर आधाररत इस साक्ष्य का बहत उपयोग होता ह ै । व्यवक्त ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 7 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं यवद वकसी

Plagiarism detected: **0.04%** https://testbook.com/question-answer/ques--61… id: **33**

स्थान को नहीं दखे ा हआ होता ह ै परन्त दसरे के अनिर् और वदए गए िििनभ से उस ु ु ु स्थान क

े अवस्तत्ि पर विश्वास कर लेता ह ै । अतः उसके ज्ञान म ें िवि होती ह ै । साक्षा के स्रोत से ृ व्यवक्त कई ऐसे तथ्यों के बारे में िानकारी प्रापत कर लेता ह ै । iii. तकत बवि :तकभ एक मानवसक प्रविया ह ै और हमारा अवधकाींश तकभ पर आधाररत होता ह ै । तकभ ु द्वारा हम अनिर् से प्राप्त ज्ञान की सिदे नाओ को सगवठत करके सपि भ ज्ञान का वनमाभि करते ह ैं । ु ू ं ं ं ं अतः यह कहा िा सकता ह ै की तकभ अनिर् पर कायभ करता ह ै और उसे ज्ञान म ें पररवितभत करता ु ह।ै iv. अतः प्रज्ञा :वकसी तथ्य को अपने मन म ें पा िाना अतः प्रज्ञा ह ै । इस ज्ञान पर हमारा पि भ विश्वा

Plagiarism detected: **0.06%** https://bsebresult.in/ka-kha-ga-gha/ id: **34**

स ू ं ं होता ह ै । इसको वकसी तकभ की आिश्यकता नहीं होती । न ही हम ें इसकी वनवश्चतता या िदै ता ृ पर कोई होता ह ै । अत

ः दवष्ट ज्ञान प्राप्त करन े का ऐसा साधन ह ै विसका उललेख दाशवभ नको द्वारा ं वकया गया ह ै । अतः दवष्ट प्रवतंराशाली लोगों को अकस्मात ही अनिर् हो िाता ह ै । िसै े ृ ु ं उदाहरि के वलए, महात्मा बि को बोवध िक्ष के नीच े बैठ कर ज्ञान प्राप्त हआ । एक वबिली की ृ ु कौंध की तरह ऐसा ज्ञान मवस्तष्क म ें अचानक ही उदय हो िाता ह ै । एक अन्य उदाहरि में िब मसा को दस महत्िपि भ ईश्वरीय सत्र एक पिभत पर बैठ कर प्राप्त हए िह ंरी एक अतः दवष्ट ही ू ू ू ं कही ियेगी । इस्लाम के सावहत्य म ें इसे ‘इलहाम ‘ कहा िाता ह ै । इसकी चचाभ ंरारतीय दशनभ म ें ंरी की गयी ह ै । अन्तःदवष्ट पर नए तरह का प्रकाश मनोविज्ञानों की खोिों से डाला गया । िमनभ ी के मनोौज्ञावनक कोह्लेर ने ये अन्िषेि वकया वक पश ंरी वकसी समस्या से िझते हए अकस्मात ृ ु ू उसका हल वनकाल ही लेते ह ैं । पर यह ंरी तंरी सिर् ह ै िब िह समस्या की समपिभता की ू ं िानकारी पा िाता ह ै । ऐसा ही वनष्कष भ बालकों पर ंरी प्रयोग करके के ज्ञात हआ । अतः अन्तःविवष्ट के साधन की व्याख्या की

ि सकती ह ै । इसका उत्तम लार् वशक्षा के क्षेत्र म ें उपयोग करके ्री वमल िाता ह।ै अन्ता द्दवष्ट ग्रीर वचतन का ही पररिाम ह ै । समस्याओ से सघष भ करके ं ं ं ं , कई असफलता के बाद अन्तःविवष्ट प्राप्त होती ह ै । महान दाशवभ नकों ए विद्वानों का यही मत ह।ै ं विद्यावथयों के सिनात्मकता के विकास म ें सहायक होने के साथ ही पाठय की यािेनाओ के ृ ृ ं बनाने म ें ्री

Quotes detected: **0%** id: **35**

"इकाइ ज्ञान"

का प्रयोग वकया िाता ह ै । ऐसा करने से विद्यावथभयों को विषय की समपितभ ा अबोध हो िाता ह ै । वशक्षा की द्दवष्ट स े दखे ा िाए तो यह ज्ञि ैावनक व्याख्या अवत ू महत्त्िपि भ ह ै । ू v. सत्ता आवधकारिक ज्ञान :यह सि भ विवदत ह ै वक मानि समाि म ें व्यवक्तगत वर्न्नताएं ह ैं । कछ ु ं की प्रवत्र्ा वबरले ही होती ह ै और ये प्रवत्र्ाशाली मानि ही ज्ञान के क्षेत्र म ें अर्तपि भ योगदान ू ू दते े ह ैं । इनके द्वारा वदया गया ज्ञान प्रवत्र्ा ज्ञान कहलाता ह ै । सामान्य व्यवक्तयों को इन प्रवत्र्ाशाली व्यवक्तयों के विचार ए वसिातों को मान लेना चावहए । वशक्षा म ें सचावलत समस्त ं ं ं पाठयिम इन विद्वानों ििीन के अनर्िों को मथकर वनकाले गए माखन से पररपि

Plagiarism detected: **0.05%** https://testbook.com/question-answer/ques--61… id: **36**

भ होता ह ै । ृ ु ू वशक्षा िम को बनाये रखने के वलए इन पर विश्वास करना महत्त्िपि भ हो िाता ह ै । ज्ञान क

े इस ू स्रोत की ्रारी कमी यह ह ै वक यवद इन विचारों से इतना अवधक प्र्रावित हो गए तो यह स्िय ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 8 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं की वचतन की शवक्त को समा

Plagiarism detected: **0.25%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 5 resources! id: **37**

प्त कर सकती ह ै । अतः अन्धविश्वासी न बनके , अपने स्िय के ं ं वचतन को बनाये रखने की ्री उतनी ही आिश्यकता ह ै नहीं तो ज्ञान का विकास का माग भ ं अिरुि हो िाएगा । अभ्यास प्रश्न 1. आगमनात्मक ज्ञान के मख्य प्रितभक _________ थे । ु 2. _________ज्ञान अनर्ि से स्ितत्र होने की बात कहता ह ै ु ं 3. इवन्िय अनर्ि से प्राप्त ज्ञान की विश्वसनीयता का आकलन तो सर्ि ह ै वकन्त इसकी िैधता ज्ञात ु ं करना कवठन कायभ ह ै । 4. दसरों के प्राप्त अनर्ि ए वनररक्षि को आधार मानते हए ज्ञान प्राप्त करना ______कहलाता ह।ै ु ं ू 5. इस्लाम के सावहत्य म ें _________ 'इलहाम ' कहा िाता ह।ै 6. ज्ञान के _________ स्रोत का कमी यह ह ै वक यह स्िय की वचतन की शवक्त को समाप्त कर ं ं सकती ह

ै । 2.4 समक, सचना एवं ज्ञान म अतं र ं ू ें सभ्यता की शरुआत से ही मानि को सचना की आिश्यकता रही ह ै । इसीवलए िह समय समय पर सचना ु ू ू को एकवत्रत करने ि उन सचनाओ के आधार पर सही ि उवचत वनियभ लेने के नए ि विकवसत तरीके ू ं खोिते रहा ह ै । सचना की आिश्यकता ि महत्त्ि के कारि ही सबसे पहला आविष्कार कागज़ ि कलम ू का हआ । वफर िसै े िसै े मानि

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **38**

का विकास होता गया िसै े िसै े उसने नए शहर, राज्य ि दशे बनाये और उन दशे ों के बीच व्यापार ि िाविज्य के विवर्न्न प्रकार क

े समबन्ध बने और आि के िल व्यापार ि िाविज्य ही नहीं बवलक िीिन की लगर्ग हर सचना का इन्टरनेट के माध्यम से इन दशे ों के बीच आदान ू प्रदान हो रहा ह ै ।सरल शब्दों में, कवष िावन्त ए औद्योवगक िावन्त के बाद आि हम सचना िावन्त के ृ ू ं यग िी रह े ह ैं और वकसी ्री अन्य िावन्त की तलना म ें सचना िावन्

Plagiarism detected: **0.17%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 10 resources! id: **39**

त का विकास बहत ही ज्यादा तेज़ ु ु ू गवत से हआ ह।ै सभ्यता की शरुआत म ें सचनाओ को वमटटी के बतभनों पर वचत्रात्मक रूप म ें ि शब्दों के ु ू ं रूप म ें वलखा िाता था । वफर कागज़ ि कलम के विकास के साथ ही विवर्न्न प्रकार की सचनाओ को ू ं कागज़ के रूप म ें store करके रखा िाने लगा और आि हम इन्ही सचनाओ को computer पर ू ं manage करते ह ैं । विवर्न्न प्रकार के आकड़ों (data) का सकलन (collection) करना और वफर उन ं ं आकड़ों को विवर्न्न प्रकार स

े िगीकत (classify) करके उनका विश्लेषि (analysis) करना तथा ृ ं उवचत समय पर उवचत वनियभ लेने की क्षमता प्राप्त करना, इस परी प्रविया को कम्प्यटर की ्राषा म ें data ू ू ं processing करना कहा िाता ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 9 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 2.4.1 समक ं अवसि तथ्य (facts) अक (figures) ि सावख्यकी (static) का िह समह विस पर प्रविया ू ं ं (processing)करने पर एक अथभपि भ सचना प्राप्त हो, समक कहलाती ह ै ।आकड़े मान या मानों का एक ू ू ं ं समह होता ह,ै विसके आधार पर हम वनियभ लेते ह ैं । इसे एक उदाहरि द्वारा समझा िा सकता ह।ै सख्याए ू ं ं दस ही होती ह ै परन्त यवद इसे व्यिवस्थत िम म ें रखा िाए तो ये एक सचना generate होती ह ै । इसवलए ु ू ये सख्याए data ह ै ।इसी तरह से अग्रि ेी ्राषा म ें small ि capital letters के कल 52 characters ही ु ं ं ं होते ह,ैं परन्त यवद इन्ह ें एक सव्यिवस्थत िम म ें रखा िाए, तो हज़ारों पस्तकें बन िाती ह।ै इसवलए ये ु ु ु characters ्री data ह ैं । िसै े वकसी विद्यालय के विवर्न्न विद्यावथभयों की ये िानकारी रखनी हो तो वकसी कक्षा म ें कौन कौन से विद्याथी ह ैं उनका serial no. क्या ह ै

और िि े वकस पते पर रहते हैं, तो ये स्ी तथ्य अवसि रूप म ें data ह।ै समक तथ्यों के समह होते ह ैं इन्ह ें ू ं सख्या म ें व्यक्त वकया िाता ह ै । ं समकों का सकलन गि

Plagiarism detected: **0.08%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 4 resources! id: **40**

ना द्वारा ं ं अथिा यथोवचत शिता से वकये ु गए अनमान द्वारा होता ह ै । समक ु ं पयाभप्त मात्रा म ें अनेक कारिों से प्र्ावित होते ह ैं । समकों का ं सकलन या तो आगिन द्वारा वकया ं िा सकता ह ै या तो अनमान द्वार

ा । ु यवद वकसी अनसधान का

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 2 resources! id: **41**

क्षेत्र ु ं सीवमत ह ै तो समकों का सकलन ं ं गिना द्वरा वकया िाता ह ै । अनसधान का क्षेत्र व

्यापक होने पर ु ं गिना विवध का प्रयोग करना कवठन हो िाता ह ै । ऐसी दशा म ें अनमान विवध का सहारा वलया िाता ह ै । समकों का सकलन पि भ वनधाभररत ु ू ं ं उद्दश्े य के वलए व्यिवस्थतढग से वकया िाता ह ै । ं 2.4.2 सचना ू आकड़ों पर processing होने के पश्चात िो अथभपि भ पररिाम वनकलता ह ै उसे सचना कहते ह ैं । सचना ू ू ू ं िह सन्दशे ह ै विसमे अथभ ह ै , और वनियभ लेने के वलए एक आधार ह ै । सचना ितभमान एि एवतहावसक ू ं स्रोतों

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 2 resources! id: **42**

से प्राप्त हो सकती ह ै । वकसी समस्या के समाधान के वलए या वफर वकसी अिसर को प्राप्त

करन े के वलए सचना एक महत्त्िपि भ र्वमका वन्ाती ह ै । ू ू ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 10 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 2.4.3 ज्ञान ज्ञान को इस ससार के िस्तवनष्ठ गिों और सबधों, प्राकवतक और मानिीय तत्त्िों के बारे म ें विचारों की ृ ु ु ं ं ं अवर्व्यवक्त के रूप म ें दखे ा िा सकता ह।ै ज्ञान म ें मनष्य की विविध परक की शवक्तयों को सवचत करती ु ं ह ै तथा विषयीकत होती ह।ै एक सगवठत सचना ही ज्ञान का रूप ले सकती ह ै । ऐसी सचना विसे मानि ृ ु ू ू मवस्तष्क समझते हए वकसी वनियभ को लेने म ें सक्षम

Plagiarism detected: **0.16%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 5 resources! id: **43**

होता ह,ै उसके ज्ञान म ें िवि करता ह ै । ज्ञान सचना ृ ू नहीं ह ै और सचना समक नहीं ह।ै ज्ञान सचना से प्राप्त होता ह,ै विस तरह से सचना समक से प्राप्त होती ू ू ू ं ं ह।ै 2.4.4 समक, सचना एव ज्ञान में अंति ू ं ं ं सचना ज्ञान ू समक ं सचना को ससावधत समक के उवचत अध्ययन और अनिर् के ू ु ं ं समक असगवठत और ं ं रूप म ें माना िा सकता ह ै माध्यम से प्राप्त

वकया गय े मानि के अप्रसाररत तथ्यों का विससे वनियभ आसान हो समझ को ज्ञान कहा िा सकता ह।ै प्रवतवनवधत्ि करता ह ै । आमतौर िाता ह।ै सचना को आमतौर ज्ञान आमतौर पर अवधगम , समस्या ू पर समक प्रकवत म ें वस्थर ह।ै यह ृ ं पर कछ अथभ और उद्दश्े य की समझ , सोच और उवचत समझ ु घटनाओ

Plagiarism detected: **0.1%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 6 resources! id: **44**

के बारे म ें असतत ं वमलते ह ैं पर आधाररत ह ै । ज्ञान को तथ्यों का एक सेट का प्रासवगकता के आधार पर सचना ू ं प्रवतवनवधत्ि कर सकता ह ै समक ं की समझ के रूप म ें दखे सकते ह।ैं सचना के वलए एक शतभ ह।ै ू इसे मानिीय सकलपनात्मक ं प्रवियाओ के एकीकरि के रूप म

ें ं माना िा सकता ह ै िो की साथभक वनष्कष भ वनकालने म ें मदद करता ह ै अभ्यास प्रश्न 7. ितभमान यग को िावन्त का यग कहा िा सकता ह।ैं ु ु 8. आकड़े ___________होता ह,ै विसके आधार पर हम वनियभ लेते ह ैं । ं 9. ___________ असगवठत और अप्रसाररत तथ्यों का प्रवतवनवधत्ि करता ह।ै ं 10. ससावधत समक को ___________ के रूप म ें माना िा सकता ह।ै ं ं 11. ज्ञान सचना नहीं ह ै और सचना समक ह।ै (सत्य /असत्य) ू ू ं 12. ज्ञान सचना से प्राप्त होता ह,ै विस तरह से सचना समक से प्राप्त होती ह।ै (सत्य /असत्य) ू ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 11 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 2.5 साराशं वशक्षा का प्रमख उद्दश्े य ज्ञान प्रदान करना ह।ै त्य का अवस्तत्ि त्ी मान्य ह ै िब उसका ज्ञान हो। सत्य को ु ज्ञान से अलग नहीं वकया िा सकता । इसीवलए तत्िमीमासा के साथ ज्ञान मीमासा िडी

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… id: **45**

होती ह ै । ज्ञान ु ं ं और सत्य एक ही ह ै क्योंवक यह व्यवक्त के मन म ें होता ह

ै । ू वशक्षा की दवष्ट से

Plagiarism detected: **0.22%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 11 resources! id: **46**

ज्ञान की सवियता एि असवियता को ज्ञात कर लेना अवत आियशक ह ै । वशक्षक द्वारा ं पाठ योिना का स्िरुप बनाना विससे वक िह विद्यावथभयों को ज्ञान का अिनभ कराने के वलए उवचत वस्थवतयों का वनमाभि कर सके , सविय ज्ञान की श्रेिी म ें आता ज्ञान के दो पक्ष होते ह:ैं प्रत्यक्ष ज्ञान एि ं अप्रत्यक्ष ज्ञान । ऐसा ज्ञान िो हमारी ज्ञानेवन्द्रयों से प्राप्त होता ह ै , विसे व्यवक्त अपने िीिन म

ें स्िय प्राप्त ं करता ह,ै प्रत्यक्ष ज्ञान ह ै । िही दसरी ओर िह ज्ञान िो कथनों िए पस्तकों स े प्राप्त वकया िाता ह,ै परोक्ष ु ं ू ज्ञान होता ह ै । ज्ञान के चार प्रकार होते ह:ें अनर्भिन्य ज्ञान , प्रागनिरा ज्ञान, विश्लेषि ज्ञानिए ु ु ं सश्लेषि ज्ञान ं ज्ञान क े प्रमख स्रोत वनमन प्रकार से ह ें :- ु 1. इवन्िय अनभव : ज्ञानेवन्ियाँ व्यवक्त को ससार की िस्तओ के सपकभ म ें लाता ह ै और व्यवक्त के अन्दर ु ु ं ं ं सिदे ना उत्पन्न करता ह ै । यही सिदे ना िास्त का ि

Plagiarism detected: **0.15%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 8 resources! id: **47**

ज्ञान प्रदान करती ह ै । ु ं ं 2. साक्ष्य: साक्ष्य दसरों के प्राप्त अनिर् िए वनरररक्षि को आधार मानते हए ज्ञान प्राप्त करना साक्ष्य ु ं ू कहलाता ह ै । स्िय करने की अपेक्षा, व्यवक्त दसरों के वनरररक्षि से ही तथ्य प्राप्त करके ज्ञान अवितभ ं ू करता ह ै । 3. तकत बवि : तकभ एक मानवसक प्रविया ह ै और हमारा अवधकाँश तकभ पर आधाररत होता ह ै । तकभ ु द्वारा हम अनिर् से प्राप्त ज्ञान की सिदे नाओ को सगवठत करके सपि भ ज्ञान क

ा वनमाभि करते ह ें । ु ू ं ं ं ं अतः यह कहा िा सकता ह ै की तकभ अनिर् पर कायभ करता ह ै और उसे ज्ञान म ें पररिवतभत करता ह।ै ु 4. अतः प्रज्ञा: वकसी तथ्य को अपने मन म ें पा िाना अतः प्रज्ञा ह ै । इस ज्ञान पर हमारा पि भ विश्वास ू ं ं होता ह ै । इसको वकसी तकभ की आिश्यकता नहीं होती । न ही हम ें इसकी वनवश्चतता या िदै ता पर ृ कोई होता ह ै । अतः स्वष्ट ज्ञान प्राप्त करने का ऐसा साधन ह ै विसका उललेख दाशवभ नको द्वारा वकया ं गया ह ै । 5. सत्ता आवधकारिक ज्ञान: यह सि भ विवदत ह ै वक मानि समाि म ें व्यवक्तगत वर्न्नताए ह ें । कछ की ु ं प्रवत्रा वबरले ही होती ह ै और ये प्रवत्राशाली मानि ही ज्ञान के क्षेत्र म ें अर्तपि भ योगदान दते े ह ें । ू ू इनके द्वारा वदया गया ज्ञान प्रवत्रा ज्ञान कहलाता ह ै । समक असगवठत और अप्रसाररत तथ्यों का प्रवतवनवधत्ि करता ह ै ।आमतौर पर समक प्रकवत म ें वस्थर ह।ै ृ ं ं ं यह घटनाओ के बारे म ें असतत तथ्यों का एक सेट का प्रवतवनवधत्ि कर सकता ह ै समक सचना के वलए ू ं ं एक शतभ ह।ै सचना को ससावधत समक के रूप म ें माना िा सकता ह ै विससे वनियभ आसान हो िाता ह।ै ू ं ं सचना को आमतौर पर कछ अथभ और उद्दश्े य वमलते ह ें उवचत अध्ययन और अनिर् के माध्यम से प्राप्त ू ु ु वकया गये मानि के समझ को ज्ञान कहा िा सकता ह।ै ज्ञान आमतौर पर अवधगम , समस्या की समझ , उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 12 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं सोच और उवचत समझ पर आधाररत ह।ै

Plagiarism detected: **0.05%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 4 resources! id: **48**

ज्ञान को प्रासवगकता के आधार पर सचना की समझ के रूप म ें ू ं दखे सकते ह।ें इसे मानीय सकलपनात्मक प्रवियाओ के एकीकरि के रूप म

ें माना िा सकता ह ै िो की ं ं साथभक वनष्कष भ वनकालने म ें मदद करता ह ै 2.6 शब्दावली 1. अतः प्रज्ञा : वकसी तथ्य को अपने मन म ें पा िाना अतः प्रज्ञा ह ै ं ं 2. प्रागनभव ज्ञान: ऐसा ज्ञान िो अनिर् से स्ितत्र हो। ु ु ं 2.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. िॉन लोक 2. प्रागनिर् ु 3. इवन्िय अनिर् ु 4. साक्ष्य 5. अतः प्रज्ञा ं 6. सत्ता आवधकाररक ज्ञान 7. सचना ू 8. मान या मानों का एक समह ू 9. समक ं 10. सचना ू 11. असत्य 12. सत्य 2.7 संदर् भ ग्रंथ सची ू 1. पाण्डेय रामशल (2007), 'वशक्षा के दाशवभ नक वसात , आगरा, अग्रिाल पवब्लके शन । ं 2. ओड़ लमीलाल के . (2009), 'वशक्षा की दाशवभ नक पष्ठर्वम',िायपर , रािथान वहदी अकादमी। ृ ू ु ं 3. रूहले ा , सत्यपाल , (2014), 'वशक्षा के दाशवभ नक तथा सामाविक आधार , आगरा , अग्रिाल पवब्लके शन 4. Best, J.W., & Kahn, J.V. (1996). Research In Education. Prentice-Hall, New Delhi. 5. Bhatia, K. & Bhatia, B. (1997). The Philosophical and Sociological Foundations, New Delhi Doaba House. उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 13 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 6. Biswas. A. (1992). Educat Ion in India, Arya Book Depot. New Delh I 7. Solomon Robert C. (2008), 'Introducing Philosophy', Oxford University Press, New York. 8. Masih, Y. (1992). Saamaanya Dharmadarshan Evam Daarshnik Vishleshan, Moti Lal and Banarsi Das, New Delhi India. 9. Weber. O.C. (1990). Basic Philosophies of Education, New York Holt, Rinehart and Winston. 2.8 सहायक/ उपयोगी पाठ्यसामग्री 1. वसह , एन . पी.(2003), वशक्षा दशनभ , नई वदलली , नीलकमल पवब्लके शन ं 2. पाठक एड यागी (2005), वशक्षा के वसात , आगरा, विनोद पस्तक मवदर । ु ं ं ं 3. ओड़ लमीलाल के . (2009),

Quotes detected: **0.01%** id: **49**

'वशक्षा की दाशवभ नक पष्ठर्वम',

िायपर , रािथान वहदी अकादमी। ृ ू ु ं 4. रूहले ा , सत्यपाल , (2014), 'वशक्षा के दाशवभ नक तथा सामाविक आधार , आगरा , अग्रिाल पवब्लके शन 5. Solomon Robert C. (2008), 'Introducing Philosophy', Oxford University Press, New York. 6. Masih, Y. (1992). Saamaanya Dharmadarshan Evam Daarshnik Vishleshan, Moti Lal and Banarsi Das, New Delhi India. 7. Verma, Ashok Kumar (1991). Tattvamimamsa Evam Gyanmimamsa (Sankshipt Samanya Darshan), Motilal Banarsidass Publisher. 2.9 वनबधात्मक प्रश्न ं 1. ज्ञान की धारिा से क्या अवर्प्राय ह?ै 2. प्रत्यक्ष ज्ञान िए अप्रत्यक्ष ज्ञान से आप क्या समझते ह ें अपने शब्दों म ें व्यक्त कीविए। ं 3.

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 7 resources! id: **50**

ज्ञान प्राप्त करने के कौन से स्रोत ह ें ? विवेचना कीविए 4. ज्ञान प्राप्त की िज्ञै ावनक विवध क्या ह ै और इसकी क्या क्या विशेषताए ह?ैं ं 5. ज्ञान का अवस्तत्ि क्या ह ै और इसक

ी विवर्न्न अिधारिाए क्या ह?ैं ं 6. ज्ञान, सचना एि समक म ें अतर कीविए। ू ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 14 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं इकाई 3- विविन्न अध्ययन क्षत्रे ों /अनशु ासनों के उद्भि और ु िततमान समय में कल ज्ञान पवरदश्य में उनका स्थान, ृ विद्यालयी पाठ्यचया में काम से संबंवधत विषयों जैसे बागिानी और आवतथ्य के समिोशन की साथकता त Emergence of Various Disciplines and their Place in the Total Knowledge Scenario in the Present Times, Significance of the Inclusion of Work Related Subjects Namely Horticulture and Hospitality in the School Curriculum 3.1 प्रस्तािना 3.2 उद्दश्े य 3.3 विवर्न्न अध्ययन क्षेत्रों /अनशासनों के उद्भि और ितभमान समय में कल ज्ञान पररदृश्य ु ु में उनका स्थान 3.4 विद्यालयी पाठयचयाभ में काम से सबवधत विषयों िसे बागिानी और आवतथ्य के ् ं ं समिोशन की साथभकता 3.4.1 बागिानी के समिोशन की साथभकता 3.4.2 आवतथ्य के समिोशन की साथभकता 3.5 साराश ं 3.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 3.7 सदर्भ ग्रन्थ ि कछ उपयोगी पस्तकें ु ु ं 3.8 वनबधात्मक प्रश्न ं 3.1 प्रस्तावना अध्ययन क्षेत्रों /अनशासनों के उद्भिन को औपचारिक वशक्षा के उद्भिन के समय से ही माना िाता ह।ै ु शवै क्षक िगत के कल सवचत ज्ञान को विवशष्ट शाखाओ म ें िगीकरि के कारि कालातर म ेंविषयों की ु ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 15 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं िवटलता विषय की प्रकवत आवद के आधार पर विवर्न्न अनशासनों का उद्भिन हआ। विसका उदश्े य यह ृ ु था की एक विषय के अनिरेों को उसी विषय उप विषय को तावकभ क िम म ें व्यिवस्थत करने से ह।ै ज्यों- ु ज्यों विषयों का ज्ञान रावश बढती िाती ह ै त्यों-त्यों विषय तथा अनशासनों की सख्या ्री बढती िाती ह।ै ु ं अनशासनों के िगीकरि के करि अवधगम, वशक्षि तथा अनसन्धान म ें सहिता होती ह।ै ु ु ितभमान इकाई म ें हम विवर्न्न अध्ययनक्षेत्रों /अनशासनों के उद्भि और ितभमान समय म ें कल ु ु ज्ञान पररदृश्य म ें उनका स्थान तथा विद्यालयी पाठयचयाभ म ें काम से सबवधत विषयों िसै े बागिानी और ् ं ं आवतथ्य के समिोशन की साथभकता का विस्तार पिकभ अध्ययन करेंग।े ू 3.2 उद्दश्े य इस इकाई का अध्ययन करेने के पश्चात आप - 1. विवर्न्न अध्ययन क्षेत्रों के उद्भि का अथभ बता सकें ग।े 2. अध्ययन क्षेत्रों के उद्भि का महत्ि अपने शब्दों म ें व्यक्त कर सकें गे। 3. ितभमान समय म ें कल ज्ञान पररदृश्य म ें विवर्न्न विषयों के स्थान की व्याख्या कर सकें ग।े ु 4. विद्यालयी पाठयचयाभ म ें काम से सबवधत विषयों की साथभकता की विवेचना कर सकें ग े । ् ं ं 5. बागिानी और आवतथ्य विषय के समिाशे न की साथभकता का विश्लेषि कर सकें गे। 3.3 ववववर्न्न अध्ययन क्षत्रे ों /अनुशासन के उद्भव और वतमभ ान समय म कु ल ें ज्ञान पवरदश्ृ य म उनका स्थान ें अनशासन शब्द की उत्पवत्त लैवटन ्राषा के discipulus शब्द से हई ह ै विसका आशय वशष्य

Plagiarism detected: **0.03%** https://alphabetsinhindi.com/hindi-alphabets-wi… id: **51**

होता ह,ै ु और disciplina विसका अथभ वशक्षि होता ह ै । शवै क्षक अनशासन सीखने का एक क्षेत्र

अथिा एक ु शाखा ह ै विसका समबन्ध विश्वविद्यालय के एक शवै क्षक वि्राग से होता ह ै । विसे अनसन्धान तथा ु अधेतािवत की उन्नवत के वलए स्थावपत वकया िाता ह ै ।शवै क्षक अनशासन की स्थापना व्यिसावयकों के ृ ु प्रवशक्षि , शोधकताभओ, विद्वानों तथा विशषे ज्ञों के वलए बनाया गया ह ै । ं एक शवै क्षक अनशासन अथिा क्षेत्र ज्ञान की एक शाखा के रूप म ें परर्रावषत वकया िाता ह ै ु विसम े विशषे ज्ञता, िनमानस,प्रोिक्े ट,समदाय चनौवतयाँ अध्ययन, पररक्षि और शोध का

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.depawali.in/hindi-alphabet-chart/ id: **52**

क्षेत्र होता ह ै िो ु ु घवनष्ठ रूप से वकसी विश्वविद्यालय के वि्राग से िड़ा होता ह ै िस

ै े नामतः िज्ञैावनक अनशासन म ें ्रौवतक ु ु विज्ञान, गवित, और रसायन विज्ञान आवद । शवै क्षक सस्थानों ने मल रूप से

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.hindwi.org/poets/sarahpa/profile id: **53**

विद्वानों द्वारा सवित ज्ञान को ृ ू ं तथा ज्ञान के विस्तारीकरि को सग्रह/सचीबि करने के वलए अनशासन शब्द का प्रयोग वकया। उन्नीसी ू ु ं सताब्दी के दौरान

िमनभ विश्वविद्यालयों म ें अनशासनात्मक पद का उद्भि हआ । ु अवधकाश शक्षै विक विषयों की उत्पवत्त की िड़ें उन्नीसी शताब्दी कके विश्वविद्यालयों से िडी ु ं ह ैं िब परपरागत पाठयिम अशास्त्रीय ्राषा और सावहत्य के साथ परक थे विसम ें अथभशास्त्र, ् ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 16 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं रािनीवतशास्त्र, समािशास्त्र, लोक प्रशासन, िसै े सामाविक

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व… + 2 resources! id: **54**

विज्ञान, प्राकवतक विज्ञान ्रौवतक विज्ञान, ृ रसायन विज्ञान,िि विज्ञान तथा तकनीकी विषयों िीवनयररग आवद। ं ं 20 शताब्दी म ें वशक्षाशास्त्र तथा मनोविज्ञान

िसै े नए शैक्षविक विषयों का प्राद्राभि हआ । ु 1970 और 1980 के दशक म ें नये शवै क्षक विषयों का विष्फोट हआ िसै े िनसचार, मवहला अध्ययन, ं िनसींख्या अध्ययन, पयाभिरि अध्ययन आवद विषयों की उत्पवत्त हई। कई विषयों की उत्पवत्त व्यिसावयक दृवष्टकोि से हई विसम ें प्रमखतः नवसिंग, होटल मनै िमेंट , हावटभकलचर आवद हई ।कई अन्तः विषयों की ु उत्पवत्त हई विसम े विज्ञान, िि रसायन, कमपटर साइस, बायोटेक्नोलोिी आवद विषयों को व्यापक ू ू ं मान्यता प्राप्त हई । बीसवीं शताब्दी

तक पहचँ ने के पश्चात इन पदनामों को धीरे धीरे अन्य दशे ों म ें अपनाया गया ु और सि भ स्ि ीकत विषय के रूप म ें स्थावपत हो गए । हालावक वर्त्र वर्त्र दशे ों म ें इन्ह ें एक ही नाम से ृ ं िाना िाए ये िरूरी नहीं होता ह।ै बीसी शताब्दी म ें शावमल विषयों म ें विज्ञान म ें ौवतक विज्ञान, रसायन विज्ञान, िी विज्ञान, र्विज्ञान, खगोल विज्ञान तथा सामाविक विज्ञानों म ें अथभशास्त्र, रािनीवतशास्त्र, ू समािशास्त्र, और मनोविज्ञान थे। बीसीं शताब्दी से पि भ वबवर्त्र अनशासन प्रायः व्यापक और सामान्य ू ु थी िो उस समय विज्ञान म ें कम रूवच के करि थी।शक्षै विक व्यिस्था के बाहर एक व्यिसाय

Plagiarism detected: **0.07%** https://hi.wikipedia.org/wiki/के_एम_करिअप्पा + 2 resources! id: **55**

के रूप म ें विज्ञान के वलए कछ अिसर मौिद थे। उच्च वशक्षा ने िज्ञै ावनक िाच के वलए सस्थागत सरचना प्रदान की ु ू ं ं ं साथ ही साथ आवथभक सहायता ी प्रदान की विसके फलस्िरूप िज्ञै ावनक ज्ञान क

ी मात्र म ें बहत तीव्र िवि हई और अध्ययनकताभओ द्वारा िज्ञै ावनक गवतविवधयों के सक्ष्म ागों पर ध्यान के वन्ित वकया िाने ृ ू ं लगा अतः इस करि िज्ञावनक विशेषज्ञता का दौर चला ।विस प्रकार इन विशषे ज्ञताओ का विकास हआ, ं विश्वविद्यालयों में आधवनक िज्ञै ावनक विषयों म ें ी सधार हआ । अततः वशक्षा की पहचान वकये गए ु ु ं विषयों विशषे विषयों तथा विवशष्ट रुवचओ के कें ि बन गए। ं एथोनी वबग्लन के अनसिा

Quotes detected: **0.05%** id: **56**

"एक शवै क्षक अनशासन अथिा अध्ययन का क्षेत्र ज्ञान की शाखा के रूप में ु ु ं ह।ै विसके विचार और शोध उच्च वशक्षा का ाग होता ह।ै "

ड़ेंज़, जेड० के अनसिा शवै क्षक अनशासन सीखने का एक क्षेत्र ह ै िो विश्वविद्यालय के वकसी शवै क्षक ु ु वि ाग से समबवधत होता ह ै । इसकी स्थापना शोध तथा अध्ययन की उन्नवत की िाती ह ै । यह ं शोधकताभओ, वशक्षकों तथा विशषे ज्ञों के व्यािसावयक प्रवशक्षि के वलए बनाया िाता ह।ै ं अतः एक शवै क्षक अनशासन ज्ञान सीखने की शाखा के रूप म ें अथिा एक शवै क्षक अन्िषि के रूप म ें ु िाना िाता ह ै िो विद्यावथभयों के वलए विशेष रूप से स्नातक तथा परास्नातक स्तर पर अध्ययन की सरचना अथिा कायभिम को तय करता ह ै अध्ययन

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 3 resources! id: **57**

क्षेत्र से तात्पयभ वकसी विषय के अध्ययन क्षेत्र से ह ै ं और इसके दो पक्ष होते ह ैं - स

िावन्तक पक्ष और व्यािहाररक पक्ष। सैिावन्तक पक्ष म ें विषय के तथ्यों, वसिातों एि वनयमों का अध्ययन और विश्लेषि वकया िाता ह ै िबवक व्यािहाररक पक्ष मलतः विषय की ू ं ं वशक्षि विवधयों का प्रयोग, अनसन्धान क्षेत्र आवद का अध्ययन िमिा व्यिहार को कें ि म ें रखकर वकया ु िाता ह।ै विषयों के अनशासन को आक्सफोडभ इवनलश वडक्शनरी के अनसार शवै क्षक अनदशे नों के ु ु ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 17 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं अवधगम अनिेशों की एक शाखा के रूप िाना िाता ह,ै विसम ें एक शवैक्षक अनशासन की विवशष्ट ु ु िवटल प्रवशक्षि का रूप दशाभता ह ै । आथभर डक्सभ ने अनशासन को शवै क्षक पररप्रेक्ष्य म ें बताते हए यह कहते ह ैं वक यह एक विवशष्ट िग भ के ु अध्ययन के अभ्यास से समबवधत ह,ै इसकी शोध प्राविवध, विषयों के बारे म ें सत्य की खोि करता है, ं इसके मौवलक वसिात, तथ्य एि शब्दािली होती ह ै तथा यह बताता ह ै की विस विषय िस्त को अपना ु ं ं रह ें ह ै उसका अभ्यास करना ह।ै मोती वनस्सनी (1997) के अनसिा एक अनशासन को अध्ययन की सविधा

Plagiarism detected: **0.08%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 6 resources! id: **58**

के रूप में परर ावषत वकया ु ु ु ं िा सकता ह ै िो तलनात्मक रूप से अपने ही तरह के विषय विशेषज्ञों के समदाय के पास उपलब्ध ज्ञान ु ु के रूप म ें िाना िाता ह।ै अकादवमक अनशासन की विशषे ताए ु ं i. ज्ञान का विशेषीकत क्षेत्र

ृ ii. स्िय की विवशष्ट अिधारिायें एि वसिात ं ं ं iii. विवशष्ट शब्दािली iv. शोध के विवशष्ट उदश्े य v. वनवश्चत शोध-प्रविवध vi. वनवश्चत विषयिस्त पर व्यािसावयक सगठनों से चचा भ ु ं सामाविक विज्ञान विषय के बारे म ें एक आमधारिा बन चकी ह ै वक इसम ें नदी, िगल, पहाड़, रािा- ु ं रावनयों की कहावनयाँ, सत्ता और उसम ें लोगों की ागीदारी और रोिी-रोटी यानी अथभव्यिस्था की बातें बताई िाती ह ैं और इन बातों को पढ़ने से उन्ह ें कछ नहीं वमलने िाला। दवै नक िीिन िीने के वलए ु तकनीकी कशलता होनी चावहए और इसके वलए विज्ञान और गवित विषयों की पढ़ाई अवधक िरूरी ह।ै ु ौवतकिादी िीिन िीना एकमात्र लक्ष्य हो गया ह ै तो सामाविक सस्कारों की बात, अच्छे नागररक की ं अवधकार, नैवतकता आवद चीिें गौि लगने लगी ह ैं ।

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **59**

विकास की अधी दौड़ म ें शावमल होकर सामाविक ं और नैवतक मलयों को तच्छ समझा िाने लगा ह ै । परन्त सच्चाई यह ह ै वक मानि म ें नैवतक मलयों का ू ु ु ू विकास

करके ही एक अच्छे नागररक का वनमाभि वकया िा सकता ह ै । वशक्षा के विवर्त्र अध्ययन क्षेत्रों की उत्पवत्त के कई कारक होते ह ैं विनम ें से वनमनवलवखत प्रमख कारक ु ह:ैं - i. तकनीकी उन्नवत ii. इवतहास ज्ञान iii. स्िास्थ्य सबधी ज्ञान ं ं iv. गवितीय क्षमताओ का ज्ञान ं v. सभ्यता और सस्कवत के ज्ञान से अिगत कराना ृ ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 18 ु शास्त्रों एव ववषयों का

अवबोध CPS 2 ं vi. सस्कवत के द्वारा नैवतक और आध्यावत्मक वशक्षा को बढ़ाा ृ ं vii. सस्कवत का सरक्षि ृ ं ं viii. नारी सशवक्तकरि ix. राष्ट्रीय आवथभक िवि ृ x. अतराभष्ट्रीय व्यापार ं xi. ्राषायी विवर्न्नता को समझना xii. वमवडया की उत्त्पवत्त xiii. औद्योगीकरि म ें रोिगार के अिसर xiv. फै शन xv. तलनात्मक वशक्षा का ज्ञान ु xvi. समिा के उत्थान के वलए सरकारी नीवतयों के वकयाभन्ियन

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 3 resources! id: **60**

का ज्ञान स्री विषयों का अपना एक स्ितत्र क्षेत्र, स्ितत्र पाठयिम और वशक्षि विवध तथा अनसन्धान क्षेत्र

होता ् ु ं ं ह।ै वकसी ्री विषय को अनशावसत बनाने के वलए उसम ें वनमनवलवखत विशेषताए ँीं होनी चावहए ु i. प्रसग ं ii. विषय िस्त ु iii. पाठयिम ् iv. प्रकरि v. मद्द े ु vi. मल प्रश्न ू vii. सकाय ं viii. अनसन्धान कें ि ु ix. शोध पवस्तका ु x. उत्प्रेरिात्मक उद्दश्े य सामावजक अध्ययन सामाविक अध्ययन से अवर्प्राय ऐसे विषय से ह ै िो मानिीय सबधों की िानकारी प्रदान करता ह।ै ं ं सामाविक अध्ययन का िन्म अमरे रका म ें हआ। इसम ें र्गोल, इवतहास, रािनीवत शास्त्र तथा अथभशास्त्र ू का समािेश था। 1911 में कमटे ी ऑफ टेन ने इसे समाि शास्त्र से िोड़ कर सामाविक अध्ययन बना वदया। सामाविक अध्ययन की धारिा को स्पष्ट करने के वलए कई विद्वानों ने इसको अलग अलग परर्रावषत वकया ह:ै जे० एफ० फ्रोस्टि के अनसाि " सामाविक अध्ययन समाि का अध्ययन ह ै और इसका प्रमख उद्दश्े य ु ु विद्यावथभयों को उस ससार को समझने म ें सहायता प्रदान करना ह ै विसम ें उन्हीं रहना ह ै तावक ि े उसके ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 19 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं उत्तरदायी सदस्य बन सकें । इसका ध्येय विचे नात्मक वचतन और सामाविक पररितभन की तत्परता को ं प्रोत्सावहत करना ह,ै सामान्य कलयाि के वलए कायभ करने की आदत को विकवसत करना, दसरी ू सस्कवतयों के प्रवत सराहना तथा यह दृवस्टकोि रखना की स्री मानि तथा राष्ट्र एक दसरे पर आवश्रत ह ैं ृ ं ु "। शैवक्षक अनसधान ववश्वकोष के अनसाि " सामाविक अध्ययन िह अध्ययन ह ै िो हर मानि के रहन ु ु ं सहन के ढग, उसकी आिश्यकताओ तथा उन्ह ें परा करन े से समबवधत विवर्न्न वियाकलापों और उसके ू ं ं ं द्वारा विकवसत सस्थाओ

Plagiarism detected: **0.08%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 5 resources! id: **61**

के बारे म ें ज्ञान प्रदान करता ह"ै । ं ं सामावजक अध्ययन वशक्षण के उद्देश्य :- a. उत्तम नागररकता के गिों का विकास ु b. सामाविकता के गिों का विकास ु c. बौविक और मानवसक शवक्तयों का विकास d. नैवतकता और सदाचरि के गिों का विकास

ु e. व्यवक्ति के सिांगिी विकास म ें सहायक f. सामाविक पररितभन लाने म ें सहायक ितभमान समय म ें कल ज्ञान पररदृश्य म ें सामाविक अध्ययन का स्थान ु आि सामाविक विज्ञान विषय दशे र् के स्कलों म ें वकसी न वकसी रूप म ें पढ़ाए िा रह े ह।ैं पहले आम ू तौर पर ऐसी वस्थवत नहीं थी। आिादी के पहल े समािशास्त्र, रािनीवत विज्ञान और यहाँ तक वक अथभशास्त्र की वशक्षा ्री मख्य रूप से विश्वविद्यालयों ि महाविद्यालयों तक सीवमत थी। आिादी के बाद ु सामाविक विज्ञान के विषयों की वशक्षा म ें वनरन्तर विस्तार हआ तथा िलदी ही इन्ह ें स्कलों म ें पढ़ाए िाने ू की माँग बढ़ने लगी। अथभव्यिस्था, रािनीवत और समाि वकस तरह काम करते हैं, इसके बारे म ें सामान्य िानकारी होने से विद्यावथभयों को उनकी आग े की विन्दगी म ें यह समझने म ें मदद वमलेगी वक सिाभ वनक िीिन म ें नीवतयों की क्या र्वमका होती ह।ै यह उन्ह ें इस बारे म ें एक वशवक्षत दृवष्टकोि बनाने का आधार ू प्रदान कर सकता ह ै वक कछ खास नीवतयाँ ही क्यों अपनाई िाती ह ैं और अन्य क्यों नहीं। साथ ही अपनाई ु िाने िाली नीवतयों म ें से कछ ही क्यों सफल होती ह ैं और बाकी क्यों नहीं। ु सामाविक विज्ञान का ज्यादा महत्िपि भ योगदान नीवत-वनधाभरि के वलए प्रवशवक्षत करने में नहीं ह ै बवलक ू वशवक्षत ि समझदार नागररक तैयार करने म ें ह।ै लोकतत्र के अच्छे सचालन के वलए वशवक्षत नागररक िग भ ं ं का होना अपररहायभ ह।ै कोई व्यवक्त अच्छे नागररक होने के गि अनायास िा म ें से नहीं पकड़ता, उन्ह ें ु हावसल करने और बढ़ाा देने के वलए एक खास प्रकार की वशक्षा की िरूरत होती ह।ै एक अच्छा नागररक होने के वलए वसफभ ्रौवतक ि िवै िक वियाकलापों का िानकार होना ही काफी नहीं होता, अच्छे नागररक को उस सामाविक ससार के बारे म ें ्री समझ होना िरूरी ह ै विसका िह वहस्सा ह।ै सामाविक ं विज्ञान मानि समाि का अध्ययन करने िाली शवै क्षक विधा ह।ै यह प्राकवतक विज्ञानों के अवतररक्त अन्य ृ उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 20 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं विषयों का एक समह ह।ै इन विषयों की अपनी अलग-अलग सीमाए ँीं ह ैं। परन्त हम ें इन सीमाओ को ू ु ं खोलना ह।ै िब तक हम स्री विषयों के आपसी समबन्धों और िड़ाि को बच्चों को अच्छे से नहीं ु समझाएगँे ीं तब तक सामाविक विज्ञान के वशक्षि का उद्दश्े य परा नहीं हो सकता। अथभव्यिस्था, रािनीवत ू और समाि वकस तरह काम करते ह,ैं इसके बारे म ें सामान्य िानकारी होने से विद्यावथभयों को उनकी आगे की विन्दगी म ें यह समझने म ें मदद वमलेगी वक सािभिवनक िीिन म ें नीवतयों की क्या र्वमका होती ह।ै िब ू हम इवतहास पढ़ाते ह ैं तो हम ें बच्चों को यह समझाना होगा वक इवतहास के िल घटनाओ और वतवथयों का ं विषय नहीं ह ै बवलक इसकी सहायता से ससार को और ्री सन्दर बनाया िा सकता ह।ै सामाविक विज्ञान ु ं का सबसे महत्िपि भ कायभ वशवक्षत ि समझदार नागररक तैयार करना ह।ै लोकतत्र के अच्छे सचालन के ू ं ं वलए वशवक्षत नागररक िग भ का होना आिश्यक ह।ै अच्छे नागररक के गि हावसल करन े और बढ़ाा दने े ु के वलए एक खास प्रकार की वशक्षा की िरूरत होती ह।ै एक अच्छा नागररक बनने के वलए उसे उस सामाविक ससा

Plagiarism detected: **0.05%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… + 2 resources! id: **62**

र के बारे म ें ्री समझना होगा विसका िह वहस्सा ह।ै इसके वलए यह िरूरी ह ै वक उन्ह ें ं सामाविक ि प्राकवतक

दवनया के बारे म

ें स्पष्टता से और व्यिवस्थत ढग से सोचने के वलये

Plagiarism detected: **0.05%** https://schoolscholarship.cg.nic.in/ id: **63**

प्रोत्सावहत ृ ं ु वकया िाए। इसी कारि से सामाविक अध्ययन का कल ज्ञान पररदृश्य म ें एक महत्िपि भ स्थान ह।ै ु ू प्राकवतक ववज्ञान ृ विज्ञान

मानि के द्वारा वकया गया एक प्रयास ह।ै प्रागवै तहावसक काल से मानि ने अपन े कलयाि के वलए प्रकवत को अपने िश म ें करने की कोवशश की। प्रकवत को समझने और उस समझ का प्रकवत को वनयवत्रत ृ ृ ृ ं करने के ले वलए इस्तेमाल करने की प्रविया

Plagiarism detected: **0.09%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 4 resources! id: **64**

ही विज्ञान ह ै । प्राकवतक विज्ञान प्रकवत और ौवतक दवनया ृ ृ ु का व्यिवस्थत ज्ञान होता ह,ै या विर इसका अध्ययन करन े िाली इसकी कोई शाखा। असल में विज्ञान शब्द का प्रयोग लगर्ग हमेशा प्रकवतक विज्ञानों के वलये ही वकया िाता ह।ै प्राकवतक विज्ञान आनर्विक ृ ृ ु विज्ञान की िह

शाखा ह ै प्राकवतक िगत का प्रवतवनवधत्ि करती ह ै तथा प्रस ्राव्य मात्रात्मक वनयमों ृ ं अथिा िज्ञै ावनक प्रवतमानों को बनाने और उनकी शिता का परीक्षि करती ह।ै ु मानि स्िािा से विज्ञास होता ह ै और िो कछ ्री उसके सामाविक और प्राकवतक क्षेत्र म ें घवटत होती ृ ु ु ह ै उसके बारे म ें िानने

Plagiarism detected: **0.14%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… id: **65**

की विज्ञासा सहि और स्िा्राविक ह।ै इन्हीं प्रश्नों के उत्तर खोिने म ें लगे रहने के कायभ को विज्ञान कहा िाता ह।ै विज्ञान मानि की विवर्न्न कवठनाइयों िए समस्याओ के वनिारि हते ु ं ं ं सशक्त साधन ह।ै प्राकवतक विज्ञान को मख्य रूप से तीन शाखाओ म ें वि्रावित वकया िा सकता ह ै :- ृ ु ं a. प्राकवतक विज्ञान- इसम ें प्राकवतक घटनाओ का अध्ययन वकया िाता ह।ै ृ ृ ं b. औपचाररक विज्ञान - विसम ें घटनाए तथ्यात्मक ि विवधित विज्ञान

से विपरीत चलती ह।ै ं c. सामावि

Plagiarism detected: **0.38%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 3 resources! id: **66**

क विज्ञान - विसम ें मानि व्यिहार ि समाि का अध्ययन वकया िाता ह।ै ृ प्राकवतक विज्ञान की दो शाखाए होती ह ै - ्रौवतक विज्ञान और िीि विज्ञान। ्रौवतक विज्ञान के अन्तगतभ ृ ं ्रौवतक विज्ञान, रसायनशास्त्र, पथ्िी विज्ञान, पररवस्थवत विज्ञान, समि विज्ञान, विज्ञान आवद शाखाए ृ ु ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 21 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं आती ह।ैं िीि विज्ञान के अन्तगतभ िीि विज्ञान, प्रािी विज्ञान, मानि िीिन विज्ञान, िनस्पवत विज्ञान आवद शाखाए आती ह।ैं विज्ञान की अन्य शाखाए िो व्यिहार पैर आधाररत ह ै िसै े व्यिहाररक विज्ञान, ं ं मवे डकल विज्ञान इत्यावद। प्राकवतक विज्ञान की वनमनवलवखत विशषे ताए ँ ह ैं :- ृ a. विज्ञान क्या था या क्या होना चावहए इसपर विचार नहीं करती बवलक क्या है, क्या हो रहा ह ै और इसका क्या पररिाम होगा इसपर विचार करती ह।ै b. विज्ञान के अध्ययन की एक विशषे पिवत होती ह ै विसे िज्ञावनक विधी का नाम वदया िाता ह।ै c. विज्ञान के अध्ययन के वलए स्री साधन, उपकरि और माध्यम पितभ या िज्ञावनक होते ह।ैं ू d. विज्ञान िस्तओ और घटनाओ का पि भ विश्लेषि करने म ें सक्षम होती ह।ै ु ू ं ं e. विज्ञान म ें ज्ञान को सगवठत करने िाली विवध अन्य विषयों की विवध से वर्न्न होती ह।ै ं ववज्ञान ववषय का उद्देश्य औ लक्ष्य विज्ञान

विषय की वशक्षा का वनमनवलवखत उद्दश्े य ह ै :- a. िज्ञै ावनक िानकारी बढ़ाना b. व्यािहाररक उद्दश्े य c. िज्ञै ावनक दृवष्टकोि का विकास d. सास्कवतक उद्दश्े य ृ ं e. िीविकोपािनभ सबधी उद्दश्े य ं ं f. मनोिज्ञै ावनक उद्दश्े य g. अन्य विषयों के अद्ययन म ें आिश्यक h. प्रयोग सबधी कशलता उत्पन्न करने म ें सहायक ु ं ं वततमान समय में कल ज्ञान परिदृश्य में प्राकवतक ववज्ञान का

Plagiarism detected: **0.07%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 5 resources! id: **67**

स्थान ृ ु विज्ञान ने मानि की प्रगवत म ें अत्यत महत्िपि भ र्वमका वन्राई ह।ै आि विज्ञान मानि िीिन के प्रत्येक ू ू ं क्षेत्र म ें सहयोग कर रहा ह ै वफर चाह े िो सचार, यातायात,

वचवकत्सा, वशक्षा, कवष, उद्योग, मनोरिन, ृ ं ं विद्यत, परमाि शवक्त, िरन वनमाि, िास्त कला। इसवलए प्राकवतक

Plagiarism detected: **0.09%** https://alphabetsinhindi.com/hindi-alphabets-wi… id: **68**

विज्ञान का ज्ञान के क्षेत्र म ें अत्यत ही ृ ृ ु ु ु ं महत्िपि भ स्थान ह।ै ू भाषाववज्ञान ्राषाविज्ञान ्राषा के अध्ययन की िह शाखा ह ै विसम ें ्राषा की उत्पवत्त, स्िरूप, विकास आवद का िज्ञै ावनक िए विश्लेषिात्मक अध्ययन वकया िाता ह।ै ्राषाविज्ञान के अध्ययेता '्राषाविज्ञानी' कहलाते ं ह।ैं ्राषाविज्ञान,

व्याकरि से वर्न्न ह।ै व्याकरि म ें वकसी ्राषा का कायाभत्मक अध्ययन वकया िाता ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 22 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं िबवक ्राषाविज्ञानी इसके आग े िाकर ्राषा का अत्यन्त व्यापक अध्ययन करता ह।ै अध्ययन

के अनेक विषयों म ें से आिकल ्राषा-वि

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.myupchar.com/baby-names/boy-na… id: **69**

ज्ञान को विशेष महत्त्ि वदया िा रहा ह।ै आधवनक विषय के रूप म ें ्राषा-विज्ञान क

ा सत्रपात यरोप म ें सन 1786 ई0 म ें सर विवलयम िोन्स नामक ु ू ू विद्वान द्वारा वकया गया माना िाता ह।ै सस्कत ्राषा के अध्ययन के प्रसग म ें सर विवलयम िोन्स ने ही ृ ं ं सिप्रभ थम सस्कत, ग्रीक और लैवटन ्राषा का तलनात्मक अध्ययन करते हए इस सिर्ाना को व्यक्त वकया ृ ु ं ं था वक सिर्तः इन तीनों ्राषाओ के मल में कोई एक ्राषा रूप ही आधार बना हआ ह।ै अतः इन तीनों ू ं ं ्राषाओ (सस्कत, ग्रीक और लैवटन) के बीच एक सक्ष्म सबध सत्र अि

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व… + 3 resources! id: **70**

श्य विद्यमान ह।ै ्राषाओ का इस ृ ू ू ं ं ं ं ं प्रकार का तलनात्मक अध्ययन ही आधनवक ्राषा-विज्ञान के क्षेत्र का पहला कदम बना। ु ु डॉ° श्यामसन्दर दास ने अपने ग्रन्थ ्राषा रहस्य म ें वलखा ह-ै

Quotes detected: **0.03%** id: **71**

“्राषा-विज्ञान ्राषा की उत्पवत्त, उसकी ु बनिाट, उसके विकास तथा उसके ह्रास की िज्ञै ावनक व्याख्या करता ह।ै ”

मगल दिे शास्त्री (तलनात्मक ु ं ्राषाशास्त्र) के शब्दों में- ”्राषा-विज्ञान उस विज्ञान को कहते ह ैं विसम ें (क) सामान्य रूप से मानिी ्राषा (ख) वकसी विशेष ्राषा की रचना और इवतहास का और अन्ततः (ग) ्राषाओ या प्रादवे शक ्राषाओ के ं ं िगों की पारस्पररक समानताओ और विशषे ताओ का तलनात्मक विचार वकया िाता ह।ै ” डॉ° ्रोलानाथ ु ं ं वतिारी के ‘्राषा-विज्ञान’ ग्रन्थ म ें यह परर्राषा इस प्रकार दी गई है-

Quotes detected: **0.07%** id: **72**

“विस विज्ञान के अन्तगतभ िणिनभ ात्मक, ऐवतहावसक और तलनात्मक अध्ययन के सहारे ्राषा की उत्पवत्त, गठन, प्रकवत एिं विकास ृ ु ं आवद की समयक व्याख्या करते हए, इन स्री के विषय म ें वसिान्तों का वनधाभरि हो, उसे ्राषा विज्ञान कहते ह।ैं ”

ितभमान समय म ें कल ज्ञान पररदृश्य म ें ्राषा-विज्ञान का स्थान ु ्राषा-विज्ञान के अध्ययन से हम ें अनेक लार् होते ह,ैं िसै े- a. अपनी वचर-पररवचत ्राषा के विषय म ें विज्ञासा की तवप्त या शकाओ का वनमभलन। ृ ू ं ं b. ऐवतहावसक तथा प्रागवै तहावसक सस्कवत का पररचय। ृ ं c. वकसी िावत या समपि भ मानिता के मानवसक

Plagiarism detected: **0.09%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **73**

विकास का पररचय। ू d. प्राचीन सावहत्य का अथभ, उच्चारि एिं प्रयोग समबन्धी अनेक समस्याओ का समाधान। ं ं e. विश्व के वलए एक ्राषा का विकास। f. विदशे ी ्राषाओ को सीखने म ें सहायता। ं g. अनिाद करने िाली तथा स्िय टाइप करन े िाली एिं इसी प्रकार की मशीनों के विकास

और ु ं ं वनमाभि म ें सहायता। h. ्राषा, वलवप आवद म ें सरलता, वशिता आवद की दृवष्ट से पररितभन-पररिधभन म ें सहायता। ु i. इन स्री ला्रों की दृवष्ट से आि के यग म ें ्राषा-विज्ञान को एक अत्यन्त उपयोगी विषय माना ु िा रहा ह ै और उसके अध्ययन के क्षेत्र म ें वनत्य निीन विकास हो रहा ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 23 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं अभ्यास प्रश्न 1. अनशासन शब्द की उत्पवत्त लैवटन ्राषा के __________ शब्द से हई ह ै ु 2. अकादवमक अनशासन की क्या विशषे ताए ह ै ? ु ं 3. आधवनक विषय

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.myupchar.com/baby-names/boy-na… id: **74**

के रूप म ें ्राषा-विज्ञान का सत्रपात यरोप म ें सन 1786 ई0 ु ू ू म_ें _________नामक विद्वान द्वारा वकया गया माना िाता ह।ै 4. प्राकवतक विज्ञान क

ी दो शाखाए __________और __________ह ै । ृ ं 5. वकसी ्री विषय को अनशावसत बनाने के वलए उसम ें क्या विशषे ताए ँ होनी चावहए ? ु 3.4 ववद्यालयी पाठ्यचया म काम से संबवधत ववषयों जैसे बागवानी और ें ं आवतथ्य के समावेशन की साथभकता समाि के वकसी ्री घटक के विकास एिं उन्नवत के वलए वशक्षा एक महत्त्िपि भ साधन ह।ै वशक्षा हमारे ू ं िीिन की सव्यिस्था के काम आती ह।ै वशक्षा के अ्राि म ें कछ ्री अथभपि भ हावसल नहीं वकया िा ु ु ू ं सकता।वशक्षा के माध्यम से ही िीिन के स्री प्राप्तव्य प्राप्त वकये िा सकते ह ै । यह लोगों के िीिन स्तर में सधार तथा उनके िीिन की गिित्ता को बढ़ाने हते क्षमताओ का वनमाभि कर उनके वलए बेहतर रोिगार ु ु ु ं के अिसर उपलब्ध कराने के मामले म ें महत्त्िपिभ र्वमका वन्राता ह।ै इस ्रौवतक ससार में सफलतापिकभ ू ू ू ं िीिन यापन करने हते समाि की प्रत्येक इकाई को आवश्यक रूप से आत्म वनर्रभ बनाने म ें ्री महती ु र्वमका वन्राती ह ै । िीविकोपािभन का एक महत्त्िपि भ पक्ष ह।ै अपनी योनयता के अनसार एक विशेष ू ू ु व्यिसाय का चनाि िो हम अपने र्विष्य के वलये करते ह ैं विद्याथी विस िवत्त का चनाि करते ह ैं िही ृ ु ु आपके र्विष्य की आधरवशला ह।ै पिू भ म ें , लोग पहले अपनी वशक्षा परी करते थे, वफर अपनी िीविका ू ू का वनियभ करते थे। लेवकन आि की पीढ़ी अपनी विद्यालयी वशक्षा परी करने से पहले ही अपने र्विष्य ू वनमाभि की वदशा म ें कदम बढ़ा लेती ह।ै िीविका का

चनि वकसी व्यवक्त की िीिन शलै ी को अन्य वकसी ु घटना की तलना म ें सबसे अवधक प्र्ावित करता ह।ै कायभ हमारे िीिन के कई रूपों को प्र्ावित करते ु ह।ैं हमारे िीिन म ें मलयों, दृवष्टकोि ए हमारी प्रवित्तयों को िीिन की ओर प्र्ावित करता ह।ै इस ्ीषि ृ ू ं प्रवतयोवगता की दवनया म ें प्रारम्र म ें ही िीविका समबन्धी सही चनि अत्यवधक महत्िपि भ ह।ै इसीवलए ु ू ु एक ऐसी प्रविया की आिश्यकता ह,ै िो वकसी व्यवक्त को विर्न्न िीिन िवृत्तयों से उसके वशक्षा काल ृ म ें ही अिगत कराए। यवद वशक्षा ग्रहि करने के समय ही उसकी पाठयचयाभ म ें विविध व्यािसावयक विषयों ् का समािशे ही िाए तब विद्याथोयों को वशक्षा ग्रहि करते समय ही अपनी रुवचयों क्षमताओ और ं मनोिवृतयों का उसे और उसकी वशक्षा से िड़े स्ी वहतकारको को सहायता वमल िाएगी ।तथा ृ ु बेरोिगारों की सख्या म ें ्ी कमी आएगी तथा इस पहल से उसके अथोपािनभ की क्षमता बढ़ती ह।ै ं पाठयचयाभ म ें काम से समबवधत विषयों के समािेशन से विर्न्न वशलप ए कला–कौशल का अभ्यास ् ं ं ्ी हो िाता ह ै और व्यसाय के अिसरों से ्ी िो प्रारम्र से ही पररवचत हो िाता ह।ैं इन आधारों पर मनष्य नौकरी अथिा स्िािलमबी उपािनभ म ें अवधक सफल होता ह।ै ऐसे–ऐसे अनेक ला्ों को ध्यान म ें ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 24 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं रखते हुए वशक्षा म ें विविध व्यािसावयक कायभिमों का समािेश वकया गया । महात्मा गाँधी के वशक्षा ऐसी होनी चावहए िो की रोिगार परक हो । उनका मानना था वक ्ारत म ें बच्चों को 3H की वशक्षा अथाभत ् head, hand, heart की वशक्षा दी िाए । गाधँी के अनसार वशक्षा ऐसी हो िो आवथभक ु ं आिश्यकताओ की पवतभ कर सके बालक आत्मवनर्भर बन सके तथा बेरोिगारी से मक्त हो।चने हुए वशलप ू ु ु ं की वशक्षा दके र अच्छा वशलपी बनाकर स्िािलमबी बनाया िाए। बच्चों को प्ररम्र से ही शारीररक श्रम को महत्ि बताया िाये तावक सीख े हुए वशलप के द्वारा िीविकोपािनभ कर सके । वशक्षा बालकों के िीिन, घर, ग्राम तथा ग्रामीि उद्योगों, हस्तवशलपों और व्यिसाय घवनष्ट रूप से सबवधत हों।बच्चों द्वारा बनाई ं ं गई िस्तए विनका प्रयोग कर सके ए उनको बेचकर । चवक बवनयादी वशक्षा राष्ट्रीय सभ्यता, सस्कवत के ृ ु ू ु ं ं ं ं का प्रचलन वकया गया ह।ै मवस्तष्कीय

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **75**

विकास की दृवष्ट से- अथोपािनभ िसै ी आिश्यकता परी करने की ू दृवष्ट से –अवत आिश्यक वशक्षा का विकास

होना ही चावहए- उससे हर व्यवक्त को ला्ावन्ित होना ही चावहए। इसम ें दोरायें नहीं हो सकतीं।ज्ञान, अथोपािनभ , वशलप, कला आवद का अपना महत्ि और कायभक्षेत्र ह।ै ्ौवतक प्रगवत के वलए उन सबकी िरूरत है। गाधँी ने बवनयादी वशक्षा के पाठिम के ् ु ं अतगतभ आधार्त वशलप िसै े: कवष, कताई-बनाई, लकड़ी, चमड़े, वमट्टी का काम, पस्तक कला, मछली ृ ू ु ु ं पालन, फल ि सब्िी की बागिानी, बावलकाओ हते गहविज्ञान तथा स्थानीय ए ्ौगोवलक ृ ु ं ं आिश्यकताओ के अनकल वशक्षाप्रद हस्तवशलप इसके अलािा मात्ाषा, गवित, सामाविक अध्ययन ृ ु ू ं ए सामान्य विज्ञान, कला, वहदी, शारीररक वशक्षा आवद रखा। वशक्षि विवध को वशक्षि का िास्तविक ं ं कायभ-वियाओ और अनर्ुिों पर अवनिायभ रूप से आधाररत वकया। सामदावयक िीिन के आधार्त ु ु ू ं व्यिसायों से िड़ी हई थी। तथा सीख े हुए आधार्त वशलप के द्वारा व्यवक्त अपने िीिन का वनिाभह कर ु ू सकता था। अतः यह वशक्षा हमारे िीिन के बवनयाद या आधार से िड़ी हई थी इसवलए इसका नाम ु ु बवनयादी या आधार्त वशक्षा रखा गया । उनका मानना था की बच्चों को विर्न्न विषयों की वशक्षा ु ू वकसी आधार्त वशलप के माध्यम से दी िाए। गाधँी ने बवनयादी वशक्षा म ें सीखने की समिाय पिवत ू ु ं का उपयोग वकया। विसक अतगतभ उन्होंने समस्त विषयों की वशक्षा वकसी कायभ या हस्तवशलप के माध्यम ं से दी।कोठारी आयोग (1964) ने वशक्षा को काम से समवन्ित करने के उद्दश्े य से "कायाभनर्ुि" को वशक्षा ु के स्ी स्तरों पर वशक्षा का अविर्न्न अग बनाने की वसफाररश की तथा इस आयोग ने 10+2+3 वशक्षा ं योिना म ें +2 पर अकादवमक धारा के अवतररक्त दसरी धारा

Quotes detected: **0%** id: **76**

"व्यािसावयक धारा"

पाठयिम में रखने तथा ् ू 50% विद्यावथभयों को इस धारा से िोड़ने की वसफाररश की थी। 1951 – 52 म ें पचिषीय योिना आरम्् ं ं करने के अिसर पर आचायभ विनोबा ्ािे ने कहा था वकसी ्ी राष्ट्रीय योिना की पहली शतभ सबको रोिगार दने ा ह ै । यवद योिना से सबको रोिगार नहीं वमलता, तो यह एकपक्षीय होगा, राष्ट्रीय नहीं । कायाभनर्ुि को, स्ी स्तरों पर दी िाने िाली वशक्षा का एक आिश्यक अग होना चावहए। कायाभनर्ुि एक ु ु ं ऐसा उद्दश्े यपि भ और साथभक शारीररक काम ह ै िो सीखने की प्रविया का अवनिायभ अग ह ै विससे समाि ू ं को िस्तएँ या सेिाएँ वमलती ह।ैं यह अनर्ुि एक ससगवठत और िमबि कायभिम के द्वारा वदया िाना ु ु ु ं चावहए। कायाभनर्ुि की गवतविवधयाँ विद्यावथभयों की रुवचयों, योनयताओ और आिश्यकताओ पर ु ं ं आधाररत होंगी। वशक्षा के स्तर के साथ ही कशलताओ और ज्ञान के स्तर म ें िवि होती िाएगी। इसके ृ ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 25 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं द्वारा प्राप्त वकया गया अनर्ुि आग े चलकर रोिगार पाने म ें बहत सहायक होगा। माध्यवमक स्तर पर वदए ु िाने िाले पि-भ व्यािसावयक कायभिमों से उच्चतर माध्यवमक स्तर पर व्यािसावयक पाठयिमों के चनि ् ू ु म ें सहायता वमलेगी। वशक्षा का उद्दश्े य होना चावहए की छात्र को इस योनय बनाये की िो अपनी िीविका और ज़रूरतों को स्ियं परा कर सके । वशक्षा त्ी साथभक वसि होगी िब िह प्रत्येक छात्र को वकसी काय भ ू ं के योनय बनाएगी। इसवलए व्यिसाय के वलए वशक्षा न के िल ऐवच्छक बवलक अवनिायभ शतभ ह।ै वशक्षा म ें औपचाररकता ए मौवखकता को दर करने के वलए व्यािसावयक कायाभनर्ुि आिश्यक ह।ै गाधँी ने ्ी ु ं ं ू बेवसक वशक्षा प्रिाली द्वारा हस्तकला या कायभधाररत वशक्षा प्रिाली पैर बल वदया क्योंवक उन्होंने आत्मवनर्भर ता को वशक्षा का महत्िपि भ आधार माना। आि

के औद्योवगक यग म ें वशक्षा का ू ु व्यिसायीकरि महत्िपि भ ह।ै यह एक मनिोज्ञै ावनक और सामाविक आिश्यकता ह।ै प्रत्येक व्यवक्त म ें ू कछ न कछ करने की प्राकवतक लगन होती ह ै और वशक्षा को चावहए की उनकी उस इच्छा की सतवष्ट करे ृ ु ु ु ं तावक िो अपनी योनयताओ और क्षमताओ को पितभ या दशाभ सकें । गार्धीी के शब्दों म ें सच्ची वशक्षा ू ं ं ं बेरोिगारी के विरुि बीम ें के रूप म ें होनी चावहए। कोठारी आयोग ने ्री समि उपयोगी उत्पादन कायभ अथिा कायाभनिुर् (S. U. P. W.) पर बल वदया ह।ै उन्होंने वशक्षा को कायभधाररत बनाने पर बल वदया ह ै ु और य. िी. सी. के वनदशे न म ें इस कायभ के वलए आवथभक सहायता ्री िटाई तावक दशे के बहत स े ू ु महाविद्यालयों म ें व्यािसावयक पाठयिम चलाया िा सके । मानि का समपि भ विकास आिश्यक ह।ै ृ ू व्यािसावयक पक्ष व्यवक्तत्ि का एक ्रिाग ह,ै परत िीिन को समपि भ बनाने के वलए दसरे पक्

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **77**

षों का विकास ु ू ं ु ्री ज़रूरी ह ै अथाभत व्यािसावयक के साथ साथ नैतक और बौविक विकास

्री ज़रूरी ह।ै हमारे दशे में बेरोिगारी की इस ्रीषि समस्या के अनेक कारि ह ें । उन कारिों म ें लॉडभ मकै ॉले की दोषपि भ वशक्षा ू पिवत, िनसख्या की अवतशय िवि, बड़े-बड़े उद्योगों की स्थापना के कारि कटीर उद्योगों का ह्रास आवद ृ ु ं प्रमख ह ैं । वशक्षा प्रिाली म ें रोिगारोन्मख वशक्षा व्यिस्था का समािेशन से ही इन समस्याओ से वनज़ात ु ु ं पाया िा सकता ह ै । हमारी परमपरागत वशक्षा ्री इसी ओर इवगत करती ह ै कहा गया ह ै की अथभकरी च ं विद्या अथाभत विद्या ऐसी हो िो हम ें अथोपािनभ के योनय बनाए। विद्यालयी पाठयचयाभ म ें काम से सबवधत विषयों के समािेशन के उद्देश्े य: ् ं ं कायभ से समबवधत वशक्षा विद्याथी को उसकी उसकी , उसके पररिार तथा समदाय की ु ं आिश्यकताओ िैसे, स्िास्थ्य और स्िच्छता, िस्त्र, आिास, मनोरिन और सामाविक सेिा ं ं के सबध म ें की पहचान करने म ें सहायता करती ह ै । ं ं समदाय म ें उत्पादक गवतविवधयों के साथ उसे पररवचत करती ह ै । ु कच्चे माल के स्रोतों को िानने और माल और सेिाओके उत्पादन म ें उपकरि और उपकरिों ं के उपयोग को िानने म ें सहायता करती ह।ै विविध प्रकार के कायों म ें शावमल िैज्ञावनक तथ्यों और वसिातों को िानने म ें सहायक ह ै । ं उत्पादक कायों की योिना एि वनयोिन प्रविया को समझने म ें सहायक । ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 26 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं उत्पादक कायों के चयन, खरीद, व्यिस्था और उपकरि और उत्पादक कायभ के विविर्न रूपों के वलए सामग्री के उपयोग के वलए कौशल

Plagiarism detected: **0.18%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **78**

का विकास करना। उत्पादक कायभ एि समि सेिा वस्थवतयों म ें समस्या को सलझाने के तरीकों के कौशल का ु ं विकास करना। मनै अल काम और मनै अल श्रवमकों के प्रवत सममान का विकास करना। ु ु आत्मवनर्रभ ता, समबिता, अनशासन ,सहयोग , दृढ़ता, सहनशीलता, आवद के िछनीय मलयों ु ू ं का विकास। उत्पादक कायभ और सेिाओ के क्षेत्र म ें उपलवब्धयों के माध्यम से आत्म-सममान और ं आत्मविश्वास का विकास करना। पयाभिरि के वलए वचतन और अपनेपन, विममदे ारी और समि के वलए प्रवतबिता की िािना ं का विकास करना। समि के सामाविक-आवथभक समस्याओ के बारे म ें िागरूकता का विकास

करना। ं 3.4.1 बागवानी या उद्यान ववज्ञान के समावेशन की साथतकता बागिानी'लैवटन शब्द

Quotes detected: **0%** id: **79**

'Hortus'

(उद्यान) और

Quotes detected: **0%** id: **80**

'सस्कवत'

(खते ी) म ें बगीचा खते ी अथभ से ली गई ह।ै ृ ं बागिानी विज्ञान फल, सवब्ियों, फल, मसाले, िसािटी पौधे, िक्षारोपि फसलों, कद फसलों, औषधीय ृ ू ं और सगवधत पौधों की खते ी के साथ िड़ा हआ ह ै । यह एक कला और विज्ञान ह।ै पौधे ,फल और ु ु ं सवब्ियों इत्यावद हमारी रोिमराभ की विदगी से िड़े हए ह ैं । बागिानी का अध्ययन ्रारत िसै े कवष ृ ु ं प्रधान अथभव्यिस्था म ें बहत महत्ि का ह।ै बागिानी एक अनप्रयोवगत

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व... id: **81**

विज्ञान ह ै । बागिानी या उद्यान ु विज्ञान के प्रकार में फल विज्ञान, पष्प विज्ञान, सब्िी विज्ञान, फल सब्िी पररररक्षिके अलािा बागिानी ु वचवकत्सा ्री शावमल ह ै । अत : यह विषय आकषकभ व्यिसाय अिसरों को प्रदान करती ह

ै । इस क्षेत्र में न के िल ज्ञान या आसपास के सौंदयीकरि बवलक सयत्र प्रचार और खते ी, फसल उत्पादन, वमट्टी की ं ं तैयारी, प्लाट ब्रीवडग और िने ेवटक इिीवनयररग, सयत्र िैि रसायन और प्लाट वफवियोलॉिी के साथ ्री ं ं ं ं ं ं ं ं सबवधत ह।ै बागिानी लगर्ग वकसी

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom... + 2 resources! id: **82**

ोरी क्षेत्र म ें इच्छक व्यवक्त के वलए कै ररयर के अिसरों के साथ एक ु ं ं बहत ही विविध क्षेत्र ह।ै नौकरी पीएच.डी. के साथ उन लोगों के वलए बागिानी म ें लगर्ग हर वकसी के वलए मौिद ह ै । ू 3.4.2 आवतथ्य के समावेशन की साथतकता: आवतथ्य अंग्रेज़ी के शब्द hospitality, अथाभत आवतथ्य, का उद्गम लैवटन शब्द hospes से हआ ह;ै तथा ं hospes की उत्पवत्त hostis से हई ह,ै विसका मल अथभ ह,ै शवक्त होना. शाविब्दक रूप से

Quotes detected: **0%** id: **83**

"मेि बान"

का ू अथभ

Quotes detected: **0.01%** id: **84**

"अिनवबयों का स्िामी"

होता ह।ै अत: आवतथ्य का तात्पयभ अिनबी को मेि बान के उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 27 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं बराबर/समतलय रखना, उसकी दखे र्ाल करना तथा उसे सरवक्षत महसस कराना होता ह,ै तथा उसकी ु ु ू मेि बानी के अत म ें उसे अगले पड़ाि का मागदभ शनभ प्रदान करना होता ह।ै र्ारत ससार की सबसे परानी ु ं ं सभ्यताओं म ें से एक ह,ै तथा अवतवथयों के ईश्वर के समतलय मानने की इसकी प्राचीन सस्कवत ह ै ृ ु ं ं

Quotes detected: **0.01%** id: **85**

"अवतवथ दिे ो िर्"

के दशनभ शास्त्र म ें विश्वास रखते ह ैं । आवतथ्य आचार शास्त्र अनप्रयक्त आचार शास्त्र ु ु की एक शाखा ह।ै व्यिहार में, यह अनप्रयक्त आचार शास्त्र की अन्य शाखाओ के सबधों को वमलाता ह,ै ु ु ं ं ं िसै े वक व्यापार आचार शास्त्र, पयाभिरणीय आचार शास्त्र, व्यिसावयक आचार शास्त्र, एिं अन्य। चँकि ू ं आवतथ्य एिं पयभटन सवममवलत रूप से विश्व म ें सबसे बड़े सेिा उद्योगों का सिन करता ह,ै अतः आवतथ्य ृ ं एिं पयभटन से िड़े व्यवक्तयों के वलये अच्छे और कायों की बहत सिर्ािनायें ह।ैं ु ं ं अभ्यास प्रश्न 6. 3H की वशक्षा अथाभत __________, __________और__________ ृ 7. __________ने कहा था वकसी र्ी राष्ट्रीय योिना की पहली शतभ सबको रोिगार दने ा ह ै । 8. लैवटन शब्द __________का अथभ उद्यान ह ै । 3.5 सारांश एक शवै क्षक अनशासन अथिा

Plagiarism detected: **0.08%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 6 resources! id: **86**

क्षेत्र ज्ञान की एक शाखा के रूप म ें पररर्ावषत वकया िाता ह ै विसमे ु विशेषज्ञता, िनमानस,प्रोिक्े ट,समदाय चनौवतयाँ अध्ययन, पररक्षि और शोध का क्षेत्र होता ह ै िो घवनष्ठ ु ु रूप से वकसी विश्वविद्यालय के वि र्ाग से िड़ा होता ह ै िस ै े नामतः िाविज्ञावनक अनशासन म ें र्ौवतक ु ु विज्ञान, गवित, और रसायन विज्ञान आवद । शवै क्षक सस्थानों ने मल रूप से

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.hindwi.org/poets/sarahpa/profile id: **87**

विद्वानों द्वारा सवित ज्ञान को ृ ू ं तथा ज्ञान के विस्तारीकरि को सग्रह/सचीबि करने के वलए अनशासन शब्द का प्रयोग वकया। उन्नीसी ू ु ं सताब्दी के दौरान

िमनभ विश्वविद्यालयों म ें अनशासनात्मक पद का उद्भि हआ । ु अवधकाश शक्षै विक विषयों की उत्पवत्त की िड़ें उन्नीसी शताब्दी कके विश्वविद्यालयों से िडी ु ं ह ैं िब परपरागत पाठयिम अशास्त्रीय र्ाषा और सावहत्य के साथ परक थे विसम ें अथभशास्त्र, ृ ू ं रािनीवतशास्त्र, समािशास्त्र, लोक प्रशासन, िसै े सामाविक

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व… + 2 resources! id: **88**

विज्ञान, प्राकवतक विज्ञान र्ौवतक विज्ञान, ृ रसायन विज्ञान,िीि विज्ञान तथा तकनीकी विषयों िीवनयररग आवद। ं ं 20 शताब्दी म ें वशक्षाशास्त्र तथा मनोविज्ञान

िसै े नए शैक्षविक विषयों का प्रादर्ाभि हआ । ु 1970 और 1980 के दशक म ें नये शवै क्षक विषयों का विष्फोट हआ िसै े िनसचार, मवहला अध्ययन, ं िनसँख्या अध्ययन, पयाभिरि अध्ययन आवद विषयों की उत्पवत्त हई। कई विषयों की उत्पवत्त व्यिसावयक दृवष्टकोि से हई विसम ें प्रमखतः नवसिंग, होटल मनै िमेंट , हावटभकलचर आवद हई ।कई अन्तः विषयों की ु उत्पवत्त हई विसम े िैिज्ञान, िीि रसायन, कमपटर साइस, बायोटेक्नोलॉिी आवद विषयों को व्यापक ू ू ं मान्यता प्राप्त हई । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 28 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं बीसिीं शताब्दी तक पहचँ ने के पश्चात इन पदनामों को धीरे धीरे अन्य दशे ों म ें अपनाया गया और सि भ ृ स्िीकत विषय के रूप म ें स्थावपत हो गए । हालावक वर्न्न वर्न्न दशे ों म ें इन्ह ें एक ही नाम से िाना िाए ये ृ ं िरूरी नहीं होता ह।ै बीसिी शताब्दी म ें शावमल विषयों म ें विज्ञान म ें र्ौवतक विज्ञान, रसायन विज्ञान, िीि विज्ञान, िैिज्ञान, खगोल विज्ञान तथा सामाविक विज्ञानों म ें अथभशास्त्र, रािनीवतशास्त्र, समािशास्त्र, और ू मनोविज्ञान थे। बीसिीं शताब्दी से पि भ वववर्न्न अनशासन प्रायः व्यापक और सामान्य थी िो उस समय ू ु विज्ञान म ें कम रूवच के करि थी।शैक्षविक व्यिस्था के बाहर एक व्यिसाय

Plagiarism detected: **0.07%** https://hi.wikipedia.org/wiki/के_एम_करिअप्पा + 2 resources! id: **89**

के रूप म ें विज्ञान के वलए कछ अिसर मिौद थे। उच्च वशक्षा ने िैज्ञ ावनक िाच के वलए सस्थागत सरचना प्रदान की साथ ही साथ ु ू ं ं ं आवथभक सहायता ्री प्रदान की विसके फलस्िरूप िैज्ञ ावनक ज्ञान क

ी मात्र म ें बहत तीव्र िवि हई और ृ अध्ययनकताभओ द्वारा िैज्ञ ावनक गवतविवधयों के सक्ष्म ्रागों पर ध्यान के वन्ित वकया िाने लगा अतः इस ू ं करि िैज्ञ ावनक विशषे ज्ञता का दौर चला ।विस प्रकार इन विशषे ज्ञताओ का विकास हआ, विश्वविद्यालयों ं म ें आधवनक िैज्ञ ावनक विषयों म ें ्री सधार हआ । अततः वशक्षा की पहचान वकये गए विषयों विशेष ु ु ं विषयों तथा विवशष्ट रुवचओ के कें ि बन गए। ं इस ्रीषि प्रवतयोवगता की दवनया म ें प्रारमर् म ें ही िीविका समबन्धी सही चनि अत्यवधक ु ु महत्िपि भ ह।ै इसीवलए एक ऐसी प्रविया की आिश्यकता ह,ै िो वकसी व्यवक्त को विवर्न्न िीिन िवत्तयों ृ ू से उसके वशक्षा काल म ें ही अिगत कराए। यवद वशक्षा ग्रहि करने के समय ही उसकी पाठयचयाभ म ें ु विविध व्यिासावयक विषयों का समिेश ही िाए तब विद्याथोयों को वशक्षा ग्रहि करते समय ही अपनी रुवचयों क्षमताओ और मनोिवतयों का उसे और उसकी वशक्षा से िड़े स्री वहतकारको को सहायता वमल ृ ु ं िाएगी ।तथा बेरोिगारों की सख्या म ें ्री कमी आएगी तथा इस पहल से उसके अथोपािनभ की क्षमता ं बढ़ती ह।ै पाठयचयाभ म ें काम से समबवधत विषयों के समािशे न से विवर्न्न वशलप ए कला–कौशल का ृ ं ं अभ्यास ्री हो िाता ह ै और व्यसाय के अिसरों से ्री िो प्रारमर् से ही पररवचत हो िाता ह।ैं इन आधारों पर मनष्य नौकरी अथिा स्िािलमबी उपािनभ म ें अवधक सफल होता ह।ै ऐसे–ऐसे अनेक लाभों को ध्यान ु म ें रखते हए वशक्षा म ें विविध व्यिासावयक कायभिमों का समािशे वकया गया । महात्मा गाँधी के वशक्षा ऐसी होनी चावहए िो की रोिगार परक हो । उनका मानना था वक ्रारत म ें बच्चों को 3H की वशक्षा अथाभत head hand heart की वशक्षा दी िाए । गाधीं के अनसार वशक्षा ऐसी हो िो आवथभक ृ ु ं आिश्यकताओ की पवतभ कर सके बालक आत्मवनर्रभ बन सके तथा बेरोिगारी से मक्त हो।चने हए वशलप ू ु ु ं की वशक्षा दके र अच्छा वशलपी बनाकर स्िािलमबी बनाया िाए। बच्चों को प्रारमर् से ही शारीररक श्रम को महत्ि बताया िाये तावक सीख े हए वशलप के द्वारा िीविकोपािनभ कर सके । वशक्षा बालकों के िीिन, घर, ग्राम तथा ग्रामीि उद्योगों, हस्तवशलपों और व्यिसाय घवनष्ट रूप से सबवधत हों।बच्चों द्वारा बनाई ं ं गई िस्तए विनका प्रयोग कर सके ए उनको बेचकर ।चवक बवनयादी वशक्षा राष्ट्रीय सभ्यता, सस्कवत के ृ ु ू ु ं ं ं ं का प्रचलन वकया गया ह।ै मवस्तष्कीय

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **90**

विकास की दृवष्ट से—अथोपािनभ िसैी ी आिश्यकता परी करने की ू दृवष्ट से –अवत आिश्यक वशक्षा का विकास

होना ही चावहए—उससे हर व्यवक्त को लाभावन्ित होना ही चावहए। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 29 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं बागिानी विज्ञान फल, सवब्ियों, फल, मसाले, सिािटी पौध,े िक्षारोपि फसलों, कद फसलों, ृ ू ं औषधीय और सगवधत पौधों की खते ी के साथ िड़ा हआ ह ै । यह एक कला और विज्ञान ह।ै पौधे ,फल ु ु ं और सवब्ियों इत्यावद हमारी रोिमराभ की विदगी से िड़े हए ह ैं । बागिानी का अध्ययन ्रारत िसैे कवष ृ ु ं प्रधान अथभव्यिस्था म ें बहत महत्ि का ह।ै बागिानी एक अनप्रयोवगत

Plagiarism detected: **0.11%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व... + 2 resources! id: **91**

विज्ञान ह ै । बागिानी या उद्यान ु विज्ञान के प्रकार में फल विज्ञान, पष्प विज्ञान, सब्िी विज्ञान, फल सब्िी पररररक्षिके अलािा बागिानी ु वचवकत्सा ्री शावमल ह ै । अत : यह विषय आकषकभ व्यिसाय अिसरों को प्रदान करती ह ै ।: आवतथ्य का तात्पयभ अिनबी को मेि बान के बराबर/समतलय रखना, उसकी दखे ्राल करना तथा उसे सरवक्षत ु ु महसस कराना होता ह,

ै तथा उसकी मेि बानी के अत म ें उसे अगले पड़ाि का मागदभ शनभ प्रदान करना होता ू ं ह।ै ्रारत ससार की सबसे परानी सभ्यताओ म ें से एक ह,ै तथा अवतवथयों के ईश्वर के समतलय मानने की ु ु ं ं इसकी प्राचीन सस्कवत ह ै

Quotes detected: **0.01%** id: **92**

"अवतवथ देि ो िर्"

के दशनभ शास्त्र म ें विश्वास रखते ह ैं । आवतथ्य आचार शास्त्र ृ ं अनप्रयक्त आचार शास्त्र की एक शाखा ह।ै ु ु 3.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. Discipulus 2. अकादवमक अनशासन की विशषे ताए वनमनवलवखत ह ैं ु ं a. ज्ञान का विशेषीकत क्षेत्र ृ b. स्िय की विवशष्ट अिधारियें ए वसात ं ं ं c. विवशष्ट शब्दािली d. शोध के विवशष्ट उदश्े य e. वनवश्चत शोध-प्रविवध f. वनवश्चत विषय-िस्त पर व्यिसावयक सगठनों से चचा भ ु ं 3. सर विवलयम िोन्स 4. ्रौवतक विज्ञान और िीि विज्ञान। 5. वकसी ्री विषय को अनशावसत बनाने के वलए उसम ें वनमनवलवखत विशेषताए ँ होनी चावहए :- ु a. प्रसग ं b. विषय िस्त ु c. पाठयिम ु d. प्रकरि e. मद्द े ु f. मल प्रश्न ू g. सकाय ं h. अनसन्धान कें ि ु i. शोध पवस्तका ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 30 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं j. उत्प्रेररात्मक उद्दश्े य 6. head hand and heart 7. आचायभ विनोबा ्रािे 8. Hortus 3.7 सदं र् भ ग्रन्थ सची ू 1. वबहारी, लाला रमन वशक्षा के दाशवभ नक और समािशास्त्रीय वसात, रस्तोगी पवब्लके शन, मरे ठ। ं 2. पचौरी, वगरीश, उदीयमान ्रारतीय समाि म ें वशक्षक, लायल बक वडपो, मरे ठ। ु 3. पाण्डे, रामशकल, वशक्षा के दाशवभ नक ए समािशास्त्रीय पष्ठवर्म, विनोद पस्तक मवन्दर। ृ ू ु ं 4. National

Plagiarism detected: **0.05%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge... + 5 resources! id: **93**

Education Commission. (1964-66). Ministry of Education, Government of India, New Delhi 5. National Policy on Education. (1986 & 92). Ministry of Human Resource Development Government of India, New Delhi.

3.8 वनबधात्मक प्रश्न ं 1. विवर्न्न अध्ययन क्षेत्रों के उद्भि का अथभ बताईए ? 2. अध्ययन क्षेत्रों के उद्भि का महत्ि अपने शब्दों म ें व्यक्त कीविए। 3. ितभमान समय म ें कल ज्ञान पररदृश्य म ें विवर्न्न विषयों के स्थान की व्याख्या कीविए। ु 4. विद्यालयी पाठयचयाभ म ें काम से सबवधत विषयों की साथभकता की वििेचे ना कीविए। ् ं ं 5. बागिानी और आवतथ्य विषय के समािेश न की साथभकता का विश्लेषि कीविए। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 31 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं इकाई 4- विविन्न विषयों का विद्यालयी पाठ्यचया में िूवमका और स्थान Role and Place of Various Subjects in the School Curriculum 4.1 प्रस्तािना 4.2 उद्दश्े य 4.3 पाठयचयाभ में विवर्न्न विषय ् 4.3.1 ्रािा 4.3.2 गवित 4.3.3 विज्ञान 4.3.4 सामाविक विज्ञान 4.3.5 कला 4.3.6 कमप्यटर विज्ञान ू 4.3.7 शारीररक एि स्िास्थ्य सबधी वशक्षा ं ं ं 4.1 प्रस्तावना विद्यालयी स्तर पर कई विषयों का अध्यापन वकया िाता ह ै । वकसी ्री विषय को पाठ म ें शावमल करने के पीछे एक व्यापक दृवष्ट और सकलप होता ह ै । वकसी ्री पाठयचयाभ वनमाभि के पीछे िो उद्दश्े य होते ह ैं उनम ें ् ं यह वनधाभररत वकया िाता ह ै वक विद्याथी को इस विषय के अतगतभ क्या सीखना ह,ै वकन वियाओ के ं ं माध्यम से सीखना ह,ै और कौन से अनि्र् प्राप्त करने ह ें । विद्यावथभयों से उस कक्षा के पश्चात या उस स्तर ् ु के बाद विस व्यिहार पररितभन की आशा की िाती ह ै उससे समबवधत पाठों को पाठयचयाभ म ें िगह दी ् ं िाती ह ै । इसम ें से कछ को पाठय-पस्तकों म ें सवममवलत वकया िाता ह ै विसे वशक्षि के माध्यम से ् ु ु समपावदत वकया िाता ह ै और कछ को पाठयसहगामी वियाओ के माध्यम से वदए िाने का प्रयास वकया ् ु ं िाता ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 32 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 4.2 उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के अध्ययन के पश्चात आप - 1. ्राषा का विद्यालयी पाठयचयाभ म ें र्वमका

Plagiarism detected: **0.08%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व… + 3 resources! id: **94**

और स्थान का िििभन कर सकें ग।े ् ू 2. गवित की पाठयचयाभ म ें र्वमका को स्पष्ट कर सकें ग े । ् ू 3. विज्ञान विषयों विद्यालयी पाठयचयाभ म ें र्वमका और स्थान की वििेचे ना कर सकें ग े । ् ू 4. सामाविक विज्ञान

का विद्यावथभयों के वलए उपयोवगता को विवेि चत कर सकें ग े । 5. कला और अन्य रचनात्मक विषयों म ें का विद्यावथभयों के सिािंगीि विकास म ें र्वमका का ू विश्लेषि कर सकें ग।े 6. शारीररक वशक्षा और शावत वशक्षा िसै े विषयों की पाठयचयाभ म ें उपयोवगता का िििभन कर सकें गे। ् ं 7. विवर्न्न विषयों का पाठयचयाभ म ें र्वमका और महत्ि को स्पष्ट कर सकें ग े । ् ू 4.3 पाठ्यचया म वववर्न्न ववषय ें पाठयचयाभ कै सी होना चावहए के उत्तर म ें यह कहा िा सकता ह ै वक िो बालक के अन्तवनभवहत योनयताओ ् ं का विकास म े सहायता करने के साथ ही साथ उसके विकास का मलयाकन ्री कर सके । पाठयचयाभ के ् ू ं समबन्ध म ें सैलर और अलेकिडें र का कहना ह ै वक विद्यालयी पाठयचयाभ म ें विद्यालय का समपि भ प्रयास ् ू होता ह ै विसके द्वारा विद्यालय और विद्यालय के बाहर की पररवस्थवतयों म ें िांवछत उपलवब्ध को प्रदवशतभ ं करना सि्र् हो सके । ं राष्ट्रीय पाठयचयाभ की रुपरेखा 2005 िो अब तक्री पाठयचयाभ विकास करने की आधारर्त ् ् ू दृस्तिो समझी िाती ह ै उसम ें प्रारर् में ही सार सक्षेप म ें ही रविन्द्रनाथ टैगोर के वनबध "सभ्यता और ं ं ं ं प्रगवत को इस बात के वलए उवललवखत वकया गया ह ै सिनात्मक एि उदार आनद बचपन की किी ह ै ृ ु ं ं ं और नासमझ ियस्क ससार द्वारा उनकी विकवत का खतरा ह.ै पाठयचयाभ का विकास करते समय इस बात ृ ् ं का ध्यान रखना अत्यत आिश्यक ह ै वक पाठयचयाभ इस

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **95**

प्रकार की हो िो बच्चों म ें सिन शवक्तयों का ृ ् ं विकास करे साथ ही साथ इस विकास क

े वलए िह बोवझल न हो िाए बवलक रोचकता वलए हए हो । राष्ट्रीय पाठयचयाभ की रुपरेखा 2005 के अनसार विद्यालयी स्तर पर विवर्न्न विषयों को पाठयचयाभ म ें ् ् ु स्थान इसी आधार पर वदया गया ह ै । वचत्र सख्या-1 ं पाठयचयाभ म ें समावहत विवर्न्न विषय ् उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 33 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं ्राषा गवित सामाविक विज्ञान विज्ञान पाठयचयाभ ् शारीरर कला ि (पाठय, पाठयसहगामी) ् ् क वशक्षा सगीत ं नैवतक कप्यटर ू ं अन्य वशक्षा वशक्षा वकसी ्री पाठयचयाभ का लक्ष्य यही होता ह ै वक स्री बच्चों को इसप्रकार की शैववक्षक अिसर प्रदान वकया ् िाए वक िह उनकी विवशष्टता की पहचान करे,उनके सामथ्र्य का विकास करे और उनकी प्रवसवि को सवनवश्चत करे । एक वशक्षाथी के रूप म ें बालक आर विविध वशक्षि प्रविवधयों का प्रयोग पाठयचयाभ का ् ु अवनिायभ विशषे गि ह ै । ु पाठयचयाभ इस बात पर ्री बल दते ा ह ै वक विन बच्चों की शवै क्षक आिश्यकताए विवशष्ट ह ैं उन ् ं पर अवधक ध्यान वदया िाए और उनके द्वारा वियात्मक साक्षरता एि गवितीय ज्ञान को प्राप्त करने को ं महत्ि दते ा ह ै । यह कक्षा के अवधकाश विद्यावथभयों की शवै क्षक िरूरतों के साथ प्रवत्राशाली बच्चों की ं विशेष आिश्यकताओ की ओर ्री ध्यान दते ा ह ै । ं उपयभक्त वचत्र (वचत्र सख्या-1) से स्पष्ट ह ै वक पाठयचयाभ म ें गवित, ्राषा, सामाविक विषय,विज्ञान, कला, ् ु ं सगीत, इत्यादी ्राषाओ ों का महत्िपि भ स्थान ह.ै विद्यालयी स्तर पर इन विषयों के पाठयचयाभ म ें र्वमका ् ू ू ं और स्थान की चचाभ हम विस्तार से करेंग.े 4.3.1 भाषा पाठयचयाभ म ें सवममवलत विवर्न्न विषयों में ्राषा मख्य स्थान रखती ह.ै यही कारि ह ै वक प्राथवमक ् ु कक्षाओ म ें 3 R अथाभत पढ़ना, वलखना और गवितीय वियाओ (Reading, Writing,Arithmetic) ं ं को विशेष स्थान वदया गया ह.ै परन्त वशक्षा व्यिस्था में यह बात वचतिानक ह ै वक अवधकाश वशक्षक इस ु ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 34 ु शास्त्रों एव ववषयों का

अवबोध CPS 2 ं बात से अिगत तक नहीं वक ०राषा को पाठयचयाभ म ें क्यों रखा िाता ह,ै विवर्न्न कहावनयों,कविताओ ् ं और वनबधों को पाठयचयाभ म ें क्यों स्थान वदया गया ह ै । ०राषा एक ऐसा विषय ह ै िो विद्यालयी पाठयचया भ ् ् ं म ें मख्य रूप से प्राथवमक कक्षाओ म ें सबसे अहम स्थान रखती ह ै क्योंवक यह ०राषा ही ह ै िो वकसी ०री ् ु ं अन्य विषय म ें ज्ञान अिनभ के वलए आधार तैयार करती ह ै । ०राषा िह पहला विषय ह ै विससे सबसे प्रथम कक्षा म ें विद्याथी को पररवचत कराया िाता ह ै । ०राषा मात्र एक विषय ही नहीं बवलक यह िह माध्यम ह ै विसके द्वारा सचनाओ और ि्रानाओ का आदान-प्रदान वकया िाता ह ै । मनष्य के रूप म ें हम अपने ू ु ं ं ििभ ों से इसी प्रकार वर्न्न और श्रेष्ठ ह ैं वक हमारे पास स्िर ग्रवथ ह ै । ू ं ०रारत िैसे दशे म ें िहाँ ०राषायी विविधता इतनी अवधक हो िहा ०राषा को वकस प्रकार स े ं पाठयचयाभ म ें रखा िाए और उसकी र्वमका क्या होनी चावहए यह िहद चचाभ का विषय ह.ै ०रारत में ृ ् ू ् लगर्ग 200 ०राषाए ंँ और 1600 से अवधक बोवलयाँ ह ैं ऐसे म ें पाठयचयाभ म ें ०राषा को सही स्थान दने ा ् चनौतीपि भ ह.ै इस ०राषायी विविधता की चनौती को वब्रवटशकाल म ें ०री समझा गया और यही कारन ह ै वक ु ू ु िड वडस्पैच 1854 म ें ०री तीन ०राषाओ ंँ को पाठयिम म ें स्थान दने े का सझिा वदया गया. 1935 में ् ु ु महात्मा गाँधी ने बेवसक वशक्षा म ें वत्र०राषा सत्र की वसफाररश की. ू स्ितत्रता के पश्चात हम वत्र०राषा सत्र का विद्यालयी वशक्षा म ें महत्िपि भ स्थान को दोहरात े रह े ह.ैं ् ू ू ं राष्ट्रीय वशक्षा नीवत-1986 ने ०री ०रारत के कछ राज्यों म ें वत्र०राषा सत्र की पि भ अिहले ना और कछ राज्यों ु ू ू ु म ें सतोषप्रद तरीके से लाग होता हआ न दखे कर इसे परी तरह से वफर से लाग करने के वलए पनः ू ू ू ु ं प्रस्तावित वकया. समपि भ राष्र म ें तमाम बहसों और विचार विमशभ के बाद के न्िीय वशक्षा सलाहकार ू सवमवत ने राष्ट्रीय पाठयचयाभ की रुपरेखा-2005 को स्िीकत वकया िो कहती ह ै वक वद्व०रावषकता या ृ ् बह०रावषकता से वनवश्चत सज्ञानात्मक लार् होते ह ैं । वत्र०राषा सत्र के वलए कहती ह ै वक यह ०रारत की ू ं ०राषा-वस्थवत की चनौवतयों और अिसरों को सबोवधत करने का प्रयास ह ै । ु ं सामान्य तौर पर पाठयचयाभ म ें विन ०राषाओ ंँ को सवममवलत करते ह ैं उनम ें वहदी ०राषी ् ं राज्यों म ें पहली ०राषा वहदी होती ह,ै दसरी ०राषा सस्कत और तीसरी ०राषा के रूप म ें अतराभष्रीय क्षेत्र में ृ ं ं ं ू पकड़ और उपयोवगता को दखे ते हए अग्रिेी को शावमल वकया िाता ह ै । कछ विद्यालयों म ें वहदी/सस्कत ृ ु ं ं ं की िगह कोई अन्य दशे ी या विदशे ी ०राषा शावमल की िाती ह ै ह ै । उन प्रदशे ों म ें िहाँ मात०राषा वहदी नहीं ृ ं ह ै िहा पहली ०राषा के रूप में िहाँ की मात०राषा, दसरी ०राषा वहदी और तीसरी ०राषा के रूप म ें अग्रिेी ृ ं ं ं ू शावमल की िाती ह ै । परन्त ०रारत के प्रत्येक राज्य म ें इस सत्र का अनसरि नहीं वकया िाता ह ै । ु ू ु राष्ट्रीय पाठयचया भ की रुपरेखा-2005 के अनसार ०राषा वशक्षि म ें मात्र एक ०राषा नहीं शावमल ् ु की िवन चैये बवलक यह बह०रावषक होनी चावहए । प्राथवमक स्तर पर घरेल ०राषा को ही वशक्षि माध्यम ू

Plagiarism detected: **0.08%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 4 resources! id: **96**

के रूप म ें लेना चावहए । गरै वहदी रािों म ें वहदी ०राषा और वहदी बोले िाने िाले राज्यों म ें िह ०राषा पढ़ाई ं ं ं िानी चावहए िो उस क्षेत्र म ें नहीं बोली िाती या वफर आधवनक ०राषा के रूप म

ें सस्कत को शावमल ृ ु ं वकया िा सकता ह ै । उच्च स्तरों पर शास्त्रीय और विदशे ी ०राषाओ ंँ को स्थान वदया िा सकता ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 35 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं अभ्यास प्रश्न 1. पाठयचयाभ विकास करते समय मख्य रूप से वकन बातों का ध्यान रखना चावहए ? ् ु 2. िड वडस्पैच 1854 म ें ०राषा वशक्षा के वलए क्या सझिा वदए गए थे? ु ु 4.3.2 गवणत ०राषा के पश्चात प्राथवमक स्तर पर विस विषय को महत्ि वदया िाता ह ै िह गवि

Plagiarism detected: **0.09%** https://navbharattimes.indiatimes.com/astro/gr… + 2 resources! id: **97**

त ह ै । प्रारवर्क स्तर पर ् ं गवित म ें मात्र अकगवित का ज्ञान बच्चों को वदया िाता ह ै पर बढ़ते स्तर के साथ (कक्षा 4 या 5) उसम ें ं बीिगवित और वफर वत्रकोिवमवत को सवममवलत वकया िाता ह ै । प्रारवर्क स्तर पर बच्चों को गवित का ं ज्ञान

दने े का मख्य उद्दश्े य उन्ह ें अपने दवै नक िीिन म ें गवितीय वियाओ को कर सकने की क्षमता प्रदान ु ं करने के साथ उच्च स्तर के वलए उन्ह ें एक आधार प्रदान करना और उनके मवस्तष्क को तैयार करना ०री ह।ै गवित से वमला ज्ञान बच्चों को तावकभ क तरीके से सोचने, समझने , समस्या समाधान करने, वकसी तथ्य को गहराई से िाचने और अमतभ अिधारिाओ को समझने की योनयता विकवसत करता ह ै । िसै ा वक हम ू ं ं िानते ह ैं हमारे वदनानवदन का कायभ वबना गवितीय वियाओ के नहीं वकया िा सकता अतः कक्षाओ में ु ं ं गवित को सवममवलत करना आिश्यक ह ै । गवित की प्रकवत या उपयोवगता को दखे ते हए ही गवित की ृ कक्षा को समय-साररिी म ें पहले घटे म ें रखने का सझिा वदया िाता ह ै । ु ं हमारे विद्यालयों म ें गवित को मात्र एक कवठन और उबाऊ विषय बना कर रख वदया गया ह ै । दखे ा गया ह ै वक विद्याथी इस विषय से र्य०री

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.myupchar.com/baby-names/boy-na… + 2 resources! id: **98**

त होते ह ैं और परीक्षाओ म ें अवधकाश विद्याथी गवित म ें ही ं ं असफल होते ह ैं । इसक

े साथ ही समाि म ें एक पिाभग्रह ह ै वक वलग के आधार पर गवितीय कशलताओ में ू ु ं ं अतर पाया िाता ह ै । परुष विद्याथी मवहला विद्यावथभयों की तलना म ें गवित म ें बेहतर होते ह ैं । कई बार ु ु ं वशक्षक ०री इसी पिाभग्रह से ग्रवसत होते ह ैं । विद्यावथभयों के मन म ें गवित के प्रवत र्य के पीछे कई कारि ह ैं । ू इसम ें से पहला कारि पिाभग्रह और लोगों की धरना ही ह ै विसे विद्याथी बचपन से सनते आते ह ैं । दसरा ू ु ू कारि गवित म ें रूवच का अ०िा ह ै । वशक्षक अपनी कक्षा को रुवचकर नहीं बना पात े और उनका ज्ञान दने े का तरीका गवितीय समस्याओ को मात्र श्यामपट्ट पर हल कर दने ा ह ै । दसरा यह वक

पाठयचयाभ म ें गवित ृ ं ू को बहत बोवझल तरीके से रखा िाता ह ै और कई बार विद्याथी अपने दवै नक िीिन की समस्याओ से इन ं समस्याओ को समबवधत नहीं कर पात े ह ैं विससे अवधगम का स्थानातरि नहीं हो पाता ह ै और हर ं ं ं अगली कक्षा के साथ विद्याथी वपछली कक्षा म ें पढ़ी चीिीं को लेते चले िाते ह ैं । एक और समस्या ू विनका सामना विद्यावथभयों और वशक्षकों को करना पड़ता ह ै वक पाठयपस्तकों म ें दी अवधकतर समस्याए ृ ु ं चनौवतपि भ नहीं ह ैं और उनमें दोहराि ह ै विससे प्रवत◌्राशाली छात्र वनराश होते ह ैं । इसके अवतररक्त ु वशक्षकों का कक्षा म ें पढ़ने का तरीका, बोवझल तरीके से अध्यापन, कई बार वशक्षकों के अन्दर आत्मविश्वास की कमी, कक्षा लेने से पि भ म ें की गयी तैयारी का अ◌्रा इत्यावद ◌्री छात्रों म ें गवित के ू प्रवत िह रूवच उत्पन्न नहीं करती िो उसे करना चावहए । एक समस्या कै लकलेटर या कप्यटर का ु ू ं अत्यवधक प्रयोग ◌्री ह ै । पहले विद्याथी िहाँ अवधकतर गिनायें स◌्िय करते थे और यह वनरतर अभ्यास ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 36 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं उनकी कौशल शवक्त के विकास म ें योगदान करता था िही आसन गवितीय वियाओ के वलए ◌्री ◌ीँ ं कैलकलेटर या कप्यटर पर वनर्रभ ता उन्ह ें आत्मवनर्रभ नहीं बनने द े रही ह ै । ु ू ं प्राथवमक स्तर पर गवित वशक्षि के माध्यम से गवितीय कौशल

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **99**

के विकास के साथ-साथ इसका प्रयास करना चावहए वक विद्यावथभयों म ें मतभ ज्ञान को अमतभ तक ले िाने वक योनयता का विकास

हो सके । ू ू और इस हते वशक्षक का यह प्रयास होना चावहए वक िह विद्यावथभयों म ें गवित के प्रवत रूवच और रुझान ु उत्पन्न करते हए लक्ष्

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 5 resources! id: **100**

यों को प्राप्त करने का प्रयास करे । उच्च प्राथवमक स्तर के विद्यावथभयों के वलए वशक्षकों का प्रयास उनके कक्षा म ें सीख े गए ज्ञान का सामान्यीकरि, प्राप्त

सचनाओ का विस्ताररत ू ं उपयोग, कलपना कौशलों का विस्तार तथा वद्वआयामी और वत्रआयामी समझ को बढ़ाने हते होना चावहए। ु माध्यवमक कक्षाओ म ें िब गवित एक अनशासन का रूप लेने लगता ह,ै इस स्तर पर विद्याथी ु ं सामान्यीकरि, अनमान लगाना और वनयमों तथा तावकभ कता के आधार पर वकसी ◌्री तथ्य को वसि ु करने की योनयता का विकास वकया िा सकता ह ै । इसी तरह उच्चतर माध्यवमक स्तर पर िहाँ गवित पिभ ू रूप से एक अनशासन के रूप म ें पररिवतभत हो िाता ह ै िहाँ विद्यावथभयों को और उच्च स्तर के वलए तैयार ु करने के साथ विद्यावथभयों म ें सक्षम अतदृवभ ष्ट विकवसत की िानी िरुरी ह ै वक ि े परस्पर विरोधी मागो के ू ं ं बीच सािधानी से सही विकलप का चनि कर सकें । ु 4.3.3 ववज्ञान मानि अपने इस स्◌्िरुप म ें आने के बाद से ही खोिीं और अन्◌्िेषि िक रहा ह ै और मनष्य के इसी स्◌्ि◌्रा ने ु

Plagiarism detected: **0.23%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 2 resources! id: **101**

विज्ञान को िन्म वदया । विज्ञान हमारे िीिन के प्रत्येक वहस्से म ें ह.ै विज्ञान मात्र उतना ही नहीं ह ै वितना हमारे पाठयपस्तकों म ें वदया गया ह ै बवलक हमारे सोचने, समझने, दखे ने, विचार करने, और तदपश्चात ृ ु ृ वकसी वनियभ पर पहचँ ने स◌्री म ें सवममवलत ह.ै विज्ञान को परर◌्रावषत करते हए विज्ञान की यही परर◌्राषा दी िाती ह ै वक िह स◌्री ज्ञान िो िमबि, व्यिवस्थत एि कायभ-कारि समबन्धों से समबवधत हो िह ं ं विज्ञान ह ै । विज्ञान को परर◌्रावषत करते हए राष्रीय पाठयचयाभ की रुपरेखा-2005 ने कहा ह ै वक विज्ञान ृ गत्यात्मक और वनरतर पररिवधभत ज्ञान का र्डार ह ै विसमें अन◌्र् के नए-नए क्षेत्रों को शावमल वकया ु ं िाता ह ै । एक प्रगवतशील और विष्योन्मखी समाि म ें विज्ञान

सचमच मवक्तदायी र्वमका वन◌्रा सकता ु ु ु ू ह,ै इसके सहयोग से लोगों को गरीबी, अज्ञान और अन्धविश्वास के दष्चि से वनकाला िा सकता ह ै । ु (राष्रीय पाठयचयाभ की रुपरेखा-2005) । ृ विज्ञान की सबसे बड़ी विशेषता यह ह ै वक यह वकसी ◌्री ज्ञान को शाश्वत या सािभ ौवमक नहीं मानता. इसके अनसार प्रत्येक वदन म ें हो रह े खोिों और अन◌्िेषि िों के द्वारा वनत नए ज्ञान की रचना हो रही ु ह ै और इसी कारि से वकसी ◌्री ज्ञान को शाश्वत रूप म ें स्◌्िीकार नहीं वकया िा सकता. उदहारिस्◌्िरुप- कछ िष भ पि भ तक प्लटो सौर मडल के नौ ग्रहों म ें निाँ ग्रह था परन्त बाद म ें खगोलशावस्त्रयों ने उसे ग्रह नहीं ु ू ू ु ं माना और ितभमान समय म ें सौर मडल म ें 8 ग्रह ह ै पर इनकी सख्या म ें ◌्री पररितभन सि◌्र् ह ै । ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 37 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं दखे ा गया ह ै वक विज्ञान मात्र तकनीकी एि प्रगवत से नहीं िड़ा ह ै बवलक यह सामाविक विकास ु ं एि सामाविक प्रगवत से ◌्री समबवधत ह.ै िो समाि िज्ञै ावनक रूप से वितना ही विकवसत होता ह ै ं ं सामाविक लचीलापन, खलापन और पररितभन को स्◌्िीकत कर सकने की ि◌्राना उतनी ही अवधक होती ृ ु ह.ै अतः कक्षा म ें विज्ञान पढ़ाने का उद्दश्◌े य मात्र िज्ञै ावनक ज्ञान ही नहीं बवलक सामावि

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **102**

क विकास ◌्री ह,ै क्योंवक यह िज्ञै ावनक तरीके से सोचने समझने की क्षमता का विकास

करता ह ै । पर यह हमारे दशे का द◌्राभनय ही ह ै वक हम

Plagiarism detected: **0.09%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 2 resources! id: **103**

विज्ञान िसे विषय को बोवझल बनाते हुए इसे रचनात्मकता तथा अन्िषिों से कोसों ु दर रखते ह ैं । हम विज्ञान विषयों का प्रयोग समतामलक समिा की स्थापना हते कर सकते ह ैं और विवर्न्न ू ु ू क्षेत्रो ने व्याप्त अतरों को कम करने के वलए कर सकते ह ैं । विज्ञान

अध्ययन-अध्यापन दक्षता तो ला रहा ह ै ं पर इसम ें कछ गिात्मक पररितभन लाने की आिश्यकता ह ै विससे यह अपने शवै क्षक लक्ष्यों की प्रावप्त कर ु ु सके । प्राथवमक स्तर पर विज्ञान को ाषा और गवित से समबवधत कर पढ़ाना चावहए । इस स्तर पर ं विज्ञान के माध्यम से बच्चे की विज्ञास प्रवत और अन्िषिनात्मक शवक्त का विकास करें । विद्यावथभयों ृ ु को उत्सक रूप से अिलोकन करने, नयी चीिों को खोिने, नयी पररवस्थवतयों म ें सामिस्य करने की ु ं योनयता विकवसत करनी चावहए । विज्ञान के महत्ि और िीिन के हर क्षेत्र म ें उपयोग की महत्ता को दखे ते हुए साथ ही आगामी कक्षाओ म ें इसके महत्ि को समझते हुए यहीँ इस स्तर पर एक उद्दश्े य होना चावहए ं िरी विज्ञान वशक्षा के वलए उन्ह ें आधार प्रदान वकया िाए । उच्च प्राथवमक स्तर विद्यावथभयों को प्रयोगों और गवतविवधयों के माध्यम से सीखाने का प्रयास करना चावहए । इसके वलए सामवहक कायभ, ू सहयोगात्मक रूप से कायभ करना, विचार-विमश,भ योिनायें बनाना और वनरतर तथा वनयवमत मलयाकन ू ं ं अपनायी िानी चावहए । माध्यवमक स्तर पर विज्ञान को सहसमबवन्धत कर पढ़ाना चावहए । इस स्तर पर ौवतक विज्ञान, रसायन विज्ञान और िीि विज्ञान; तीनों अलग हो िाते ह ैं पर कई सकलपनाए ँ अतसिंबवधत होती ह ैं । ं ं ं इनको सहसमबवन्धत कर अध्यापन करने से विद्यावथभयों को सकलपना का सही ज्ञान वमलेगा । यह विया ं उच्च प्राथवमक स्तर और उच्चतर माध्यवमक स्तर पर अपनायी िा सकती ह ै । तकनीकी के साथ शरीर और पयाभिरि से िडे़ मद्दों को शावमल करना चावहए और गवतविवधयों और विश्लेष्िात्मक दृवष्टकोि के ु ु साथ पढ़ाया िाना चावहए । उच्चतर माध्यवमक स्तर पर उनके िविष्य के वलए उनकी आकाक्षायें दखे ते ं हुए उस प्रकार से ज्ञान दने ा चावहए । इसके वलए प्रयोगों, समस्या समाधान विवध और विश्लेष्िात्मक नीवत की मदद ली िा सकती ह ै । ढेर सारे सतही ज्ञान के स्थान पर कम विषयों का गहराई से अध्ययन को प्रोत्सावहत वकया िाना चावहए । अभ्यास प्रश्न 3. उच्च प्राथवमक स्तर पर गवित वशक्षा का क्या उद्दश्े य होना चावहए ? उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 38 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 4. प्राथवमक स्तर पर विज्ञान वशक्षि के माध्यम से वकन योनयताओ का विकास विद्यावथभयों म ें करने ं चावहए? 4.3.4 सामावजक ववषय सामाविक विज्ञान के अतगभत विन विषयों को शावमल वकया िाता ह ै उनम ें इवतहास, गोंल और ू ं रािनीवतशास्त्र ह ैं । आग े चलकर इसम ें समािशास्त्र, अथभशास्त्र और मानि विज्ञान को ारी सामाविक विज्ञान म ें शावमल वकया िाता ह ै । यवद विस्तत अथभ म ें दखे ा िाए तो मानि और उसके समाि से िड़ा हर ृ ु एक पहल; िह चाह े प्रत्यक्ष रूप से हो या परोक्ष रूप से, सामावि

Plagiarism detected: **0.15%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… id: **104**

क विज्ञान म ें शावमल वकए िाते ह ैं । ू ं आि के दौर म ें िहाँ विज्ञान का बोलबाला ह ै िहाँ सामाविक विज्ञान िसै े विषयों को हावशये पर रखा िाता ह।ै क्योंवक यह माना िाता ह ै वक विज्ञान विषयों के अध्ययन के पश्चात रोिगार के अिसर ु बढ़ते ह ैं िबवक सामाविक विज्ञान अिसरों को सीवमत कर दते ा ह ै । अतः विद्यावथभयों को सामाविक विज्ञान के माध्यम से ारी प्रचर अिसरों को उपलब्ध कराने का प्रयास करना चावहए । सामाविक विज्ञान ु क

ो पाठयचयाभ म ें सवममवलत करने के पीछे राष्ट्रीयता, .समानता, समता, भ्रातत्ि, विश्व-बधत्ि, अतराभष्ट्रीय ृ ृ ु ं ं सद्भाि िसै े मलयों का विकास करना ह ै । वशक्षकों को यह प्रयास करना चावहए वक ि े विद्यावथभयों में ू सामाविक, सास्कवतक गिों को सामावि

Plagiarism detected: **0.1%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 4 resources! id: **105**

क विज्ञान वशक्षि के माध्यम से बढ़ाए और उनम ें विश्लेष्िात्मक ृ ु ं ं ं दृवष्टकोि को बढ़ािा द े सके । सामाविक विज्ञान को मात्र सचना दने े से समबवधत मान वलया िाता ह ै और िास्ति म ें विद्यालयों ू ं म ें इसका रूप ऐसा ही बना वदया गया ह।ै विद्याथी तथ्यों को मात्र

रटकर उत्तीि भ होने का प्रयास करते ह ैं तो ऐसे म ें आिश्यकता ह ै वक इसे इस रूप म ें विद्यावथभयों के सामने रखा िाए वक यह उनकी सज्ञानात्मक ं विकास म ें मदद कर सके , विद्यावथभयों म ें रचनात्मकता को बढ़ािा द े और उनम ें अतरानशासनात्मक वचतन ु ं ं करने को बढ़ािा द े सके । प्राथवमक स्तर के विद्यावथभयों हते वशक्षक का यह प्रयास होना चावहए वक िह विद्याथी के समक्ष ु सामाविक और प्राकवतक पयाभिरि को ाषा तथा गवित के ाग के रूप म ें रख े । पाठ म ें ऐसी ृ गवतविवधयाँ शावमल करना चावहए विससे िवै िक, सामाविक, सास्कवतक िाितािरि को समझ सकें । ृ ं मलयों के बीिारोपि के वलए प्राथवमक स्तर से ही प्रयास होना चावहए तो इस हते सामाविक विज्ञान के ू ु माध्यम से विद्यावथभयों म ें पयाभिरि के प्रवत प्रेम और सरक्षि की िाना, लैंवगक सिदे नशीलता, समानता, ं ं प्रेम िसै े मलयों को विकवसत करने का प्रयास वकया िाना चावहए । िहाँ प्राथवमक स्तर पर सामाविक ू विषय और वि

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 2 resources! id: **106**

ज्ञान को लेते हुए पयाभिरि विज्ञान के रूप में रखा िाता ह ै िही उच्च प्राथवमक स्तर पर ाँ सामाविक विज्ञान म ें गोंल, इवतहास, रािनीवत विज्ञान और अथभशास्त्र शावमल हो िाता ह ै तो इस

स्तर ृ पर वशक्षकों का यह प्रयास होना चावहए वक ि े प्रातावन्त्रक मलयों, राष्ट्रीयता की ि्ाना और अतराभष्ट्रीय ृ ं समझ िैसे े मलयों का विकास करें । माध्यवमक स्तर पर गोल, इवतहास, अथभशास्त्र, रािनीवतशास्त्र स्ी ृ ृ विषय अलग पढाए िाते ह ैं तो इस स्तर पर इन स्ी विषयों म ें राष्ट्रीय स्तर के विषयों, मद्दों, चनौवतयों को ु ु िोड़े िाने का प्रयास करना चावहए । विद्याथी इस अिस्था म ें मानवसक रूप से पररपक्व होना शरू हो िाते ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 39 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं ह ैं तो वशक्षकों द्वारा उनम े राष्ट्रीय और अतराभष्ट्रीय मद्दों पर व्यापक दृवष्टकोण , विश्व की बेहतर समझ, ु ं पररितभन को समझने का दृवष्टकोण,

Plagiarism detected: **0.04%** https://brainly.in/question/60300033 id: **107**

सकारात्मक आलोचन की क्षमता तथा ्ारतीय सविधान म ें िविभत ं मलयों िैसे े समानता, स्ितत्रता, न्याय, बधत्ि, धमवभ नरपेक्षता इत्यावद का विकास

हो । िह कक्षा म ें प्राप्त ृ ु ं ं ज्ञान का प्रयोग अपने िीिन दवै नक िीिन म ें कर सकें । उच्चतर माध्यवमक स्तर पर गोल, इवतहास, ृ रािनीवत शास्त्र, अथभशास्त्र के साथ समािशास्त्र, और मानि विज्ञान अलग-अलग प्रपत्र के रूप में पाठयचयाभ के अतगतभ शावमल वकए िाते ह ैं । इस स्तर के पश्चात अवधकाँश विद्याथी अपनी ृ ृ ं विश्वविद्यालयी वशक्षा प्रारर् करते ह ैं अतः इस स्तर पर उन्ह ें इन विषयों पर मिबत पकड़ बनानी चावहए ृ ं विससे िह आगामी वशक्षा के वलए मिबत आधारस्तर् द े सकें । ृ ं 4.3.5 कला विद्यालयों म ें कला की वशक्षा अवनिायभ ह ै और यह कला तथा सौन्दयभबोध की वशक्षा कई रूपों म ें दी िाती ह े । शैक्षविक विषय/ससाधन के रूप म ें कला म ें वकन चीिों को सवममवलत वकया िाना चावहए तथा ं इसकी प्रावप्त वकस प्रकार हो सकती ह,ै ये सोचने से पि भ इसका वनधाभरि करना अवधक आिश्यक ह ै वक ृ कला को शक्षै विक विषय/ससाधन के रूप म ें क्यों शावमल वकया िाए । वकसी सशक्त दाशभवनक आधार के ं अ्ाि म ें कला वशक्षि मात्र एक अनौपचाररक कायभिम बन कर रह िाएगा या वफर पाठयिम में ृ सवममवलत होने के कारि इसे नीरस ढग स े वियावन्ित कर वदया िाएगा िैसे ा अवधकाश विद्यालयों में ं ं अब तक होता रहा ह;ै िो कदावप कला वशक्षि का उद्दश्े य नहीं ह ै । पाठयचयाभ म ें कला विषय का होना और समय-सारिी म ें कला समबन्धी विशेष कक्षा होना ृ आिश्यक ह ै । यह ले ही सप्ताह म ें एक कक्षा ही क्यों न हो पर कला की कक्षा अलग होना आिश्यक ह।ै इसके द्वारा विद्याथी कला को समझने, उसको सीखने, इसके अन्िषे ि के साथ सही अथों म ें अपनी ि्ािव्यवक्त और समालोचना करना सीख सकते ह ैं । प्रारवर्क वशक्षा म ें कला वशक्षि को पाठयचयाभ म ें सवममवलत वकए िाने के पीछे का मख्य उद्दश्े य ृ ु ं यह ह ै वक विद्याथी वशक्षा एि िीिन दोनों म ें ही कला की महत्िपि भ र्वमका को समझ सकें । कला वशक्षा ृ ृ ं के वलए समय-समय पर विवर्न्न आयोगों, सवमवतयों ने सझाि वदए ह ैं और उनके प्रवतिदे न म ें कला और ु सौन्दयभबोध की वशक्षा हते अनशसा की गयी ह ै । कला को एक मख्य विषय के रूप म ें शावमल करने के ु ु ु ं साथ विवर्न्न विषयों के साथ िोड़ कर पढ़ाना चावहए । राष्ट्रीय पाठयचयाभ की रुपरेखा-2005 म ें ्ी ृ विवर्न्न विषयों को सहसमबवन्धत कर पढ़ाने पर बल वदया गया ह ै । राष्ट्रीय शवै क्षक अनसन्धान और ु प्रवशक्षि पररषद द्वारा प्रकावशत आधार पत्र 2009; िो प्राथवमक से उच्चतर माध्यवमक स्तर की कक्षाओ ं ृ म ें कला सगीत नत्य और रगमच के वशक्षि से समबवधत ह;ै म ें यह अनशवसत वकया गया ह ै वक

Quotes detected: **0.07%** id: **108**

'कला ृ ु ं ं ं ं ं वशक्षा को स्ी विषयों के साथ िोड़ा िाना चावहए और विवर्न्न अिधारिाओ को पढ़ाने के वलए एक ं माध्यम के रूप म ें इस्तेमाल करना चावहए विशषे कर कक्षाओ I, II एि III में'

। इसके साथ ही इस ं ं आधार पत्र म ें आग े अनशसा की गयी ह ै वक विद्यावथभयों को रचनात्मक कायों म ें सलनन करना चावहए ु ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 40 ु

Plagiarism detected: **0.08%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व… + 4 resources! id: **109**

शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं तावक उनकी सविय सह्ावगता सवनवश्चत हो सके । इसके साथ ही अलग प्रकार की कला के वलए ु अलग-अलग कालाश हों । ं कला तथा सौन्दयभबोध के माध्यम से विद्यावथभयों के अन्दर वशक्षकों को इस प्रकार की योनयता की विकास

करना चावहए वक िह अपने स्थानीय िातािरि से समबवधत सकलपनाओ की पहचान सकें तथा ं ं ं उनका विकास कर सकें । वचत्रकला, मवतभकला, नत्य, गायन, िादन, नाटक, पेंवटग, कठपतली का खले ृ ृ ृ ु ं और इनके िैसे ी कला की अन्य अनेकों विधाए बच्चों की सिनात्मकता और सक्ष्म-गामक कौशलों का ृ ृ ं विकास तथा विवर्न्न मलयों का विकास करती ह ैं । विविध कलाओ के वशक्षि के द्वारा प्रारवर्क कक्षा के ृ ं ं छात्र को सीखने के समस्त क्षेत्र ों म ें ला्ावन्ित होंग े साथ ही साथ वनवश्चत कला के द्वारा वमली सराहना से िह आत्मविश्वास हावसल करते ह ैं साथ ही स्ि-मलयाकन ्ी कर पाते ह ैं और यही कला वशक्षा का उद्दश्े य ृ ं ह ै । अभ्यास प्रश्न 5. सामविक विज्ञान के अतगभत वकन वकन विषयों को शावमल वकया िाता ह?ै ं 6. कला वशक्षा के माध्यम से वशक्षकों को विद्यावथभयों म ें वकन गिों का विकास करना चावहए? ु 4.3.6 कम्प्यटि ववज्ञान ृ ं ितभमान यग तकनीकी और प्रौद्योवगकी का यग ह ै ।और तकनीकी और प्रौद्योवगकी की कलपना वबना ु ु कम्प्यटर के नहीं की िा सकती । समय और समाि की माग के अनसार वशक्षा और वशक्षि सस्थाए पवतभ ृ ु ृ ं ं ं ं करते ह ैं तो इस पवतभ हते विद्यालयों में कम्प्यटर विज्ञान ितभमान समय म ें एक अहम विषय ह ै । यह प्राथवमक ृ ु ृ ं कक्षाओ से ही पाठयचयाभ म ें सवममवलत

वकया ि रहा ह ै विसका उद्दश्े य कप्यटर के क्षेत्र म ें ऐसे पेशि रों को ◌ ◌ ं ं तैयार करना ह ै ि समि की प्रगवत हते कप्यटर का प्रिर्ी उपयोग कर सकें । हालावक इस वदशा में ◌ ◌ ं सबसे बड़ी समस्या हमारे दशे म ें बवनयादी सविधाओ का अिर्ा ह ै । हमारे दशे म ें विसकी िनसँख्या विश्व ◌ ◌ ं म ें दसरे स्थान पर ह,ै यहाँ के प्रत्येक विद्यालय म ें पयाभप्त सख्या म ें कप्यटर को महयै ा कराना एक बहत बड़ी ◌ ◌ ं ं ◌ चनौती ह ै । इसके साथ ही सर्ी विद्यालयों म ें कशल वशक्षकों की र्ी र्ी टेढ़ी खीर ह ै । शहरी और ◌ ◌ ग्रामिी

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 2 resources! id: **110**

क्षेत्रों में पयाभप्त अन्तर र्ी कप्यटर वशक्षा के वलए एक समस्या ह ै तो इस हते वकसी बीच के रास्ते ◌ ◌ ं को तलाश करने की आिश्यता ह ै । हमारे शहरी और ग्रामिी क्षेत्र

ों के विद्यालयों म ें दी िाने िाली वशक्षा म ें पयाभप्त अन्तर र्ी ह ै इस अन्तर को समाप्त करने या कम करने के वलए कप्यटर वशक्षा एक किी के रूप ◌ ◌ ं ं म ें काम कर सकती ह ै । इसके वलए कप्यटर वशक्षा से समबवधत पाठयचयाभ म ें व्यापक पररितभन लाने की ◌ ◌ ं ं आिश्यकता ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 41 ◌ शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 4.3.7 शिारीररक एव स्वास्थ्य सम्बन्धी वशक्षा ं कहा िाता ह ै वक एक स्िस्थ शरीर म ें एक स्िस्थ मवस्तष्क वनिास करता ह.ै यवद कोई व्यवक्त शारीररक रूप से स्िस्थ ह ै तो यह उममीद की िाती ह ै वक िह मानवसक रूप स े र्ी स्िस्थ होगा. स्िास्थ्य व्यवक्त को के िल शारीररक रूप से ही हृष्ट-पष्ट नहीं बनाता बवलक मानवसक और बौविक विकास को र्ी प्रर्ावित ◌ करता ह.ै अतः पाठयचयाभ म ें स्िास्थ्य और शारीररक वशक्षा को रखा िाना महती आिश्यक ह.ै ◌ शारीररक वशक्षा स्िास्थ्य से िड़ी हई ह ै और स्िास्थ्य वशक्षा वकसी के वलए र्ी अत्यन्त ◌ महत्िपि भ ह.ै स्िास्थ्य म ें शारीररक के साथ साथ मानवसक स्िास्थ्य र्ी िड़ा ह ै । और यह के िल शारीररक ◌ ◌ ि मानवसक

Plagiarism detected: **0.05%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 2 resources! id: **111**

विकास के साथ ही नहीं िड़ा ह ै बवलक शवै क्षक, सामाविक, आवथभक विकास को र्ी प्रत्यक्ष ◌ रूप से प्रर्ावित करता ह ै । यह बच्चे को मात्र

शारीररक रूप से हृष्ट-पष्ट दखे ने से ही समबवधत नहीं ह ै ◌ ं बवलक विद्यालय म ें सही समय पर नामाकन, कक्षा म ें उपवस्थवत, कक्षा के अन्य विद्यावथभयों के साथ ं समायोिन, पढने म ें रूवच, कक्षा म ें वनष्पादन, विद्यालय म ें अन्य विद्यावथभयों और वशक्षकों के प्रवत प्रदवशतभ व्यिहार; सर्ी को प्रर्ावित करता ह ै । सवक्षप्त म ें कहा िाए तो यह विद्याथी के समग्र विकास से िड़ा ह ै । ◌ ं विद्यालय म ें शारीररक वशक्षा दने े का इवतहास र्ी पराना ही ह ै । 1940 के दशक म ें विद्यालयों के ◌ वलए विस्तत स्िास्थ्य कायभिम बनाया गया विसके छः घटक थे- स्िास्थ्य सिेा, स्िच्छ स्कल पयाभिरि, ◌ ◌ दोपहर का िोिन, स्िास्थ्य और शारीररक वशक्षा । विद्यालयों म ें सर्ी कक्षाओ में बच्चे के शारीररक विकास और पोषि पर ध्यान वदया िाता ह;ै ं विशेषकर पि भ प्राथवमक और प्राथवमक कक्षाओ के विद्यावथभयों को समवचत िोिन और दखे र्ाल की ◌ ◌ ं िरुरत होती ह ै क्योंवक यह बच्चे के विकास की सबसे अहम अिस्था होती ह ै । दशे में िहाँ एक बड़ी िनसख्या गरीबी रेखा ने नीचे वनिास करती ह ै िहाँ उन पररिारों से िड़े बच्चों को पौवष्टक िोिन उपलब्ध ◌ ं कराना सरकार की विममदे ारी ह ै और यही कारि ह ै वक सरकार के द्वरा पि भ प्राथवमक से लेकर उच्च ◌ प्राथवमक स्तर पर मध्याह्न िोिन योिना प्रारर् की गयी थी । इसका इवतहास अत्यन्त पराना ह ै । मध्याह्न ◌ ं िोिन सबसे पहले मिास म ें 1925 म ें प्रारर् हई थी । 1980 के दशक म ें यह गिरात, के रल और शषे ◌ ं तवमलनाड म ें शरू हई परन्त कें ि स्तर पर यह 15 अगस्त 1995 को प्रारर् की गयी । विद्यालयों में ◌ ◌ ◌ ं वनयवमत स्िास्थ्य िाँच र्ी इसी स्िास्थ्य और शारीररक वशक्षा का ही र्ाग ह ै । इसके अवतररक्त खेल, व्यायाम, सफाई समबन्धी कायभिम, पयाभिरि सरक्षि र्ी इसके अतगतभ आते ह ैं । ं ं दशे म ें यौन वशक्षा को लेकर काफी विरोध का सामना करना पड़ता ह ै । सबसे बड़ी समस्या इसके नाम को लेकर ह ै क्योंवक यौवनकता स े िड़े से मसलों पर बात करना हमारे दशे म ें िवितभ िसै ा माना िाता ह ै । अतः ◌ पाठयचयाभ विशषे ज्ञों को यह प्रयास करना चावहए वक यौवनकता से िड़े मद्दों को शारीररक वशक्षा के ◌ ◌ ◌ अतगतभ रखा िाए क्योंवक इससे विद्यावथभयों के प्रश्नों और भ्रावतयों का वनिारि र्ी होगा और नाम को लेते ं ं हए कोई समस्या लोगों को नहीं होगी । कक्षाओ म ें वबना वकसी पिभाग्रह के सर्ी के वलए यौन वशक्षा को ◌ ं शावमल वकया िाना चावहए । कक्षा के स्तर के अनसार पाठों को शावमल करना चावहए । ◌ उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 42 ◌ शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं HIV/AIDS िसै ी समस्याओ के समाधान के वलए शारीररक वशक्षा म ें इससे समबवधत पाठ को ं ं शावमल करना चावहए और इसकी वशक्षा दी िानी चावहए । इसके अवतररक्त पाठयचयाभ म ें ड्रनस, तथा अन्य ◌ प्रकार के नश े से समबवधत समस्याओ को पढ़ाया िा सकता ह ै । ं ं शारीररक वशक्षा म ें स्काउट-गाइड, राष्ट्रीय सिेा योिना, राष्ट्रीय कै डेट कोर को र्ी शावमल करना चावहए । ये सर्ी मात्र शारीररक विकास से ही समबवधत नहीं ह ै बवलक व्यवक्तत्ि के सिाांगीिविकास म ें र्ी ं योगदान करता ह ै । राष्ट्रीय कै डेट कोर के िवनयर विग और वडिीज़न को उच्च प्राथवमक और माध्यवमक ◌ ं स्तर पर और उच्चतर माध्यवमक स्तर पर सीवनयर विग या वडिीज़न म ें र्ागीदारी लेने के वलए विद्यावथभयों ं को

Plagiarism detected: **0.04%** https://schoolscholarship.cg.nic.in/ id: **112**

प्रोत्सावहत वकया िा सकता ह ै । शारीररक वशक्षा म ें शावमल सर्ी घटकों से समबवधत वशक्षा को अन्य ं विषयों िसै े, गवित, विज्ञान,

ोराषा या कला िसै ा ही महत्ि दने ा चावहए । वनयवमत स्िास्थ्य िाँिच के वलए डॉक्टर तथा सहायक वचवकत्साकमी वनयवमत रूप से विद्यालय म ें आने चावहए ।लड़वकयों के वलए यह और ोरी आिश्यक ह ै क्योंवक उनकी शारीररक और स्िास्थ्य समस्याए लड़कों की तलना म ें अवधक ु ं िवटल होती ह ैं और उनका वनिारि वकया िाना आिश्यक ह ै ।लड़वकयों के वलए मवहला डॉक्टर और नसभ होनी चैये विससे िे अपनी समस्याओ पर खल कर बात कर सकें । शारीररक वशक्षा के वलए विद्यालय म ें ु ं एक अध्यापक होना चावहए ।वकशोररयों के वलए एक मवहला वशक्षक होनी चावहए । शारीररक वशक्षा में मात्र सैिवतक कक्षायें ही नहीं होनी चावहए बवलक प्रायोवगक होनी चावहए । ं विद्यावथभयों को खेल के मदै ान म ें ले िाना चावहए । िो ोरी स्थानीय खले हों उन्ह ें सवममवलत करने चावहए वहस्से कम झाचभ म ें विद्यावथभयों को खले सामग्री उपलब्ध हो सके । समय-समय पर प्रवतयोवगताओ का ोरी ं आयोिन कराया िाना चावहए । अन्य विषयों की ोरावत इसकी ोरी परीक्षा होनी चावहए और इसके वलए ं मलयाकन म ें अक नहीं बवलक ग्रेड वदए िाने चावहए । ू ं ं अभ्यास प्रश्न 7. कम्प्यटर वशक्षा के माग भ म ें हमारे दशे म ें सबसे बड़ी चनौवतयााँ क्या ह ैं ? ू ु ं 8. कें ि स्तर पर मध्याह्न िोिन योिना कब शरू की गयी थी? ु 4.3.8 शावत वशक्षा ं ितभमान समय म ें समपि भ विश्व विस वथिह वस्थवत से गिर रहा ह,ै इन पररवस्थवतयों म ें शावत वशक्षा अत्यत ू ु ं ं िरुरी हो िाती ह.ै और यह ोरी आिश्यक ह ै वक यह मात्र पस्तकीय ज्ञान बनकर न रह िाये बवलक ु विद्याथी इसे अपने िीिन म ें उतारें अतः इसके वलए यह आिश्यक हो िाता ह ै वक यह विषय प्रारवर्क ं वशक्षा म ें ही पाठयिम म ें सवननवत कर वदया िाए और इसे इस तरह से पढ़ाया िाये वक इससे समबवधत ु ं ं बातों को बच्चों म ें बीिारोवपत वकया िा सके . बीिारोवपत करने का आशय यहााँ यह ह ै वक िब ोरी विद्यावथभयों को अपने दवै नक िीिन वकसी समस्यात्मक वस्थवत म ें प्रवतविया करनी हो िह ससगत तरीके से ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 43 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं शावत के साथ ही प्रवतविया करें और इसके वलए शावत से िड़े मलयों का बीिारोपि वकया िाना ु ू ं ं आिश्यक ह.ै और यही कारन ह ै वक शावत वशक्षा को पाठयचयाभ म ें शावमल करना अवनिायभ ह.ै ् ं आि का यह दौर वहसा का दौर बन चका ह।ै व्यवक्त के अन्दर का विघटन समबि भ राष्ट्र और ु ु ं

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.myupchar.com/baby-names/boy-na… id: **113**

विश्व को अपने चपेट म ें ले चका ह ै और यह विघटनकारी प्रिवतयााँ वनत नए रूप म ें वहसा के रूप म

ें सामने ृ ू ं आ रही ह।ैं यह सोचने और समझने िाली बात ह ै वक व्यवक्त विस रूप म ें वहसक हो उठा ह ै और विस ं तरह का व्यिहार प्रदवशतभ कर रहा ह,ै उस वस्थवत म ें उस व्यवक्त का अतस वकतना विकत और नर्न होगा ृ ं िहााँ मानिता वबलकल नहीं बची होगी। धावमकभ उन्माद, कट्टरता, िोध, वहसक गवतविवधयााँ, हर दसरे के ु ं ू वलए सममान का अोाि, असवहष्िता, मलयों की कमी लगर्ग हम सब के अन्दर आ गयी ह ैं िो िक्त ु ू बिक्त शब्दों या कत्यों के द्वारा बाहर वनकलती रहती ह।ैं ऐस े म ें आिश्यकता ह ै वक हर स्तर पर चाह े यह ृ एक व्यवक्त का दसरे व्यवक्त से हो, एक समह का दसरे समह से हो या एक राष्ट्र का दसरे राष्ट्र से, इन सोरी ू ू ू ू ू स्तरों पर वििादों को सलझाने के वलए वकसी ोरी प्रकार की वहसा का सहारा न वलया िाए। एक शाववब्दक ु ं वहसा ोरी आग े चलकर विवप रूप ले लेती ह।ै राष्ट्रीय पाठयचयाभ की रुपरेखा-2005 म ें ोरी यह उवललवखत ् ं ू वकया गया ह ै वक "िवै श्वक, राष्ट्रीय एि स्थानीय स्तर पर बढ़ती हई वहसा के चलते राष्ट्रीय स्कली ू ं ं पाठयचयाभ के ढाचे के इस दस्तािे म ें शावत की वशक्षा का स्थान बाध्य रूप स े स्पष्ट ह।ै शावत स्थावपत ् ं ं ं करने की दीघकभ ावलक प्रविया म ें वशक्षेक महत्िपि भ आयाम ह"ै । क्योंवक वशक्षा ही िह माग भ ह ै विसके ू द्वारा अतराभष्ट्रीय सद्भाि, विश्व-बधत्ि, राष्ट्रीयता, विविधता की समझ, विवर्न्न सस्कवतयों के प्रवत आदर ृ ु ं ं ं का ोाि, समानता, न्याय एि सहनशीलता िसै े मलयों िो शावत के वलए आिश्यक ह,ैं उन मलयों को ू ू ं ं विकवसत वकया िा सकता ह ै । ितभमान समय म ें घर और बाहर का िाताोरि मलयों का ह्रास वकए िा रह े ह।ैं टटते पररिार, ू ू क्षररत होते समबन्ध, स्िाथभपरता के मध्य घर म ें ोरी बच्चों म ें सही मलयों का बीिारोपि नहीं हो रहा ह ै । ू इसके साथ म ें यह ोरी ह ै वक आि के समय म ें विस प्रकार की वशक्षा विद्यालयों म ें दी िा रही ह ै उनम ें ोरी मलयों का अोाि ह ै और यही कारि ह ै वक यह वशक्षा वहसा को और बढ़ािा द े रही ह।ै आि के समय म ें ू ं विद्यावथभयों को वहसक और आपरावधक गवतविवधयों म ें वलप्त दखे ा िा सकता ह ै । िब वशक्षा द्वारा इन ं मलयों का विकास वकया िा सकता ह ै और विद्यालयों म ें ही विद्यावथभयों म ें अन्दर विघटनकारी शवक्तयों को ू बढ़ािा वदया िाना वदख रहा ह ै तो ऐसे म ें स्पष्ट ह ै वक वशक्षा अपने उद्दश्े यों को परा करने म ें असफल वसि ू हो रही ह।ै अतः आिश्यक ह ै वक वशक्षा के उद्दश्े यों को पनःपररोावषत वकया िाए, विद्यालयों और ु वशक्षक की र्वमका को वनधाभररत वकया िाए और पाठयचयाभ म ें आिश्यक पररितभन वकया िाये। इसके ् ू साथ ही मलयाकन की प्रविया म ें पररितभन लाया िाए। शावत वशक्षा का मलयाकन वलवखत परीक्षा के ू ू ं ं ं माध्यम से ना हो बवलक िषभर्र छात्रों के प्रदशनभ के माध्यम से ग्रेड प्रदान वकए िायें और एक वनधाभररत ग्रेड सोरी विद्यावथभयों द्वारा लाना अवनिायभ हो अन्यथा उन्ह ें पनः उसी प्रविया एि कक्षाओ से गिरना हो । ु ु ं ं विद्यावथभयों को करिीय और अकरिीय चीिों का ज्ञान हो । उनकी अिस्था के अनसार अलग-अलग ु आय समह के विद्यावथभयों के वलए वर्न्न पाठयचयाभ हो । वशक्षकों, माता-वपता और अवर्र्ािकों को यह ् ु ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 44 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं चावहए वक िह विन गिों की अपेक्षा विद्यावथभयों म ें करते ह ैं िह गि स्िय ोरी प्रदवशभत करें और समय- ु ु ं समय पर विद्यावथभयों से उनसे अपेवक्षत व्यिहार के विषय म ें चचाभ करते रहना चावहए। विद्यावथभयों में वकसी ोरी िावछत व्यिहार को विकवसत करने के वलए उसको उनके दवै नक िीिन की घटनाओ से ं ं िोड़कर पढ़ाने और वसखाने का प्रयास करना चावहए । 4.3.9 काम आिै वशक्षा काम का पाठयचयाभ म ें आशय श्रम की वशक्षा से ह।ै यह श्रम वशक्षा से समबवधत गवतविवधयों को ् ं सवममवलत करता ह ै विसम ें कछ वनमाभि कायभ वकया िाए।

विद्यालयों म ें दी िाने िाली इस वशक्षा म ें कई ु गवतविवधयों को वलया िा सकता ह ै । पाठयचयाभ म ें श्रम से समबवधत वशक्षा महात्मा गाँधी ने बेवसक ृ ं वशक्षा के साथ ही प्रस्तावित की थी । यही नहीं, स्ितित्रता से पि भ ूरी विवर्न्न आयोगों और सवमवतयों ने ू ं इसे प्रस्तावित वकया था । काम का आशय वनी उत्पादक कायों से लेकर सामाविक एि प्रशासवनक रूप से उपयोगी ं गवतविवधयों से ह।ै काम के अतगतभ हम उन स्री गवतविवधयों को सवममवलत कर सकते ह ैं िो वकसी ्री ं तरह से मनष्य के वहत से समबवधत ह ैं । इन स्री वियाओ की गिना काम के रूप म ें की िा सकती ह ै । ु ं ं व्यवक्त के िीिन का उद्दश्े य स्ुिय हते और समि हते अपेवक्षत उत्तरदावयत्िों का वनिहभ न ह ै । वशक्षा और ु ु ं िीिन के उद्दश्े यों को अलग करके नहीं दखे ा िा सकता । वशक्षा का उद्दश्े य िही होते ह ैं िो िीिन के उद्दश्े य ह ैं । वशक्षा प्रयास करती ह ै वक व्यवक्त का सिांगीि विकास हो, वक िह अपना िीिन वनिाभह कर सके तथा इसके साथ ही समि के वलए ्री उत्पादक हो और समि के द्वारा िो िांवछत ह,ै उन स्री का ं वनिहभ न िह कर सके । वशक्षा म ें कायभ या श्रम को शावमल कायभ के पीछे ्री यही उद्दश्े य ह ै । पाठयचयाभ म ें काम और वशक्षा को सवममवलत करने का उद्दश्े य उनके ि्री िीिन के वलए तैयारी ृ ह ै अतः यह नहीं होना चावहए वक काम से समबवधत वशक्षा दने े के पीछे बच्चों के कन्धों पर अत्यवधक ं बोझ डाल वदया िाए। यह प्रयास करना चावहए वक बच्चों से इस ्रावत काम वलया िाए वक उनम ें यह ं सीखना लग े और इसे उनके वशक्षा-अवधगम म ें बाधक नहीं होना चावहए। श्रम को वशक्षा म ें शावमल करने का उद्दश्े य र्विष्य की तैयारी ह ै और यह इसी प्रकार दने ा चावहए। श्रम वशक्षा दने े म ें कछ बातों को ध्यान ु म ें रखना चावहए। प्रथम वशक्षकों को यह नहीं करना चावहए वक बच्चों को कायभ द ें और स्ुिय उसम ें ्राग न ं लें। इसम ें वशक्षक और विद्यावथभयों की परी सह्रावगता होनी चावहए। क्योंवक इस अिस्था म ें बच्चे बड़ों ू को कायभ करता दखे कर उसे सीखते ह।ैं इसके साथ ही समय-समय पर माता-वपता एि अवर्र्ािकों को ं ्री विद्यालयों के द्वारा आमवत्रत करना चावहए और सवममवलत रूप से कायभ को वकया िाना चावहए ं विसम ें विद्यावथभयों, अवर्र्ािालों, वशक्षकों उर प्रशासकों की पि भ ्रागीदारी हो । इस बात का परा ख्याल ू ू रखना चावहए वक वदया गया कायभ बच्चों वक आय के अनसार हो । वशक्षकों को यह ्री सवनवश्चत करना ु ु ु चावहए वक स्री बच्चों की पि भ सह्रावगता ह ै । ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 45 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं काम को वशक्षा म ें शावमल करना बच्चों को अनशावसत करने म ें ्री योगदान करता ह।ै श्रम को ु शावमल करने से विद्याथी न के िल करना सीखते ह ैं अवपत सामाविकता, सह्रावगता, आत्म-वनयत्रि, ु ं मले िोल वक ि्राना, कायभ का बटिारा, आत्मवनर्रभ ता, रचनात्मकता इत्यावद सीखता ह।ै साथ ही यह ं आत्मानशासन के वलए ्री काम को वशक्षा म ें सवममवलत वकया िाना चावहए । ु अभ्यास प्रश्न 9. शावत वशक्षा विद्यावथभयों म ें वकन गिों का विकास करती ह?ै ु ं 10. कायभ को वशक्षा म ें शावमल करने का लक्ष्य क्या ह?ै 4.4 सारांश इसप्रकार कहा िा सकता ह ै वक विवर्न्न विषयों को पाठयचयाभ म ें शावमल करने के बहत ही दरगामी ृ ू लक्ष्य ह ैं । पाठयचयाभ म ें मात्र िशै ्रावनक और तकनीकी ज्ञान ही नहीं बवलक सामाविक और नैवतकता ृ समबन्धी

Plagiarism detected: **0.04%** https://alphabetsinhindi.com/hindi-alphabets-wi… + 2 resources! id: **114**

ज्ञान को सवहत करन े का प्रयास वकया िाता ह ै और इनके माध्यम से ज्ञानात्मक, ि्रात्मक और ं वियात्मक क्षेत्रों म ें उद्दश्े यों की प्रावप्त करते हए विद्यावथभयों का विकास करने का प्रयास वकया िाता ह ै । 4.5 शब्द ्रावली 1. 3 R: 3 R म ें अथाभत पढ़ना, वलखना और गवितीय वियाओ को वलया िाता ह ै । ं 4.6 अभ्य ्रास प्रश्न ों के उत्त र 1. पाठयचयाभ

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **115**

का विकास करते समय इस बात का ध्यान रखना अत्यत आिश्यक ह ै वक पाठयचयाभ इस ृ ृ ं प्रकार की हो िो बच्चों म ें सिन शवक्तयों का विकास करे साथ ही साथ इस विकास क

े वलए िह ृ बोवझल न हो िाए बवलक रोचकता वलए हए हो। 2. िड वडस्पैच-1854 म ें तीन ्राषाओ ों को पाठयिम म ें स्थान दने े का सझाि वदया गया था । ृ ु ु 3. उच्च प्राथवमक स्तर के विद्यावथभयों के वलए गवित वशक्षा का उद्दश्े य उनके कक्षा म ें सीख े गए ज्ञान का सामान्यीकरि, प्राप्त सचनाओ का विस्ताररत उपयोग, कलपना कौशलों का विस्तार तथा वद्वआयामी ू ं और वत्रआयामी समझ को बढ़ाने हते होना चावहए ु 4. प्राथवमक स्तर पर विज्ञान के माध्यम से बच्चे की विज्ञास प्रिवत और अन्िषे िनात्मक शवक्त का ृ ु विकास करना चावहए। विद्यावथभयों को उत्सक रूप स े अिलोकन करने, नयी चीिों को खोिने, नयी ु पररवस्थवतयों म ें सामिस्य करने की योनयता विकवसत करनी चावहए । ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 46 ु

Plagiarism detected: **0.08%** https://www.rekhtadictionary.com/word-family/s… id: **116**

शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 5. सामाविक विज्ञान के अतगभत विन विषयों को शावमल वकया िाता ह ै उनमें इवतहास, र्गोल ू ं रािनीवतशास्त्र, समािशास्त्र, अथभशास्त्र और मानि विज्ञान ह ैं 6. कला के माध्यम से विद्यावथभयों के अन्दर वशक्षकों को इस प्रकार क

ी योनयता की विकास करना चावहए वक िह अपने स्थानीय िातािरि से समबवधत सकलपनाओ की पहचान सकें तथा उनका ं ं ं विकास कर सकें । वचत्रकला, मवतभकला, नत्य, गायन, िादन, नाटक, पेंवटग, कठपतली का खले और ृ ू ु ं इनके िसै ी कला की अन्य अनेकों विधाए विद्यावथभयों की सिनात्मकता और सक्ष्म-गामक कौशलों ृ ू ं का विकास तथा विवर्न्न मलयों का विकास करती ह ैं । ू 7. कप्यटर वशक्षा के वलए हमारे दशे म ें सबसे बड़ी चनौवतयाँ बवनयादी सविधाओ का अर्ाि और ू ु ु ु ं ं कशल वशक्षकों की कमी ह ै । ु 8. कें ि स्तर पर मध्याह्न र्ोिन योिना 15 अगस्त 1995 को शरू की गयी थी । ु 9. शावत वशक्षा

विद्यावथभयों म ें अतराभष्रीय सद्भिा, विश्व-बधत्ि, राष्रीयता, विविधता की समझ, विवर्न्न ु ं ं ं सस्कवतयों के प्रवत आदर का िाि, समानता, न्याय एि सहनशीलता िसै े मलयों का विकास करती ृ ू ं ं ह।ै 10. काम को वशक्षा म ें शावमल करने का लक्ष्य विद्यावथभयों को अनशासन, सामाविकता, सहािवगता, ु आत्म-वनयत्रि, मले िोल वक िािना, कायभ का बटिारा, आत्मवनर्रभ ता, रचनात्मकता इत्यावद गिों ु ं ं का बीिारोपि ह ै । 4.7 संदर् भ ग्रंथ सची ू

Plagiarism detected: **0.07%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… + 5 resources! id: **117**

1. NCERT (2005). National Curriculum Framework 2005. New Delhi: National Council of Educational Research and Training. 2. NCERT (2009). Position Paper National Focus Group on Arts, Music, Dance and Theatre. New Delhi: National Council of Educational Research and Training.

3. राष्रीय शवै क्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2005). राष्रीय पाठयचयाभ की रुपरेखा ृ ु ृ 2005। नयी वदलली: राष्रीय शवै क्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद। ु ृ 4. राष्रीय शवै क्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2009). कला, सगीत, नत्य और रगमच ृ ु ं ं ं ृ राष्ट्रीय फोकस समह का आधार पत्र। नयी वदलली: राष्रीय शवै क्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि ू ु पररषद। ृ 5. राष्रीय शवै क्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2009). िारतीय िाषाओ ंँ का वशक्षि राष्ट्रीय ु ृ फोकस समह का आधार पत्र । नयी वदलली: राष्रीय शवै क्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद। ू ु ृ 6. राष्रीय शवै क्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2008). गवित वशक्षि । राष्ट्रीय फोकस समह ु ू ृ का आधार पत्र । नयी वदलली: राष्रीय शवै क्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद। ु ृ उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 47 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 7. राष्रीय शवै क्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2007). सामविक विज्ञान का वशक्षि राष्ट्रीय ु ृ फोकस समह का आधार पत्र । नयी वदलली: राष्रीय शवै क्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद। ू ु ृ 8. राष्रीय शवै क्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2010). शावत के वलए वशक्षा । राष्ट्रीय ु ं ृ फोकस समह का आधार पत्र । नयी वदलली: राष्रीय शवै क्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद। ू ु ृ 9. राष्रीय शवै क्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2008). विज्ञान वशक्षि । राष्ट्रीय फोकस ु ृ समह का आधार पत्र । नयी वदलली: राष्रीय शवै क्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद। ू ु ृ 10. राष्रीय शवै क्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2008). स्िास्थ्य और शारीररक वशक्षा ु ृ राष्ट्रीय फोकस समह का आधार पत्र । नयी वदलली: राष्रीय शवै क्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि ू ु पररषद। ृ 4.8 वनबधात्म क प्रश्न ं 1. िाषा का पाठयिम म ें होना क्यों आिश्यक ह?ै प्रकाश डालें । ृ 2. विवर्न्न विद्यालयी स्तरों पर गवित वशक्षा की र्वमका को स्पष्ट करें । ू 3. "विज्ञान और सामाविक विज्ञान वशक्षि दोनों ही विषय विद्यालयी स्तर पर समान रूप से आिश्यक ह"ैं इस कथन के पक्ष म ें अपने विचार प्रस्तत करें । ु 4. शावत वशक्षा और कला की वशक्षा वकस प्रकार स्िास्थ्य और समि समिा का वनमाभि कर सकते ृ ं ह?ैं आप अपनी कक्षा के विद्यावथभयों को स्िास्थ्य और समि समिा के वनमाभि हते वकस प्रकार ृ ु प्रेररत कर सकते ह?ैं अपने विचार प्रस्तत करें । ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 48 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं इकाई 5- विद्यालयीय पाठ्यक्रम में विषय-िस्त ु का चयन एि अनक्र ु मण 5.1 प्रस्तािना 5.2 उद्दश्े य 5.3 विषय-िस्त चयन का वसिात ु ं 5.3.1 िैधता का वसिात ं 5.3.2 साथभकता का वसिात ं 5.3.3 सतलन का वसिात ु ं ं 5.3.4 स्िवच-समपिभता का वसिात ू ं ं 5.3.5 रोचकता का वसिात ं 5.3.6 उपयोवगता का वसिात ं 5.3.7 साध्यता का वसिात ं 5.4 विषय-िस्त सरचना एि घटकों का एकीकरि ु ं ं 5.4.1 सज्ञानात्मक

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 2 resources! id: **118**

क्षेत्र की विषय-िस्त ु ं 5.4.2 िािात्मक क्षेत्र की विषय-िस्त ु 5.4.3 वियात्मक क्षेत्र

की विषय-िस्त ु 5.5 विषय-िस्त अनिम का वसिात ु ु ं 5.5.1 अनिम की आधारर्त पररसकलपना ु ू ं 5.5.2 अनिम की विवधया ु ं 5.6 साराश ं 5.7 शब्दािली 5.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 5.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सची ू 5.10 वनबधात्मक प्रश्न ं 5.1 प्रस्तावना वप भ की इकाइयों को अध्ययन करने के पश्चात आप यह समझ गए होंग े की ज्ञान (knowledge) क्या होता ृ ू ह ै एि वकसी समपि भ ज्ञान के स्रोत क्या क्या होते ह ै । एक ही तरह के वमलते िलते ज्ञान, िो मानि ू ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 49 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं मवस्तष्क के वकसी विशषे िाग को प्रिावित करते हो, को आम िाषा म ें विधा (discipline) कहा िा सकता ह ै । वकसी िी विधा म ें पाये िाने िाले ज्ञान को अगर ध्यानपिकभ एि पि भ सािधानता के साथ ू ू ं विश्लेषि कर िगीकत वकया िाए, तो प्रत्येक िग भ को हम एक विषय

Plagiarism detected: **0.1%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 8 resources! id: **119**

के रूप म ें प्राप्त करेंग े । सरल शब्दों म ें ृ कहा िाये तो विवशष्ट रूप से िगीकत ज्ञान को विषय के रूप म ें समझा िा सकता ह ै एि वमलते िलते ृ ु ं विषयों से ही एक विधा का िन्म होता ह ै । िब बात वकसी विद्यालयी पाठयिम की होती ह ै त

ो हम पात े ृ ह ै की अलग अलग विधाओ से कछ विषयों का चयन कर आमतौर पर पाठयिम बना वदया िाता ह ै । ृ ु ं हालावक इस दौरान बालकों की मनोिैज्ञावनक स्तर, उनकी अवर्रुवच एि समबवधत अन्य कारकों का ं ं ध्यान रखा िाता ह ै । इस वलए एक वशक्षक या िािी वशक्षक होने के नाते यह हमारी िरुरत बन िाती ह ै की हम ें यह पता रह े की वकसी विषय म ें समावहत होने िाले ज्ञान, विसे हम विषय-िस्त िी कहते ह,ै कौन ु कौन से ह ै या होन े चावहए । विषय-िस्त के चयन के समय हम ें क्या क्या ध्यान म ें रखना चावहए । विषय- ु िस्त का अनिम क्या होना चावहए एि इस अनिम को कै से तैयार वकया िाये । ितभमान इकाई में ु ु ु ं हमलोग इस बात पर अपना ध्यान के वन्ित करेंग े की वकसी विद्यालयी पाठयिम म ें विषय-िस्त का चयन ृ ु एि अनिम कै से वकया िाये एि इसके वलए कौन सी विवधया उपयक्त ह ै । ु ु ं ं ं 5.2 उद्दश्े य प्रस्तत इकाई को

अध्ययन करने के पश्चात आप- ु 1. विषयिस्त चयन से समबवधत महत्िपि भ वसिान्तों को बता सकें ग े । ु ू ं 2. विषयिस्त सरचना से समबवधत घटकों का िििनभ कर सकें ग े । ु ं ं 3. विषयिस्त के विवर्न्न घटकों के एकीकरि की प्रविया को समझा सकें ग े । ु 4. विषयिस्त अनिम की विवधयो ोँ को समझा सकें ग े । ु ु 5. विषयिस्त की अनिम की विवधयो ोँ को ध्यान में रखते हए वकसी ोी विषयिस्त का अनिमि ु ु ु ु कर सकें ग।े 5.3 ववषय-वस्तु चयन का वसद्ातं क्या आप िानते ह ै की वकसी पाठयिम को आप सफल कै से बना सकते ह ै ? वकसी ोी पाठयिम को ् ् समपि भ ए् सफल बनाने के वलए यह िरुरी ह ै की िह अपने शक्षै विक उद्दश्े यों को प्राप्त कर सके और साथ ू ं ही साथ अपने सरचना म ें समिा को प्रवतवबवबत कर सके ; अथाभत पाठयिम अपने सोी विषयों के ् ं ं माध्यम से एक समपि भ समिा को दशाभता हो । अब प्रश्न यह ोी उठ खड़ा होता ह ै की सफल पाठयिम के ् ू वलए उसम े ऐसा क्या होना चावहए ? इसका उत्तर ह े सटीक विषयि-स्त । यह विषयि-स्त ही ह े िो ु ु पाठयिम की सफलता या असफलता को वनधाभरि कराती ह,ै िसै े – कौनसा विषयि-स्त ह?ै क्या िह ् ु इस पाठयिम के वलए सही ह ै ? क्या विषयि-स्त बालकों के वलए रोचक ह ै ? आवद । ध्यान दने े योनय ् ु बात यह ह ै की इस

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.rekhtadictionary.com/word-family/s… id: **120**

प्रकार के सोी प्रश्न विषयि-स्त के चयन से समबवधत ह े । इसका मतलब ह ै की एक ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 50 ु शास्त्र

ों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं अच्छा पाठयिम उसम े वनवहत होने िाले विषयि-स्त ि उसकी गििित्ता पर वनर्रभ करता ह ै । इन्ही विषय- ् ् ु ु िस्त की गििित्ताओ को परखने के वलए

Quotes detected: **0.01%** id: **121**

'विषयि-स्त के चयन का वसिात'

का प्रवतपादन वकया गया ह े । ु ु ु ं ं विषयि-स्त के चयन का वसिात (Principle of content selection) मलत:सात अलग अलग ु ू ं वसिातों का समच्चय ह,ै विनके बारे म ें हम िमिश चचाभ करेंग े । ु 5.3.1 वैधता का वसिात (Principle of Validity) ं िधै ता का वसिात वकसी विषयि-स्त की िधै ता के आधार पर विषय म ें या पाठयिम म ें उसके चयन की ् ु ं बात करता ह ै । विषयि-स्त की िधै ता को दो अलग तरीके से वसि वकया िा सकता ह,ै यथा – ु प्रथमत: विस विषय के विषयि-स्त का चयन होना ह,ै विषयि-स्त उसी विषय के ज्ञान क्षेत्र से समबवधत ु ु ं होना चावहए । एक उदहारि के माध्यम से हम इसे समझने की कोवशश करते ह े । मान लीविये आपके इवतहास से समबवधत वकसी विषयि-स्त का चयन करना ह ै तो इस वसिात के अनसार विषयि-स्त का ु ु ु ं ं क्षेत्र इवतहास से ही समबवधत होना चावहए वकसी और विषय से नहीं । ं वितीयत: विषयि-स्त उस विषय के वलए पहले से वनधाभररत वकये गए उद्दश्े यों को प्राप्त करने म ें सहायक ु वसि होना चावहए । दसरे शब्दों म ें कह े तो विषयि-स्त विषय या पाठयिम के उद्दश्े यों के दृवष्टकोि से िधै ् ु ू होना आिश्यक ह े । मान लीविये आप गोल विषय पढ़ा रह े ह े विसका एक उद्दश्े य बालकों को गगा नदी ू ं के गवतपथ के बारे म ें आिश्यक िानकारी दने ा ह े । अत: इस उद्दश्े

Plagiarism detected: **0.07%** https://navbharattimes.indiatimes.com/astro/gr… id: **122**

य की प्रावप्त के वलए आपका विषयि-स्त ु गगा नदी ए् उसके उद्गम से सागर तक के स्िर स े समबवधत होना चावहए । अगर ऐसा नहीं ह ै तो आप ं ं ं पाठ के उद्दश्े यों को प्राप्त

नहीं कर पायेंग े और आपका विषयि-स्त अिधै माना िायेगा । ु वचत्र 1. वैध ववषय-वस्त का पररसीमन ु ववषय वस्त ु पाठयिम का ् व व ष य ज्ञ ा न क्ष ेत्र उद्देश्य वैध ज्ञान उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 51 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 5.3.2 साथतकता का वसिात (Principle of Significance) ं साथभकता के वसिात के अनसार वकसी विषयि-स्त का चयन तोी साथभक

Plagiarism detected: **0.06%** https://bsebresult.in/ka-kha-ga-gha/ id: **123**

हो सकता ह ै िब िह विषय- ु ु ं िस्त बालकों के अवर्रुची, प्रयोिन आवद को परा करता हो । कोई ोी विषयि-स्त तब साथभक समझा िा ु ू ू सकता ह े िब िह

अवधगम वियाओ, कौशलों ए् प्रवियाओ को पि भ रुप ें प्रदवशतभ होने का अिसर प्रदान ू ं ं ं करें ए् ज्ञान के तीनो प्रमख क्षेत्रो के विकास म ें सहायक वसि हो । वकसी विषयि-स्त की साथभकता उस ु ु ं समय और ोी महत्िपि भ हो िाती ह ै िब बालकों का समह अलग अलग सामाविक ि सास्कवतक ृ ् ू ू ं पष्ठर्वम से समबन्ध रखते ह े । सरल शब्दों म ें कहा िाये तो िह विषयि-स्त साथभक ह े िो पाठ या ृ ू ु पाठयिम के उद्दश्े यों की प्रावप्त को सवनवश्चत करता हो । ् ु वचत्र 2. साथतक अवधगम मलयाकन ू ं वव ब ा ल ष क य ए ववषय पाठयिम ् ि ं उद्देश्य लक्ष्य ि ा व त ा ि स्त ु शवै क्षक र ि वियाए ं 5.3.3 सतलन का वसिात (Principle of Balance) ु ं ं ं विषयिस्त चयन के वलए सतलन का वसिात सर्ित: सबसे महत्िपि भ शतों म ें से एक ह.ै यह वसिात ु ु ू ं ं ं ं विषयिस्त चयन से लेकर विषयिस्त की सरचना ए् विस्तारि,

Plagiarism detected: **0.11%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 5 resources! id: **124**

प्रत्येक स्तर पर कायभ करता ह ै । इस ु ु ं ं वसित के अनसार- ु ं प्रथमत: विषयिस्त चयन के साथ यह ध्यान दने ा ए सवनवश्चत करना आिश्यक ह ै वक िह विषय िस्त ु ु ु ं ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र(सज्ञानात्मक, ि्ात्मक, वियात्मक) को प्रयाप्त रूप म ें प्रदवशतभ करें, अथाभत ं विषयिस्त म ें तीनों ज्ञान क्षेत्र

ों का प्रयाप्त प्रवतवनवधत्ि रह े ए उनम ें सतलन बना रह े । ु ु ं ं वितीयत: विषय िस्त चयन के समय विषयिस्त के िवटलता स्तर पर सतलन बने रहना चावहए । ु ु ु ं विषयिस्त इतना सरल नहीं होना चावहए की िह अच्छे ए कमिोर बालकों म ें विर्दे न कर सके और ु ं इतना िवटल ्री नहीं होना चावहए की िह पन: अच्छे ए कमिोर बालकों म ें वि्ेद न कर सके । ु ं इसवलए विषयिस्त न बहत सरल और न ही िवटल होना चावहए । ऐसा करने से एक फायदा ्री वमलता ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 52 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं ह।ै कमिोर बच्चे आसान अश हल कर लेंग े तो विषय म ें उनकी रोचकता बनी रहग े ी । दसरी तरफ ति े ं ू बालकों को ्री यह रोचक लगेगा क्योवक िवटल वहस्सों को हल करने म ें उनकी वदलचस्पी बनी रहगे । ततीयत: विषयिस्त विस्तार के समय सतलन का वसित यह कहता ह ै वक वकसी विषयिस्त को इतना ृ ु ु ु ं ं विस्तार न करो विससे वकसी दसरे विषयिस्त के प्रवतनवधत्ि पर प्रश्नवचन्ह बन िाये । इसका मतलब यह ु ू हआ वक वकसी प्रकरि विशषे

Plagiarism detected: **0.04%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… id: **125**

को ज्यादा महत्ि दने े पर दसरे प्रकरिों के वलए पाठयिम में स्थान बनाना ू ू बेहद कवठन हो िाता ह,ै इसवलए प्रत्येक प्रकरि (विषयिस्त) का विस्तार सतवलत मात्रा म ें होना चावहए । ु ु ं 5.3.4 स्वय-सम्पणतता का वसित (Principle of Self-Sufficiency) ू ं ं वकसी विषय िस्त को पढ़ाने के वलए अगर कम से कम ससाधन ए सरल शवै क्षक प्रयास प्रयाप्त हों और ु ं ं इसके फलस्िरूप बालकों का शवै क्षक वनष्पादन आशानरूप हो, तो

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व… + 4 resources! id: **126**

इस प्रकार के विषय िस्त को हम ु ु स्ि-समपि भ विषय िस्त कह सकते ह.ैं इस प्रकार के विषयिस्त चयन के समय ए विस्तार विया के ू ु ु ं ं दौरान उन स्री िरुरी घटकों का इसम ें समािेश वकया िाता ह ै िो अनकलतम अवधगम के वलए प्रयाप्त ु ू हो। दसरा यह की स्ि समपि भ विषयिस्त प्रत्येक प्रकरि के वलए प्रयाप्त समय प्रबधन करते हए उनको ू ु ं ं ू सतवलत गहराई तक विश्लेवषत करता ह ै । ु ं 5.3.5 िोचकता का वसित (Principle of Interest) ं विषयिस्त के चयन के दौरान रोचकता के वसित का प्रयोग दो स्तरों पर वकया िाता ह ै । पहले तो ु ं विषयिस्त चयन के समय बालकों के समह का ध्यान रखना अत्यन्त आिश्यक ह ै वक िह विषयिस्त ु ू ु वकस स्तर के (उम्र ए मानवसक) बालकों के वलए प्रयोग में लाया िायेगा । उसके अनसार उस विशेष ु ं स्तर के बालकों

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… id: **127**

की सामान्य अवधगम रीवत, उनकी अवरुवच, मानवसक स्तर का विश्लेषि कर विषयिस्त ु का चयन वकया िाना चावहए । दसरे स्तर पर इस वसित का प्रयोग

विषयिस्त के प्रस्ततीकरि के वलए ु ु ं ू होता ह ै । विषयिस्त का चयन ऐसा होना चावहए िो छात्र के वन्िक अवधगम को प्रोत्सावहत करें । इसके ु फलस्िरूप बालक अपने आप को विषयिस्त को िोड़ पायेंग े ए उनकी रोचकता विषयिस्त म ें बनी ु ु ं रहग े ी । 5.3.6 उपयोवगता का वसित (Principle of Utility) ं प्रत्येक छात्र को अपने छात्र िीिन म ें कछ खास प्रश्नों का सामना करना पड़ता ह,ै िसै े - क्या यह विषय ु व्यिसाय/नौकरी म ें सहायक वसि होगा ? क्या यह विषय मरे े वलए िरुरी ह ै ? क्या यह विषय मरे े समस्याओ का समाधान करेगा ? क्या इसम ें म ै उत्तीि भ हो िाऊगा ? क्या यह विषय मरे े आतररक ं ं ं क्षमताओ के विकास म ें सहायक होगा ? यह कछ ऐसे प्रश्न ह ैं विसे आपने ्री वनवश्चत ही अपने छात्र ु ं िीिन म ें ्री सोंचा होगा, सामना वकया होगा । यह स्री प्रश्न वसफभ एक ही तरफ वनदवे शत करतें ह ैं और िह ह ै उपयोवगता । साफ शब्दों म ें कह ें तो आप उसी विषय को ज्यादा महत्ि दते े ह ैं िो आपके वलए उपयोगी वसि हो । इसवलए उपयोवगता के वसित के अनसार, विषय िस्त चयन के समय ऐसे घटकों का समािशे ु ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 53 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं वकया िाना चावहए , िो बालकों के र्विष्य के वलए उपयोगी वसि हो, न की वसफभ विद्यालयी वशक्षा म ें ् अच्छे अक प्राप्त करने के उपयोग म ें आये । ं 5.3.7 साध्यता का वसित (Principle of feasibility) ं विषय िस्त चयन के सन्दर् भ म ें साध्यता का अथभ ह ै अवधगम प्रविया का समपि भ कायाभन्ियन। इसको एक ु ू उदाहरि से समझने की कोवशश करतें हैं । मान लीविए आप सगिक विषय के अध्यापक ह,ैं कक्षा म ें ं आपने वकसी प्रकरि को तीन वदन म ें समाप्त कर वदया और बालकों को गह कायभ द े वदया । परन्त िो गह ृ ृ ु कायभ आपने वदया उसे परा करने के वलए बालकों के पास सगिक ह ै ही नहीं, तब ? ऐसा करने से अवधगम ू ं प्रविया अधरा रह गया, इसका समपि भ कायाभन्ियन नहीं हो पाया । इस वस्थवत में कहा िा सकता ह ै वक ु ू विषयिस्त म ें साध्यता का आि्ा ह ै । मान लेते ह ैं बालकों के पास सगिक ह,ै परन्त उस गहकायभ को परा ृ ु ु ू ं करने म ें उनको दो सप्ताह का समय लगगे ा । अथाभत विस प्रकरि को आपने तीन वदन म ें परा वकया, ू िास्तविक रूप से उसे परा होने म ें 17 वदन लगगे ा । इससे दसरे प्रकरिों के अवधगम पर प्रि्ा पड़ना ू ू स्िा्ाविक ह ै । इस प्रकार के विषयिस्त का चयन नहीं वकया िाना चावहए िो एक वनयत समय के अन्दर ु समपि भ अवधगम प्रविया को कायाभवन्ित करने म ें असमथभ हों। ू अभ्यास प्रश्न 1. विषय िस्त चयन के वसित में वकन वकन बातों ध्यान रखा िाता ह ै ? ु ं 2. ज्ञान के विवर्न्न पक्षों

का नाम वलवखए । 5.4 ववषयवस्तु की संरचना एवं घटकों का एकीकरण वकसी विषय िस्त के चयन के उपरान्त िो समस्या सामने आती ह ै िह ह ै उस विषय िस्त के वलए चयवनत ु ु तथ्य, समप्रत्यय, उदाहरि आवद का अनिम क्या होगा ? इन सब घटकों के प्रस्ततीकरि का िम क्या ु ु होगा और यह कै से तय वकया वियेगा ? कोई ॰री विषयिस्त वसफभ कछ तथ्यों का समच्चय नहीं होता ह ै ु ु ु विसे वकसी ॰री रूप म ें बालकों के समक्ष प्रस्तत वकया िा सके । प्रत्येक विषय िस्त म ें ऐसे बहत सारे ु ु घटकों का समािेश करना पड़ता ह ै विससे िह विषय िस्त चयन के वसिन्तों के अनरूप हो सके िएि ु ु ं साथ ही

Plagiarism detected: **0.09%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 2 resources! id: **128**

साथ बाल के वन्िक वशक्षा या अवधगम को बढ़ाा द े सके । इसके वलए यह महत्िपि भ हो िाता ह ै ू की विषय िस्त के विस्तारि के समय िए प्रस्ततीकरि के समय प्रत्येक घटक को उसके सही अनिम में ु ु ु ं स्थान वदया िाये । इसका दसरा फायदा यह होगा की विषयिस

ृत को अभ्यास के उपरान्त बालकों का ु ू समझ बढ़ेगा िए अवधगम प्रविया को व्यापक विस्तार वमलेगा। ं प्रस्तत अन॰राग म ें हम लोग यह समझने की कोवशश करेंग े की वकसी ॰री विषयिस्त को विस्तार ु ु ु दने े के वलए उसके सरचना म ें कौन-कौन से घटक होने चावहए िए उन घटकों की विवशष्टता क्या ह ै । ं ं साधारित: प्रत्येक विषयिस्त तीन घटकों से बना होता ह ै या बनना चावहए, यथा- विषयिस्त का ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 54 ु

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.rekhtadictionary.com/word-family/s… id: **129**

शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं सज्ञात्मक घटक, विषयिस्त का िर्ाात्मक घटक िए विषयिस्त का वियात्मक घटक । इन तीनों प्रकार ु ु ं ं क

े घटकों पर हम िमानसार चचाभ करेंग े । ु 5.4.1 ववषयवस्त का सज्ञानात्मक घटक ु ं विषयिस्त के सज्ञानात्मक घटक से अवप्राय उन तथ्यों, सप्रत्ययों, वनयमों आवद से ह ै िो मवस्तष्क के ु ं ं सज्ञान समबन्धी ज्ञान क्षेत्र को प्र॰रावित करत ह े । व्यिहाररक अथों म ें सज्ञानात्मक घटक वकसी विषयिस्त ु ं ं के िह तत्ि ह ैं विन्ह े हम अपने मवस्तष्क में अलपकाल या दीघकभ ाल के वलए सरवक्षत करके रख दते े ह ैं िए ं ं िरूरत पड़ने पर वकसी अन्य प्रकार के ज्ञान के सिन के वलए इसका उपयोग करते ह ैं या स्मवतशवक्त को ृ ृ बढ़ाने के वलए इसका स्मरि करते ह।ैं िैसे-

Quotes detected: **0.01%** id: **130**

‘सज्ञा की परर॰राषा’

। इसको सामान्यत: हम लोग याद कर लेते ं ह ैं । बाद म ें िरूरत पड़ने पर इस परर॰राषा को स्मरि वकया िाता है । इसके अलािा इस परर॰राषा की कोई अन्य विवशष्टता नही ह ै । यह वकसी अन्य

Plagiarism detected: **0.1%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व… + 8 resources! id: **131**

प्रकार के ज्ञान सवित करने सहायक नही ह ै । ृ सज्ञानात्मक विषयिस्त अपने प्रकवत या विवशष्टता के अनसार मलत: छह प्रकार के होते ह ै । ृ ु ु ू ू ं इन्ही प्रकारों म ें कछेक प्रकार के विषयिस्त अवनिायभ रूप से विषय सामाग्री म ें पाये िाते ह ैं । सज्ञानात्मक ु ु ं विषयिस्त के प्रकार

वनमनित ह ै - ु i. तथ्य (Facts):- यह एक प्रकार की कलपना या सकलपना ह ै विसे िरूरत पड़ने पर िााँचा या ं सत्यावपत वकया िा सकता ह ै । यह मलत: वकसी सज्ञानात्मक विषयिस्त का आधार ह ै । ू ु ं उदाहरि स्िरूप वकसी घटना घवटत की वतवथ या वकसी दशे की िनसख्या (िैस े ॰रारत स्ितत्र ं ं हआ 15 अगस्त, 1947) । ii. सप्रत्यय (Concept):- वकसी घटना, समह,स्थान या सकलपनाओ को उनके सामान्य या ू ं ं ं विवशष्ट विशेषताओ के आधार पर िगीकत करके वकसी सप्रत्यय का गठन वकया िाता ह ै । ृ ं ं सप्रत्यय को समझने के वलए कछ उदाहरि सारिी-1 म ें दशाभया गया ह ै । ु ं सािणी-1 सप्रत्यय का नाम उनकी सामान्य विववशष्ट ववशेषताए ँ ं फनीचर (उपकरिों का समह) चेयर (कसी), टेबल, खाट, मि आवद ू ु ु पहाड़/ पििभत पथरीला, िमीन से बहत ऊाँ चा, ब्रिीला आवद अलमारी लकड़ी, लोह,े प्लावस्टक वनवमतभ , सामान रखने के वलए, लमबी, गहरी आकार की, दरािा आवद iii. वसिान्त या प्रमख वनयम(Principle):- तथ्यों या सप्रत्ययों या इन दोनों के मध्य के समबन्ध ु ं विसे शोध प्रविया के माध्यम से सत्यावपत वकया िा सकता ह,ै को वसिान्त या वनयम कहा िा सकता ह ै । िैस े- पररिार म ें बच्चों को सख्या बच्चों के विकास को प्र॰रावित करता ह ै और यह ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 55 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं समबन्ध विविन्न शोध कायों से सत्यावपत वकया िा चका ह ै । यहााँ पररिार म ें बच्चों की सख्या ु ं तथ्य ह ै िए उनका विकास एक समप्रत्यय ह ै । ं iv. प्राककल्पना (Hypothesis):- यह वकसी तथ्य या समबन्ध को समझाने के वलए मानली िाने िाली विचार होती ह ै िो प्राय: अनमान पर आधाररत होती ह ै और इसकी कोई प्रमाविकता नहीं ु होती । इसको वसि या सही सावबत होने के वलए प्रमाि की िरूरत होती ह ै । िैस े- यह एक पररकलपना/प्राक्कलपना हो सकता ह ै वक

Quotes detected: **0.03%** id: **132**

‘सरकारी विद्यालयों म ें पढ़ने िाले बच्चे हमशे ा गरीब पररिार से समबन्ध रखते ह’

ै । यह िाक्य एक अनमानर्र ह ै । इसका कोई प्रमाि नहीं वदया गया ु ह ै । िब तक यह िाक्य सत्य या प्रमावित नही हो िाता, यह पररकल्पना ही कहलाएगी। v. वसान्त (Theories) :- यह प्रकार पि भ म ें िविभत वसान्त के अथभ से वर्न्न ह ै और ज्यादा ू व्यापक ह ै । िसै ा की इन दोनों के English नाम से स्पष्ट ह ै - पहला Principle ह ै िो वकसी विशेष वनयम को बनाता है, िब की दसरा Theory कछ ऐसे वसिन्तो (Principle), सप्रत्ययों ु ं ू तथा तथ्यों के समह को इवगत करता ह ै िो परोक्षरूप स े वकसी घटना, मानि व्यिहार, या ू ं अवधगम का आधार ह ै । िसै े-

Quotes detected: **0.01%** id: **133**

'डारविन का वसािन्त'

। यह बहत सारे प्रमावित तथ्यों पर आधाररत कछ Principle का समह ह ै । िो परोक्षरूप से मानि वनवमतभ िविभन के रूप का ु ू आधार बनता ह ै । vi. वनयम (Laws):- यह ऐसे तथ्यों का कथन ह ै िो सवनवश्चत पररवस्थवतयों या दशाओ म ें सदा ु ं घवटत होते ह ै । अभ्यास प्रश्न 3. Principle एि theory म ें अतर स्पष्ट कीविए । ं ं 4. तथ्य एि वनयम म ें क्या अतर ह ै ? ं ं 5.4.2 ववषयवस्त का भावात्मक घटक ु विषय िस्त का िि्रयात्मक घटक सिि्रत वकसी ि्री विषय िस्त के तीनों ज्ञान पक्षों म ें सबसे महत्िपि भ ह ै । ु ु ू ं वशक्षि के िक्ष उपागम म ें िि्रयात्मक पक्ष को सबसे ऊपर स्थान वदया गया ह ै । इसका कारि सिि्रत यह ृ ं ह ै वक सज्ञानात्मक पक्ष के तथ्य और सप्रत्यय एि वियात्मक पक्ष के कौशलों

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.deepawali.info/ka-se-gya-tak-k-se-… id: **134**

के ज्ञान से वकसी ि्री बालक ं ं ं का िीिन सपि भ नहीं हो सकता । िि्रयात्मक पक्ष के ज्ञान

से ही सज्ञानात्मक पक्ष और वियात्मक पक्ष के ू ं ं वशक्षि को अथभ पि भ बनाया िा सकता ह।ै मल रूप से िि्रयात्मक पक्ष म ें वकसी ि्री विषय से सबवधत ू ू ं ं मलयों और अवि्रवत्त को स्थान वदया िाता ह ै । प्राय: यह एक विमश भ का विषय बन िाता ह ै की क्या ृ ू हम मलयों की वशक्षा द े सकते ह ैं ? या वकसी विषय िस्त म ें मलयों को िास्तविक रुप से स्थान द े सकते ह ैं ू ु ू ? ऐसा वकया िा सकता ह ै क्योंवक मलय मल रूप से एक मनोिैज्ञ ावनक सप्रत्यय ह ै िो अपने आप म ें ज्ञान ू ू ं के तीनों खडो को समावहत करता ह ै । एक उदाहरि से हम इस बात को बड़ी आसानी से समझ सकते हैं, ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 56 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं िसै े -

Quotes detected: **0.01%** id: **135**

' सत्य वनष्ठा'

अपने आप म ें एक मलय ह ै । इस मलय म ें सज्ञानात्मक पक्ष ि्री ह,ै वियात्मक पक्ष ू ू ं ि्री ह ै एि िि्रयात्मक पक्ष ि्री ह ै । ं प्रश्न 1) सत्यवनष्ठा क्या ह ै ? प्रश्न 2) हम सत्यवनष्ठ क्यों बने ? - यह दोनों प्रश्न सत्य वनष्ठा के सज्ञानात्मक पक्ष को प्रवतवबवबत करते ह ैं । ं ं कथन 1) सत्य वनष्ठा के प्रवत आप की वकसी न वकसी प्रकार की िि्रना होनी चावहए । कथन 2) आपको कपटी होने के बिाए सत्य वनष्ठा की और अपनी िीिन को सचावलत करना ं चावहए । यह दोनों का कथन सत्य वनष्ठा के िि्रनात्मक पक्ष को प्रवतवबवबत करते ह ैं । ं कथन 3) आप एक सत्यवनष्ठ िीिन व्यतीत कर रह े ह ैं । कथन 3 सत्य वनष्ठा से सबवधत वियात्मक/ व्यिहाररक पक्ष को प्रवतवबवबत करता ह ै । ं ं ं 5.4.3 ववषयवस्त का वियात्मक घटक ु विषयिस्त के सदर् भ म ें वियात्मक घटक वकसी प्रकार के शारीररक विया को सके त नहीं करता ह,ै अवपत ु ु ं ं यह मानवसक वियाओ को दशाभता ह ै । चवक विषयिस्त का पाठ वकया िाता ह ै इसवलए इसम ें सयोवित ू ु ं ं ं होने िाले वियात्मक घटक विवर्न्न मानवसक वियाओ की ओर इवगत करते ह ै । यह सि्री मानवसक ं ं वियाए ँ सज्ञानात्मक विषयिस्त की आधारवशला पर उन्ही विषय िस्तओ को विवर्न्न प्रकार से विश्लेषि, ु ु ं ं सश्लेषि, सवनयोिन एि सगवठत कर नये ज्ञान की रचना करने म ें अपना योगदान दते े ह ै । विषयिस्त की ु ु ं ं ं वियात्मक घटकों के अतगभत कछ विशेष प्रकार की मानवसक वियाए ँ आती ह ै विन पर सवक्षप्त चचाभ हम ु ं ं नीचे करेंग े । अपसािी वचन्तन विया (Divergent Thinking Skill) यह एक ऐसी मानवसक विया ह ै िो वकसी समस्या या तथ्यों का विश्लेषि कर अनेक प्रकार के सि्रावित ं समाधान उपवस्थत करता ह ै । इस प्रकार के मानवसक विया की विशेषता यही ह ै वक इसके माध्यम से उत्पन्न हये सि्री समाधान अपने आप म ें अवद्वतीय होते ह ैं । और यह पि भ ज्ञान एि उपलब्ध सज्ञानात्मक ू ं ं विषयिस्त को आधार बनाकर वकया िाता ह ै । 1956 म ें पहली बार िे० पी० गीलफडभ (J.P. Gilford) ु ने

Quotes detected: **0%** id: **136**

'अपसारी वचन्तन'

शब्द का प्रयोग वकया था । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 57 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं सभाववत समाधान ं सभाववत समाधान ं उद्दीपक समस्या+सज्ञानात्मक तथ्य + ं मानवसक विया सभाववत समाधान सभाववत समाधान ं ं वचत्र 3: अपसािी वचतन विया ं अवभसािी वचन्तन विया (Convergent Thinking skill) इस प्रकार की मानवसक विया अपसारी वचन्तन विया के विपरीत बहत सारे सि्रावित समाधान म ें से कोई ं एक सटीक समाधान चनने की कौशल को दशाभता ह ै । इस विया के दौरान विवर्न्न समाधानों का, ु सबवन्धत तथ्यों के आधार पर तावकभ क तथा चरिबि तरीके से विश्लेषि, सश्लेषि एि वनयोिन कर एक ं ं ं मात्र सटीक समाधान का चयन वकया िाता ह ै । अथ िा तथ्य तथ्य समाधान तथ्य समाधान तथ्य B A तथ्य तथ्य वचत्र 4: अवभसािी

वचतन विया ं समस्या समाधान विया (Problem Solving Skill) यह एक विशषे प्रकार की मानवसक विया ह ै विसम ें समपि भ ध्यान वकसी समस्या कथन पर वदया िाता ह ै । ू इसम ें समस्या के विवर्न्न आयामों को वचवन्हत वकया िाता ह ै तावक समस्या को पिरूभ प से परर्ावषत ू वकया िा सके । एक बार समस्या परर्ावषत हो िाने के बाद उसके स्ावित समाधानों को खोिा िाता ं ह ै । इस िम के द्वारा प्रत्येक समस्या के वलए कई समाधानों का चरिबि तरीके से विश्लेषि कर मलयाकन ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 58 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं वकया िाता ह ै । मलयाकन के उपरान्त सबसे उपयक्त समाधान को ही समस्या के समाधान हते प्रयोग ू ु ु ं वकया िाता ह ै । समालोचनात्मक या समीक्षात्मक वचन्तन विया(Critical Thinking Skill) यह एक ऐसी मानवसक विया ह ै िो सज्ञानात्मक स्तर पर विषयिस्तओ का मलयाकन उनके सत्यता एि ु ू ं ं ं ं योनयता के आधार पर करता ह ै (Beyer,1985) । इस मानवसक विया के माध्यम से वकसी तथ्य, वसिान्त, वनयम, प्राक्कथन या सप्रत्यय की सत्यता एि योनयता को िाँचने के वलए पाँच प्रकार के कायों ं ं का सहारा वलया िाता ह ै । वचत्र म ें एक आदश भ समीक्षात्मक वचन्तन विया को दशाभया गया ह ै । शाविदक तकत शवि मल्याकन ू ं तावकत क ववश्ले षण समालोचनात्मक या समीक्षात्मक वचतन ं प्राक्कथन वनणतय वनधातिण परिक्षण वचत्र 5: समीक्षात्मक वचतन विया ं सजनात्मक वचन्तन विया (Creative Thinking Skill) ृ इस प्रकार की वचन्तन विया स े मौवलक एि नये ज्ञान का सिन होता ह।ै यह वचन्तन विया ्री सज्ञाना

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiparenting.firstcry.com/articles/k-aks… id: **137**

त्मक ृ ं ं विषयिस्तओ पर ही प्रयोग वकया िाता ह ै और पररिाम स्िरूप नया ज्ञान प्राप्त

Plagiarism detected: **0.05%** https://hi.wikipedia.org/wiki/के_एम_करिअप्पा + 2 resources! id: **138**

होता ह।ै एक सफल एि ु ं ं उद्दश्े यपि भ सिनात्मक वचन्तन के वलए प्रत्येक विषयिस्त में कछ विशेषताए ँी समावहत होनी चावहए िो ृ ू ु ु इस प्रकार

ह-ै a. विषयिस्त बालकों म ें िागरूकता का सचार करें । ु ं b. विषयिस्त बालकों म ें कौतहल उत्पन्न करने िाला होना चावहए । ु ु c. विषय िस्त बालकों की कलपनाशीलता का विकास करें । ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 59 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं d. विषयिस्त म ें धाराप्रिाह बनी रहनी चावहए । ु e. विषयिस्त म ें लचीलापन होना चावहए । ु f. प्रत्येक विषयिस्त की अपनी मौवलकता होनी चावहए । ु g. प्रत्येक विषयिस्त का पयाभप्त विस्तार होना चावहए । ु h. विषयिस्त म ें वनरतरता होनी चावहए । ु ं ऊपर िवितभ पाँचों मानवसक वियाए ँी वकसी ्री पाठयविषय म ें सवममवलत होने पर बालकों म ें उस विषय के ् प्रवत समझ बढ़ती ह ै । बालक वसफभ वकताबी ज्ञान नही प्राप्त करते हैं, अवपत उन वकताबी ज्ञानों पर इस ु मानवसक वियाओ का प्रयोग कर अवधगम का स्तर स्मरि से बोध एि बोध से मलयाकन के स्तर तक ले ू ं ं ं िा सकते ह ैं । यहाँ ध्यान दने े िाली बात यह ह ै वक विषयिस्त का वियात्मक घटक अपने आप म ें कोई ु पाठय ज्ञान नही ह ै । यह स्री वियात्मक घटक उन सम्िानाओ को दशाभता ह ै िो सज्ञानात्मक विषयिस्त ् ु ं ं ं के चयन एि उसके विस्तारि के समय विषय-विशेषज्ञ द्वारा तैयार वकया िाता ह ै । उदाहरि के रूप में-पाठ ं के मध्य

Quotes detected: **0.01%** id: **139**

‘स्िय करके ’,

Quotes detected: **0%** id: **140**

‘व्यिाहाररक परीक्षि’,

Quotes detected: **0.01%** id: **141**

‘सामवहक कायभ यिोिना’

या

Quotes detected: **0.01%** id: **142**

‘प्रोिक्े ट कायभ’

ऐसे अिसर ू ं होते ह ै िहाँ बालक के पास इन वियात्मक घटकों

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व… id: **143**

को प्रयोग करने का विकलप विषयिस्त के विस्तारि के ु समय वदया िाता ह।ै अभ्यास प्रश्न 5. अपसारी एि अवर्सारी वचतन विया म ें क्य

ा अतर ह ै ? ं ं ं 6. ज्ञान के िियात्मक पक्ष म ें मख्यतः कौन से सप्रत्ययों का समािशे होता ह ै ? ु ं 5.5 ववषयवस्तु अनुक्रम का वसद्ान्त वपछले अन्ाग म ें हम लोगों ने विषय के विषयिस्त के चयन के वलए वकन-वकन वबन्दओ का ध्यान रखा ु ु ं ु िाए इस बात पर चचाभ वकया ह ै । उसके बाद हमने दखे ा की वकसी चयवनत विषयिस्त म ें वकस प्रकार के ु ज्ञान का समािशे होना चावहए । इसके वलए हमने पाया वक वकसी अवधगम प्रविया को समपि भ सफल होने ू के वलए यह वनतात िरूरी ह ै वक विषयिस्त म ें हर उस घटक का समािेश होना चावहए िो मवस्तष्क के ु ं तीनों

Plagiarism detected: **0.04%** https://alphabetsinhindi.com/hindi-alphabets-wi… id: **144**

ज्ञान क्षेत्रों को समावहत कर सके । परन्त वसफभ विषयिस्त के चयन और उसके अतगतभ आने िाले ु ु ं ज्ञान क

े चयन से कम नहीं चलेगा । वकसी अवधगम प्रविया म ें विषयिस्त एक उवद्दपक के समान कायभ करता ह ै और इसके फलस्िरूप कोई ु अनविया होगा की नहीं, यह वनर्रभ करता ह ै उस उवद्दपक को कै से प्रस्तत वकया िा रहा ह ै । अथाभत ु ु विषयिस्त के सदर् भ म ें अगर दखे ा िाए तो हम कह सकते ह ैं वक ज्ञान के प्रत्येक खण्ड को विषयिस्त म ें ु ु ं कहीँ और कै से स्थान वदया गया ह ै यह महत्िपि भ ह ै । वकस ज्ञान खण्ड को कब बालकों के सामने प्रस्तत ू ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 60 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं वकया िाए और अन्य ज्ञान खण्डों के साथ कै से उसका समबध िोड़ा गया ह ै यह अत्यत महत्िपि भ ह ै । इस ू ं ं प्रविया को अनिमि कहा िाता ह ै । ु वकसी विषय िस्त के अनिमि के दौरान तीन मख्य प्रश्नों पर ध्यान अत्यत िरूरी ह-ै ु ु ु ं (a) क्या अनिमि बालकों के िरूरतों को परा कर पाने म ें सक्षम ह ै ? ु ू (b) क्या अनिमि विषयिस्त की वनरतरता को बनाये रखने म ें सक्षम ह ै ? ु ु ं (c) क्या अनिमि के माध्यम से पाठयिम/विषय के वलए वस्थर वकए गये उद्दश्े यों की िमिार प्रावप्त ् ु समर्ि ह ै ? अनिमि के वसिातो

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… id: **145**

को विस्तार पिकभ िानने से पहले हम लोगों को पाठयिम और अनिमि के ् ु ू ु ं सबधों को समझ लेना चावहए । वकसी पाठयिम की िब सरचना की िाती हो तो िह

एक रैवखक प्रविया ् ं ं ं के तहत वकया िाता ह,ै विसके अलग अलग स्तर पर अलग अलग उद्दश्े यपि भ कायभ वकया िाता ह,ै िसै -े ू सबसे पहले यह विश्लेषि वकया िाता ह ै वक पाठयिम की आिश्यकता क्यों ह ै । इसके बाद उन ् आिश्यकताओ को ध्यान म ें रखते हए पाठयिम के उद्दश्े यों का वनधाभरि वकया िाता ह ै । एक बार उद्दश्े य ् ं वनधाभररत हो िाने के बाद उद्दश्े य प्रावप्त के वलए सबवन्धत विषय ि विषयिस्त का चयन ि विस्तारि वकया ु ं िाता ह ै । इसके बाद पाठयिम का मलयाकन वकया िाता ह,ै िो समान्यत: एक लमबी ि दीघाभवमयादी ् ू ं प्रविया ह ै । एक बार मलयाकन होने के बाद वफर स े यही प्रविया अपनायी िाती ह ै नये पाठयिम के ् ू ं विकास के वलए । इस प्रविया को वलखना, कहना वितना सरल ह,ै व्यिहाररक धरातल पर यह प्रविया उतनी ही िविल ह।ै असल म ें अपने सवबधा के वलए हम लोग परे प्रविया को कछ चरिों म ें बाट दते े ह,ै परन्त ु ू ु ु ं िास्तविक रूप म ें इन चरिों को समपि भ रूप से अलग करना समर्ि नही ह,ै यह स र्ी एक दसरे से ऐसे िड़े ू ु ू होते ह ैं की व्यिहाररक रूप स े इन्ह े अलग करना समर्ि नही ह ै और उवचत र्ी नही ह।ै ऐसे वस्थवत म े िब पाठयिम की पररकलपना की िाती ह ै तो इसको प्रत्येक चरि म ें समीक्षा वकया िाता और िरूरी पररितभन ् वकया िाता ह।ै इसको आप ऐसे समवझए - प्रथम चरण-: पराने पाठयक्रम, नई सामाजिक रीजतया, चनौजतया, बदलाव एव उपलब्द ससाधन का ् ु ु ं ं जवश्लेषण यह पता करने के जलए की नई िरूरते क्या ह,ै जिसे पाठयक्रम

Plagiarism detected: **0.08%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व… + 5 resources! id: **146**

म े स्थान जदया िाना आवश्यक ह।ै ् जितीय चरण-: प्रथम चरण के आधार पर उद्दश्े यों का जनमााण [भाग-एक] - उद्दश्े यों को जवजिष्टता एव ं स्पष्टता प्रदान करने के जलए पनः प्रथम चरण की समीक्षा । ु ततीय चरण : जितीय चरण [भाग-एक] के आधार पर

जवषय वस्त चयन एव जवस्तारण, जिक्षण जवजध, ृ ु ं कौिल एव मलयाकन जवजध का चयन - उद्दश्े य एव जवषय वस्त म ें सतलन न हो पाने की जस्थजत म ें जितीय ू ु ु ं ं ं ं चरण की समीक्षा। चतथा चरण: जितीय चरण एव ततीय चरण का मलयाकन - वधै ता, रोचकता, उपयोजगता, साथाकता आजद ृ ु ू ं ं म ें कोई कमी होने पर पन: चरण एक से चरण चार तक दोहराना। ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 61 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं इससे यह पता चलता ह ै वक अनिमि के दौरान र्ी विषयिस्त के उद्दश्े यों म ें िरूरत के अनसार ु ु ु पररितभन, पररमािनभ या पररिधभन वकया िा सकता ह ै । अथाभत पाठयिम विस्तार की प्रविया म ें कोई चरि ् अवतम नहीं होता और िरूरत के अनसार वकसी र्ी चरि म ें समीक्षा कर बदलिा वकया िा सकता ह ै । ु ं वकसी र्ी विषयिस्त के अनिमि के पीछे कछ मान्यताए, पररसकलपना या पिाभनमान काम करती ह ै । ु ु ु ू ु ं ं हम लोगों को इन मान्यताओ / पिाभनमानों के बारे म ें समवचत िानकारी होनी चावहए, इससे अनिमि की ू ु ु ु ं प्रविया को व्यिहाररक रूप से प्रयोग करना आसान हो िाता ह ै । 5.5.1 अनिमण की आधािभत परिसकल्पनाए ँ ु ू ं विषय िस्त के अनिमि को अवधक उपयोगी बनाने के वलए मलरूप से तीन पररकलपनाओ की ु ु ू ं अिधारिा की गई ह ै । िह इस प्रकार ह ै - i. प्रथम परिकल्पना: विषयिस्त अनिमि के दौरान प्राथवमक (प्रारवमर्क) स्तर पर स्थावपत ु ु वकए गए

Plagiarism detected: **0.1%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 2 resources! id: **147**

सामान्य उद्दश्े य उसके बाद के स्तर के उद्दश्े यों ि विषय सामग्री को प्रर्ावित करेंग े । ं िसै े वकसी पाठयिम के वलए बनाए गए सामान्य उद्दश्े य बाद म ें उस पाठयिम के अतगतभ आने ् ् ं िाले विषयों के सामान्य उद्दश्े यों को प्रर्ावित करता है । अगले चरि पर विषय का सामान्य

उद्दश्े य उस विषय के अतगभत आने िाले प्रकरिों, इकाईयों के विवशष्ट उद्दश्े यों ि विषयिस्त को ु ं ं प्रर्ावित करेंग े । ii. वितीय परिकल्पना: अवधगम प्रविया के िम म ें तय वकए गए विषयिस्त ि कौशल बालक ु ं सिोकष्ट अवधगम िातािर म ें

अवितभ करते ह ैं । परन्त इस परे िम म ें बालक कछ ऐसे ्री ृ ु ू ु कौशल प्राप्त करते ह ैं या विकवसत कर लेते ह ै विसकी पहले से कोई कलपना नहीं की गई थी, इसवलए यह िरूरी ह ै की सामान्य उद्दश्े यों या लक्ष्यों का िब वनमाभि वकया िाता ह,ै उस समय विषयिस्त के तीनों ज्ञान क्षेत्रों को विषयसामाग्री म ें अगीर्त वकया िाये तावक बालकों का ु ू ं िसिांगी विकास हो सके । इसवलए विषयिस्त के अनिमि के समय प्रत्येक ज्ञान खण्ड में ु ु सज्ञानात्मक िए वियात्मक घटकों का समिोश होना चावहए विससे बालकों का व्यवक्तगत, ं ं सामाविक आयामों का विकास हो सके । iii. ततीय परिकल्पना: अवधगम प्रविया के वनधारभ ि के समय अवधगम सीमा का ्री ध्यान रखना ृ अत्यन्त आिश्यक ह ै । अवधगम के समय कछ विषयिस्त ऐसे होते ह ैं िो विषय का आधार होत े ु ु ह ैं और इनका अवधगम होना आिश्यक है । इसके विपरीत कछ ऐसे विषयिस्त

Plagiarism detected: **0.16%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व… + 6 resources! id: **148**

्री होते ह ैं ु ु विनका प्रयोिन विषय के विस्तारररत समझ के वलए आिश्यक है । इन दोनों प्रकार के विषयिस्त ु म ें पयाभप्त विर्दे होना चावहए तावक आधारर्त विषय सामग्री को स्री बालकों के अवधगम के ू वलए उपलब्ध कराया िा सके िए अन्य प्रकार के विषय सामग्री का अवधगम बालकों के ं मानवसक स्तर के अनसार हो सकें । ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 62 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 5.5.2 अनिमण ववववधयाँ (Sequencing Technique) ु वकसी ्री प्रकार के अनिमि विवध का एकमात्र उद्दश्े य होता ह

ै वक अनिमि प्रविया के माध्यम से िह ु ु शक्षै विक उद्दश्े यों िए बालकों के अवधगम वियाओ के मध्य एक समबन्ध स्थावपत कर सके । सामान्यत: ं ं तीन प्रकार के अनिमि विवध का प्रचलन ह ै । अत: इस अन्राग म ें हम लोग िमानसार इन विवधयों पर ु ु ु चचाभ करेंग- ववषयवस्त ववश्ले षण वववध (Content Analysis Technique)- ु वकसी ्री विषय िस्त के अनिमि प्रविया दौरान यह विवध विषयिस्त की आतररक सरचना िए ु ु ु ं ं ं सज्ञानात्मक प्रविया, दोनों को समान महत्ि प्रदान करती ह ै विससे एक अथभपि भ अवधगम प्रविया घवटत ू ं हो सके । वकसी विषय िस्त की आतररक सरचना विषय िस्त को स्मरि करने की िए उसम े समझ बनाने में ु ु ं ं ं सहायक होती ह ै विससे अवधगम में वनरतरता बनी रह े । परन्त विषय िस्त की तावकभ क सरचना के साथ ु ु ं ं ऐसा नहीं होता । इसवलए तावकभ क सरचना के माध्यम से अथभपि भ अवधगम सवनवश्चत करने के वलए अनिम ू ु ु ं प्रविया का पालन करना आिश्यक हो िाता ह ै । विषय िस्त विश्लेषि विवध से अनिम के दौरान परे ु ु ू प्रविया को तीन चरिों से होकर िाना पड़ता ह ै । a. बालकों के अवधगम के वलए विषय िस्त के अवत महत्िपिभ धरी की पहचान करना िए उसको ु ू ु ं वचन्हावकत करना । ं b. विषय िस्त से समबवन्धत स्री ज्ञान खडों की पहचान ि वचन्हाकि िए उनका सबधात्मक ु ं ं ं ं ं पदानिम के सव्यिस्थापन । ु ु c. स्री ज्ञानखण्डों का ज्ञान व्यिस्थापन वसिान्तों के आधार पर अनिमि । ु उपयभक्त तीनों चरिों म ें प्रथम चरि को हम लोग प्रायः पाठयिम के उद्दश्े यों को वनमाभि करते समय िए ृ ु ं विषय िस्त के चयन के समय ही परा कर लेते ह ैं । वद्वतीय िए ततीय चरिों को प्रायः अलग इकाई के रूप ृ ु ू ं म ें समझ पाना बहत ही कवठन होता ह,ै क्योंवक दोनों चरि आपस म ें अवतव्याप्त रहते ह ैं । इन दोनो चरिों को अलग से वदखाने से अवप्राय वसफभ इतना ह ै की यह समझा िा सके वक इस प्रविया म ें अनिमि कै से ु हो रहा ह ै । J.D. Novak (1988-1990) ने वबन्दिार इन दोनो चरि के कायों को समझाने की कोवशश की ह,ै िो ु इस प्रकार ह ै - 1. कोई ्री बालक एक अथभपि भ अवधगम प्रविया म ें उसी शतभ पर सह्रावगता करता ह ै िब नया ज्ञान ू खण्ड (सप्रत्यय ्री कहा िा सकता ह)ै उसके बौविक सरचना म ें पहले से मौिद समप्रत्ययों के साथ ू ं ं समबवन्धत हो िए िह उनको समायोवित कर सके । ं 2. प्रथम वबन्द को सही प्रमावित करने के वलए विषय िस्त का अनिमि इस प्रकार होना चावहए विससे ु ु ु सामान्य िए समायोवित योनय सप्रत्यय सबसे पहले बालकों के सामने आये । यह बालकों के ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 63 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं बौविक सरचना म ें होन े िाले समायोिन क्षमता को बढ़ता ह ै िो आग े आने िाले सप्रत्ययों के ं ं अवधगम म ें सहायक वसि होता ह।ै 3. बालकों के बौविक सरचना में पाये िाने िाले सप्रत्ययों िए नए अवधगवमत होने िाले सप्रत्ययों म ें ं ं ं ं सामिस्य बनाये रखने के वलए यह िरूरी ह ै वक विषय िस्त का अनिमि समान्य से विवशष्ट की ु ु ं ओर हो । इससे दो फायद े होते ह ैं । प्रथमतः नये सप्रत्ययों को पहले से मौिद सप्रत्ययों के साथ समबध ू ं ं ं स्थावपत करने म ें आसानी होती ह ै िए वद्वतीयः बाद म ें सप्रत्ययों के िवमक विर्दे न में सहायता ं ं वमलती ह ै । 4. वद्वतीय वबन्द को अगर सही तरीके से प्रयोग वकया िाए तो इसके बाद वसफभ बौविक सरचना म ें ं ु स्थावपत सप्रत्ययों के साथ नय े सप्रत्ययों का समबन्ध दशाभने से ही बालक अथभपि भ अवधगम प्रविया ू ं ं की ओर चल पड़ेगा । 5. प्रत्येक समान्य, समायोिनयोनय िए महत्िपि भ सप्रत्ययों को प्रस्तत करते समय पयाभप्त सबवन्धत ू ु ं ं ं उदाहरिों का प्रायोग आिश्यक ह,ै यही उदाहरि मल रूप से नये सप्रत्ययों को पराने सप्रत्ययों के ू ु ं ं साथ िोड़ता ह ै । वचत्र 6 से हम े विषय िस्त विश्लेषि विवध म ें ज्ञान खण्डों म ें आपसी समबन्धों को समझने म ें सहायता ु वमलेगी । अवधक सामान्यीकत ज्ञान खड ृ ं प्रथम चिण सम्बन्ध वितीय चिण (िवमक ववबिेन) सम्बन्ध ततीय चिण (िवमक ृ ववभिेन) वचत्र 6: सप्रत्यय पिानिम वनमातण ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 64 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं कायत-ववश्ले षण वववध (Task Analysis Technique) इस विवध म ें विषयिस्त विश्लेषि के अनरूप विषयिस्त मख्य नहीं होता ह,ै अवपत इसके अनसार िह ु ु ु ु ु ु स्री कायभ आिश्यक ह ै िो स्रावित वनष्कष भ (वनष्कष)भ को प्र्रावित करते हो । ं इस विवध के अनसार, कोई ्री विषयिस्त िए ज्ञानखण्ड सरल िए िवटल मानवसक कौशलों का ु ु ं ं समच्चय ह,ै विसके सहारे एक अथभपि भ अवधगम समि्र ह।ै इन मानवसक कौशलों म े िो सरल कौशल ह ै ु ू ि े आधारर्त कौशल होते ह ै िए िवटल कौशल इन्ही सरल कौशलों से बनते ह।ैं इसवलये यह विवध ू ं कहता ह ै वक अवधगम के वलए प्राथवमक रूप से सरल मानवसक कौशलों का चयन अवधक प्रि्री

Plagiarism detected: **0.12%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 7 resources! id: **149**

होता ह।ै िहीं िविटल कौशलों के अवधगम के वलए उनको सरल कौशलों के रूप म ें विश्लेवषत करना और वफर उनका अवधगम करना प्रि्ृ ी होता ह।ै अत: हम कह सकते हैं, यह विवध विषयिस्त म ें प्रत्येक ज्ञानखण्ड को कौशलों के रूप म ें दशाभती ह।ै ु अथाभत बालकों को क्या सीखना ह,ै यह विषयिस्त नही, मानवसक कौशलों के अनसार तय वकया िाता ु ु ह।ै अत: प्रत्येक

ज्ञानखण्ड के वलए कछ मानवसक कौशलों का चयन वकया िाता ह ै एि इन्ही मानवसक ु ं कौशलों को अिनभ सबवन्धत विषयिस्त के अवधगम को दशाभता ह ै । ु ं यह विवध विषयिस्त अनिमि के वलए तीन स्तरों की बात करता ह,ै यथा- ु ु a. उन स्ी मानवसक कौशलों का वचह्ाकन िो बालकों के अवधगम के वलए िरूरी हो एि प्रत्येक ं ं ं बालक के वलए अिनभ करना आिश्यक हो । b. स्ी मानवसक कौशलों को यथास्िं वनमन स्तरीय मानवसक कौशलों म ें वि्ावित करना । ं c. प्राप्त मानवसक कौशलों का सरल से िविटल (वनमन स्तरीय से उच्चस्तरीय) की ओर अनिमि । ु कायभ विश्लेषि विवध का आिि यह ह ै वक यह विवध अ्ी ्ी इतनी विकवसत नही हो पायी ह ै विससे ु प्रत्येक विषयिस्त , प्रकरिों एि तत्सबधी मानवसक कौशलों का सही एि पयाभप्त अनिमि वकया िा ु ु ं ं ं ं सके , इसके िबाद यह विवध कछ विशेष

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 2 resources! id: **150**

प्रकार के कौशलों (मानवसक, व्यािहाररक) के विकास के वलए ू ु उपोयोगी वसि हो सकती ह।ै दरअसल कछ अवधगम प्रवियाओ को मानवसक कौशलों के रूप म

ें पररिवतभत कर अनिवमत करना सरल ु ु ं होता ह,ै परन्त यह स्ी अवधगम प्रवियाओ के वलए सही प्रतीत नही होता ह ै । इसवलए समपिभ ु ू ं विषयिस्त, विशेषत: सप्रत्ययों, मलयों के वलए इस विवध का उपयोग गलत वसि हो सकता ह ै । ु ू ं अनिमण का वविस्िाण वसिान्त (Elaboration Technique) ु विस्तारि वसिान्त मख्यत: विषयिस्त विश्लेषि विवध एि कायभ विश्लेषि विवध को एक सामिस्यपिभ ु ु ू ं ं रूपरेखा के तहत एकीकरि करने की प्रविया ह ै विसके द्वारा इन दोनों विवधयो की कवमयों को दर वकया ु िाता ह ै इस एकीकरि प्रविया के माध्यम स े यह विवध विषयिस्त के अनिमि की एक विशषे विस्ताररत ु ु िम को प्रवतपावदत करती ह।ै

Quotes detected: **0.01%** id: **151**

'विस्तारन िम का वसिान्त'

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **152**

इस प्रकार ह:ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 65 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं

Quotes detected: **0.06%** id: **153**

'अजधगम वस्तओ का क्रम इस इस प्रकार से होना चाजहए जक सरल एव सावभा ौजमक इकाईयों ु ं ं को पहला स्थान प्राप्त हो एव धीरे -धीरे ज्यादा िजिल एव जवस्ताररत इकाईयों की ओर अनक्रमण हो'

। ु ं ं इस वसिान्त के अनसार वकसी विषयिस्त के मख्य वबन्दओ से सबवन्धत सािभ्ौवमक दृवष्टकोि को सबसे ु ु ु ं ं ु पहले बालकों के सामने प्रस्तत करना चावहए । इसके पश्चात इस दृवष्टकोि के प्रत्येक पहल का ु ू विस्तरीकरि वकया िाना चाहोए, इस दौरान बीच-बीच म ें सािभ ौवमक दृवष्टकोि की ्ी चचाभ कर लेनी चावहए, ऐसा करने से विस्तरीकरि की प्रविया समि होती ह ै । एक बार प्रथम स्तर का विस्तारीकरि हो ृ िाने के बाद इस स्तर को पन: वद्वतीय चरि के वलए प्रारम्् वबन्द मान वलया िाता ह ै । इस प्रविया को ु ु तब तक दोहराया िाता ह ै िब तक

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 3 resources! id: **154**

प्रत्येक वबन्दओ का विस्तरीकरि समपि भ न हो िाए एि िविछत ू ं ं ं ु िविटलतास्तर प्राप्त न हो िाए । विस्तारीकरि के प्रत्येक

चरि म ें विस्तारि अनिमि का साराश एि दो चरिों के वलए उपयक्त ु ु ं ं समन्ियक का िािनभ होना आिश्यक ह ै । साराश िाले वहस्से म ें सबवन्धत चरि म ें वदये गए ज्ञान खण्डों का ं ं पन: अिलोकन वकया िाता ह ै । समन्ियक यह दशाभता ह ै वक उक्त चरि म ें प्रयक्त ज्ञानखण्ड आपस म ें एि ु ु ं अन्य चरि के साथ वकस

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **155**

प्रकार का समबन्ध रखते ह।ै वचत्र 7 से अनिमि के विस्तारि वसिान्त को इस प्रकार

दशाभया िा सकता ह।ै ु प्रथम चिण वविस्िाण वितीय चिण वविस्िाण एडवास आगेनाइजि ं वववववधतत एडवास्ड ं आगेनाइजि (सामान्य एव ं (सिााश एव सावतभौवमक सप्रत्यय) ं ं ं समन्वयक) वचत्र 7: वविस्िाण िम का प्रारूप विषयिस्त के विस्तारि के वलए मख्य वबन्दओ एि सबवन्धत सािभ ौवमक दृवष्टकोि के चयन के वलए ु ु ं ं ं ु वनमनवलवखत वबन्दओ को ध्यान म ें रखना आिश्यक ह-ै ं ु i. इसम ें स्ी मख्य वबदओ को समावहत नहीं करना चावहए, अवपत सबसे प्रासवगक वबदओ को ु ु ं ं ं ं ं ु ु सवममवलत वकया िाना चावहए । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 66 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं ii. प्रत्येक चरि म ें ज्ञान खण्डों का चयन ि विस्तारि ऐसा होना चावहए, तावक अगले चरि में उन ज्ञान खण्डों के िविटलतास्तर एि विस्तारि म ें

बढ़ोत्तरी हो । ं iii. प्रत्येक चरि के वलए प्रयक्त होने िाले सिार्भ ौवमक सप्रत्यय ऐसे होने चावहए की उन्ह ें उदाहरि, ु ं अभ्यास एि अनर्ाििरन्य दृष्टातों के माध्यम से पररर्ावषत एि िवितभ वकया िा सके , तर्ी यह ु ं ं बालकों के अथभपि भ होग ें । ू अभ्यास प्रश्न 7. विषय िस्त

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… id: **156**

विश्लेषि विवध म ें विषयिस्त के अनिमि की वदशा क्या होनी चावहए ? ु ु ु 8. कायभ विश्लेष

ि विवध म ें अनिमि की इकाई क्या होती ह ै ? ु 5.6 सारांश वकसी पाठयिम म ें विषयिस्त का चयन उसकी िधै ता, साथभकता, सतलन, स्ि य समपितभ ा, रोचकता, ृ ु ु ू ं ं उपयोवगता एि साध्यता के ऊपर वनर्रभ करता ह ै । विषय िस्त के चयन के दौरान विषय िस्तओ म ें ज्ञान के ु ु ं ं तीनों पक्षों से समबवधत घटकों का यथासर्ि समावयेन वकया िाता ह ै । इन सर्ी घटकों को मख्यत: तीन ु ं ं विवधयों के माध्यम से अनिवमत वकया िाता ह ै , यथा – विषय िस्त विश्लेषि विवध, कायभ-विश्लेषि ु ु विवध एि

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 2 resources! id: **157**

विस्तारि विवध । इस परे प्रविया के दौरान प्रत्येक ज्ञान खड एि मानवसक वियाओ को सरल से ु ं ं ं ं िवटल एि सामान्य

से विवशष्ट की ओर अनिवमत वकया िाता ह ै । ु ं 5.7 शब्दावली 1. सज्ञानात्मक घटक- मनोिज्ञै ावनक समप्रत्यय के अनसार वकसी र्ी बौविक वियायों को वनयवत्रत ु ं ं एि वनदवे शत करने िाला घटक ं 2. िर्ात्मक घटक -मनोिज्ञावनक समप्रत्यय के अनसार वकसी र्ी व्यवक्त के मलयाबोध, ु ु कलात्मकता, इच्छा आवद को वनयवत्रत एि वनदवे शत करने िाला घटक ं ं 3. वियात्मक घटक -मनोिज्ञै ावनक समप्रत्यय के अनसार वकसी र्ी शारीररक वियायों को वनयवत्रत ु ं एि वनदवे शत करने िाला घटक ं 4. अनिम - विषयिस्त के िवटलता एि स्तर को ध्यान म ें रखती हए उनको वकसी एक पदानिम ु ु ु ं के अनसार सवज्ित करना ु 5. िवमक विर्दे न - स्तर बड़ने के साथ साथ विषयिस्त के िवटलता स्तर को बढ़ाते हए उन्ह ें ु पिभ ती ज्ञान खडो के साथ िोड़े रखना ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 67 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 5.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. िधै ता, साथभकता, सतलन, स्ि य समपितभ ा, रोचकता, उपयोवगता, साध्यता । ु ू ं ं 2. सज्ञानात्मक पक्ष, िर्ात्मक पक्ष एि वियात्मक पक्ष । ं ं 3. principle एक विशषे वनयम होता ह,ै िबवक theory बनता ह ै principle, सप्रत्यय एि तथ्यों ं ं के समच्चय से िो वकसी अवधगम का आधार होता ह ै । ु 4. तथ्य एक कलपना ह ै विसका सत्यापन वकया िा सकता ह ै । िबवक ऐसे तथ्यों का कथन ह ै िो सवनवश्चत पररवस्थवत म ें सदा घवटत होते ह ै । ु 5. अपसारी वचतन म ें तथ्यों के विश्लेषि से अनेक प्रकार के समाधान प्राप्त होते िो प्राय: सही होते ं ह ै । िबवक अवर्सारी वचतन में तथ्यों को विश्लेवषत कर उपलब्ध अनेक समाधानों म ें से सही ं समाधान का चयन वकया िाता ह ै । 6. मलय एि अविर्वत्त ृ ू ं 7. सामान्य से विवशष्ट की ओर 8. मानवसक विया 5.9 सन्दर् भ ग्रन्थ सची ू

1. Content theory of motivation. Retrieved from www.speechmastery.com 2. Corpuz, B.B. & Salandanan, G. (2008). Principles of Teaching I. retrieved from www.slideshare.com 3. Miguel Zapata Ros. (2006). Sequencing of contents and learning objects – parts II as translation by Nora Lizenberg. RED. Revista de Educación a Distancia, V(14),1-15 4. O.Venugopalan (2007). Maslow's theory of motivation its relevance and application among non-managerial employees of selected public and private sector undertakings in Kerala. Thesis of Department of Commerce & Management Studies, University of Calicut. 5. Rodger Stotz & Bruce Bolger (n.d.). Content and process theories of motivation. Underlying Principles Series. 6. Behan, Z. (2016). Selection of content and organization of learning experiences. Retrieved from www.slideshare.com

उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 68 ु

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… id: **158**

शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 5.10 वनबधात्मक प्रश्न ं 1. विषय िस्त विश्लेष

ि विवध एि विस्तारि वसित विवध का विस्तत िणिनभ करते हए इन दोनों ृ ु ु ं ं के पारस्पररक समबन्ध को स्थावपत कीविए । 2. वकसी विषय के वकसी र्ी प्रकरि का अविर्मि विषय िस्त विश्लेषि विवध के माध्यम से ु कीविए । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 69 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं खण्ड 2 Block 2 उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 70 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं इकाई 1- मानविकी ज्ञान की एक शाखा के रूप में, उनका विद्यालयी पाठ्यचया में स्थान, शांवत वशक्षा एि विविधता के वलए सम्मान के बीजारोपण के सन्दि में मानविकी में त सम्मिवलत विषयों से सम्बंवधत मुद्द और चुनौवतया ाँ े Humanities as a Branch of Knowledge, their Place in the School Curriculum.,Issues and Challenges of the Subjects included in Humanities with respect to their role in Peace Education and Inculcation of REspect for Diversities 1.1 प्रस्त िाना 1.2 उद्दश्े य 1.3 मानविकी ज्ञान की एक शाखा के रूप में 1.4 मानविकी विषयों का विद्यालयी पाठयचयाभ में स्थान ृ 1.5 मानविकी से िड़े मद्द े और चनौवतयााँ ु ु ु 1.6 शावत वशक्षा एि विविधता के वलए सममान के बीिारोपि के सन्दर्भ में मानविकी में ं ं सवममवलत विषयों से समबवधत मद्द े और चनौवतयााँ ु ु ं 1.7 साराश ं 1.8 शब्दािली 1.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1.10 सदर्भ ग्रथ सची ू ं ं 1.11 वनबधात्मक प्रश्न ं 1.1 प्रस्त ावना मानविकी को पररर्ावषत करते हए कहा िा सकता ह ै वक यह मानि सस्कवत का अध्ययन ह ै िसै े ृ ं सावहत्य, दशनभ , इवतहास, कला, सगीत इत्यावद। यह िह शवै क्षक शाखा ह ै िो मानि

सस्कवत का अध्ययन ृ ं ं करती ह।ै मानविकी म ें उन विषयों को सवममवलत वकया िाता है िो मानि सस्कवत का अध्ययन करते ह।ैं ृ ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 71 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं मध्य यग

Plagiarism detected: **0.16%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 8 resources! id: **159**

के दौरान मानविकी शब्द को दिे त्िे के विपरीत म ें वलया िाता था और विसे अब क्लावसक्स के ु रूप म ें दखे ा िाता ह।ै अिा के समय म ें मानविकी को प्राकवतक, ौवतक और क ॉ्री–क ॉ्री सामाविक ृ विज्ञान के विपरीताथभ के रूप म ें वलया िाता ह।ै मानविकी और प्राकवतक विज्ञान को िो चीज़ अलग ृ करती ह ै िह मानविकी के अथभ को स्पष्ट करती है। इसकी विषय सामग्री प्राकवतक विज्ञानों से मानविकी ृ को अलग ही नहीं करती बवलक इसम ें प्रश्नों को पछने और दखे ने का तरीका ॉ्री इसे प्राकवतक विज्ञान

से ृ ू अलग करता ह।ै िहाँ मानविकी वकसी ॉ्री चीज़ के अथभ, उद्दश्े य और लक्ष्यों को समझने पर बल दते ी ह ै िहीं इसके आग े वकसी ॉ्री ऐवतहावसक या सामाविक घटना के वलए समालोचना का िा्र, सत्य प्रावप्त हते ु या सत्य की खिो के वलय े व्याख्यात्मक तरीका इसे प्राकवतक विज्ञान से अलग करता ह ै । मानविकी कछ ृ ु विषयों को समावहत करते हए मात्र परीक्षाओ को उत्ती भ करने से ही नहीं समबवन्धत बवलक मलयों के ू ं विकास के वलए ॉ्री महत्िपि भ ह ै । शावत वशक्षा और विविधता को स्िीकार करने के वलए दवष्ट को ू ं व्यापक करने म ें इसकी महत्िपि भ वूमका ह ै । प्रस्तत पाठ म ें मानविकी के इन्हीं पहलओ के िििभ का ू ू ु ू ं प्रयास वकया गया ह ै । 1.2 उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप- 1. मानविकी को ज्ञान की एक शाखा के रूप म ें परर ॉ्रावषत कर सकें गे। 2. मानविकी के अतगतभ शावमल वकए िाने िाले विषयों का िििभन कर सकें ग।े ं 3. मानविकी विषयों के पाठयचयाभ म ें स्थान की वििेचे ना कर सकें गे। ृ 4. शावत वशक्षा एि विविधता हते मानविकी विषयों से िड़े मद्दों और चनौवतयों को स्पष्ट कर सकें ग।े ु ु ु ु ं ं 1.3 मानववकी ज्ञान की एक शाखा के रूप म ें मानविकी को मानि के अनिा्रों और प्रयोगों से वकस प्रकार वचवत्रत करते ह;ें के अध्ययन के रुप म ें ॉ्री ु परर ॉ्रावषत वकया िा सकता ह।ै इस पथ्िी पर िब से मनष्य का विकास हआ ह ै तब से हम इस ससार को ृ ु ं समझने एि इस समझ को वलपीबि करने के वलए ॉ्राषा, सावहत्य, इवतहास, दशनभ , धम,भ कला, सगीत ं ं इत्यावद का उपयोग वकया ह।ै अवर्व्यवक्त के विन माध्यमों का उपयोग मनष्यों ने खद को अवर्व्यक्त ु ु करने के वलए वकया िे े माध्यम कछ विषयों का रूप ले वलए और परपरागत रूप म ें ये सारे विषय ु ं मानविकी के अतगतभ आते ह।ैं माननीय अनिा्रों के इन दस्तिो ों का ज्ञान उन लोगों से िड़े होने के िा्र ु ु ं को महसस करने का अिसर प्रदान करता ह ै िो हमसे पहले आये थे अथाभत िो हमारे पिभि थे' साथ ही ू ू साथ उन लोगों से ॉ्री िो हमारे समकालीन ह।ैं मानविकी शब्द की उत्पवत्त पनिाभगरि लैवटन अवर्व्यवक्त Studia humanities या "study ु ऑफ़ humanities" से हई ह,ै इसका शावब्दक अथभ "सस्कवत, विनय और वशक्षा" से ह।ै 15 िीं सदी में ृ ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 72 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं इसका प्रयोग व्याकरि, कविता, बयानबािी, इवतहास, दशभन और नैवतकशास्त्र के वलए वकया िाता था। अतः मानविकी के अतगतभ िे े स ॉ्री विषय आते ह ैं िो विज्ञानेत्तर हों या िो मनष्य िावत से समबवधत हों। ु ं ं मानविकी को विविन्न विद्वानों ने अपने-अपने तरीके से परर ॉ्रावषत वकया हैै एडम्स (1976) के अनसार,

Quotes detected: **0.05%** id: **160**

"मानविकी इवतहास सिा्रतः गोल, शास्त्रीय अध्ययन के बचे ॉ्राग, अग्रिी ु ू ं ं के कछ पहलओ और आधवनक ॉ्राषाओ, धावमकभ वशक्षा और ऐसे विषयों को सवममवलत करता ह।ै "

ु ु ु ं ं Wallace (2008) मानविकी को परर ॉ्रावषत करते हए वलखते ह ैं वक "यह एक सामवहक शब्द ह ै िो ू शक्षै विक विषयों या

Plagiarism detected: **0.04%** https://alphabetsinhindi.com/hindi-alphabets-wi… id: **161**

क्षेत्रों की एक श्रेिी के वलए प्रयक्त वकया िाता ह ै तथा, िो मनष्यों के विकास, ु ु उपलवब्धयों, व्यिहार, सगठन या वितरि के ज्ञान

पर विकवसत होता ह।ै ं Blyth (1990) ने मानविकी को परर ॉ्रावषत करते हए कहा ह ै वक "प्राथवमक पाठयचया भ का िह ॉ्राग िो ृ िीवित और स्थान विशषे पर कायभशील और समहों और समिोों, ति और िितभमान से आपस म ें िड़े हए ू ू ु व्यवक्तयों से समबवधत ह,ै " मानविकी ह।ै ं स्कलस काउवन्सल (1965) ने मानविकी को इस प्रकार परर ॉ्रावषत वकया ह ै "विविन्न विषयों का समह ू ू िो मख्यतः परुषों और वस्त्रयों से उनके िातािरि, उनके समदाय और उनके स्िय के ज्ञान से समबवधत ु ु ु ं ं रहता ह,ै मानविकी के अतगभत आता ह।ै " ं अभ्यास प्रश्न 1. मानविकी शब्द की उत्पवत्त वकस शब्द से हई ह?ै 2. Blyth ने मानविकी को वकस प्रकार परर ॉ्रावषत वकया ह?ै 1.4 मानववकी ववषयों का ववद्यालयी पाठ्यचया म स्थान ें मानविकी के अतगतभ विविन्न विषय आते ह,ैं नेशनल एडोमेंट ऑफ़ ह्यमवनटी के अनसार विन विषयों को ु ं ं ू मानविकी के अतगतभ वलया िाता ह ै िे े वनमनवलवखत ह;ैं ं □ आधवनक ॉ्राषायें ु □ शास्त्रीय ॉ्राषायें □ ॉ्राषा शास्त्र □ सावहत्य □ इवतहास □ विवधशास्त्र/ न्यायशास्त्र □ दशनभ शास्त्र उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 73 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं □ परातत्िविज्ञान ु परन्त िास्ति म ें मानविकी मात्र इन विषयों तक ही सीवमत नहीं बवलक कई अन्य विषय ॉ्री मानविकी के ु अतगतभ सवममवलत वकये िाते ह।ैं मानविकी का पाठयिम म ें 1960 के पश्चात बहत पररितभन आया ह।ै ृ ृ ं मानविकी म ें कछ अन्य विषयों को शावमल वकया गया ह ै िो अपेक्षाकत नए ह ैं विनम,ें मवहला वशक्षा, ृ ु पयाभिरि वशक्षा, बहसास्कवतक वशक्षा, सास्कवतक वशक्षा, वफलम और मीवडया वशक्षा, कोलोवनयल और ृ ृ ं ं पोस्ट-कोलोवनयल वशक्षा, वचवकत्सकीय

मानविकी इत्यावद सवममवलत ह।ैं विद्यालयी स्तर पर विन विषयों को मानविकी म ें सवममवलत वकया िाता ह ै ि े उपयभक्त विषयों से थोड़े ु अलग ह।ैं उपयभक्त विषय मख्य रूप स े उच्च कक्षाओ म ें पढ़ाये िाते ह।ैं विद्यालयी स्तर पर सवममवलत ु ु ं मानविकी के अतगतभ आने िाले विषयों का िििनभ वनममनित ह ै । ं भाषा औि भाषा वविज्ञान ्राषा के िैज्ञावनक अध्ययन को ्रा

Plagiarism detected: **0.14%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 4 resources! id: **162**

षा विज्ञान के रूप म ें िाना िाता ह।ै आम तौर पर ्राषा विज्ञान को एक सज्ञानात्मक विज्ञान से िुड़ा माना िाता ह ै िहीं ्राषा मानविकी से अवधक िुड़ा ह।ै विद्यालयी स्तर पर ु ु ं ्राषा विज्ञान हमारे पाठयिम का वहस्सा नहीं होता ह।ै ्राषा विज्ञान को उच्च स्तर पर पाठयचयाभ म ें ् ् सवममवलत कर वलया िाता ह ै िहीं ्राषा प्रारवर्क कक्षाओ में हमारे पाठयचयाभ का ्राग होती ह ै और यह ् ं ं मात्र एक विषय के रूप म

ें ही नहीं होती बवलक अन्य विषयों के अध्ययन के वलए आधार ्री प्रदान करती ह ै । ्राषा के अिर्ाि म ें व्यवक्त वकसी ्री विषय का अध्ययन नहीं कर सकता ह ै तो यवद ्राषा को पाठयचयाभ की रीढ़ की हडडी कहा िाए तो यह अवतश्योवक्त नहीं होगी । यह मानविकी का के न्द्रीय विषय ् ् ह ै । सावहत्य सामान्य तौर पर सावहत्य का अथभ कविताओ, कहावनयों, उपन्यासों इत्यावद से लगाते ह।ैं सावहत्य एक ऐसा ं शब्द ह ै विसकी कोई सिभमान्य परर्राषा नहीं ह ै परन्त इसे विस रूप म ें परर्रावषत वकया िाता ह ै उनमे ु स्री वलवखत सामवग्रयों, रचनाओ, शास्त्र समहों इत्यावद को शावमल वकया िाता ह।ै सावहत्य ्राषा से ू ं अलग ह,ै यह और बात ह ै वक ्राषा की वशक्षा दने े के वलए सावहवत्यक सामवग्रयों का प्रयोग वकया िाता ह।ै इन सावहवत्यक सामवग्रयों में मात्र वलवखत सामवग्रया ही नहीं ली िाती ह ैं बवलक गेय, और मौवखक ग्रथों ं ं को ्री शावमल वकया िाता ह।ै मानविकी विषयों म ें सावहत्य का एक महत्िपि भ स्थान ह।ै यह विद्यावथभयों ू म ें सावहवत्यक रसास्िादन की योनयता बढ़ाने के साथ ही अन्य मलयों िसै े वर्न्न-वर्न्न ्राषा्रावषयों के ू मध्य वमत्रता का ्राि पैदा करना, नागररक गिों और सस्कवत का विकास करना, विद्यावथभयों म ें वलखने ृ ु ं और पढने के प्रवत रूवच उत्पन्न करना, विवर्न्न ्राषाओ ंँ को सरवक्षत करना िए उनका प्रसार करने स े ं ं िुड़ा हआ ह।ै ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 74 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं इवतहास इवतहास अतीत की सचनाओ का िमबि िए व्यिवस्थत सकलन ह।ै अध्ययन के विषय

Plagiarism detected: **0.18%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 6 resources! id: **163**

के रूप म ें ू ं ं ं इवतहास को व्यवक्त, समिा, सस्था या कोई अन्य चीज़ िो समय के साथ पररिवतभत हई हो के अध्ययन ं िए व्याख्या के रूप म ें वलया िाता ह।ै इवतहास मानविकी का ही एक ्राग ह ै परन्त इसे क्री-क्री ु ं सामाविक विज्ञान के एक ्राग के रूप म ें वलया िाता ह।ै विद्यालयी स्तर पर इवतहास एक स्ितत्र विषय के ं रूप म ें विद्यावथभयों को पढ़ाया िाता ह ै । भगोल ू मानविकी म ें गोिल को ्री सवममवलत वकया िाता ह।ै गोिल मानि और पथ्िी के परस्पर सबधों के ृ ू ू ं ं अध्ययन के रूप म

ें वलया िाता ह।ै विद्यालय के विवर्न्न स्तरों पर गोिल का स्िरुप पाठयिम के अतगतभ ् ू ं पररिवतभत होता रहता ह ै । विद्यालयों म ें प्राथवमक स्तर पर यह वि

Plagiarism detected: **0.17%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 4 resources! id: **164**

ज्ञान के साथ रख पयाभिरि विज्ञान के रूप म ें पढ़ाया िाता ह ै । गोिल को मानविकी, विज्ञान और सामाविक विज्ञान के विषयों के बीच एक कड़ी के ू रूप म ें दखे ा िा सकता ह ै क्योंवक गोिल ही एक ऐसा विषय ह ै िो इन तीनों म ें सवममवलत वकया िाता ह ै । ू नागरिक शास्त्र नागररक शास्त्र म ें नागररकता, नागररक के रूप म ें अपने अवधकारों और कतभव्यों के सैिावतक िए ं ं व्यिाहाररक पहलओ का अध्ययन वकया िाता ह ै । एक रािवनवतक वनकाय के सदस्य के रूप म ें न

ागररक ु ं का अन्य नागररकों और सरकार के परस्पर सबधों का अध्ययन इस विषय के अतगतभ वकया िाता ह ै । यह ं ं ं वसविल लॉ और वसविल कोड को सवममवलत करती ह ै । नागररक शास्त्र प्रारवर्क कक्षाओ से ही ं ं पाठयचयाभ का एक महत्िपि भ विषय ह ै । ् ू वचत्रकिा वचत्रकारी या ड्राइग, हमारी पि-भ प्राथवमक कक्षाओ से एक विषय

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 3 resources! id: **165**

के रूप म ें पढ़ाया िाता ह।ै विद्यावथभयों ू ं ं को वशक्षा से िोड़ने के वलए इसे एक माध्यम के रूप म

ें दखे ा िाता ह ै क्योंवक विद्याथी वचत्रकारी म ें आनद ं का अनिर् करते ह।ैं वचत्रकारी एक तस्िीर बनाने की तकनीक ह ै िो विवर्न्न उपकरिों और तकनीवकयों ु को प्रयोग म ें लाती ह।ै आम उपकरिों म ें ग्रेफाइट पेंवसल, कलम और स्याही, ब्रश, मोम रग, पेंवसल, ं ि योंस, तैल रग, चारकोल, पेस्टल और माकभ र को सवममवलत वकया िाता ह।ै प्राचीन समय म ें चारकोल, ं पत्तों, खवड़या, कोयले इत्यावद का प्रयोग, वचत्रकारी के वलए वकया िाता था। वचत्रकारी का ्री प्रयोग ्री आध्यावत्मक रूपाकनों और विचारों को व्यक्त करने के वलए वकया िाता ह।ै वचत्रकारी के कई तरीके होते ं ह ैं िसै े स्के वचग,आयल पेंवटग, लाइन वचत्रकारी, वस्िवब्लग इत्यावद। अलोरा की गफायें, मोनावलसा, द ु ं ं ं लास्ट सपर, इत्यावद वचत्रकला के नायाब नमने ह।ैं ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 75 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं अन्य कलायें विवर्न्न प्रकार की कलाए ्री मानविकी का वहस्सा ह ैं चाह े िह दृश्य कला हो, मच कला हो, मवतभ कला ू ं ं या स्थापत्य कला। सगीत और वचत्रकारी ्री इसी के

अतगभत आते ह,ें पर सगीत और वचत्रकारी की चचा भ ं ं ं इस पाठ म ें दसरे शीषकभ के अतगतभ की िाएगी क्योंवक विद्यालयों म ें सगीत और कला की वशक्षा अलग ं ं ू विषय

Plagiarism detected: **0.05%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 2 resources! id: **166**

के रूप म ें दी िाती ह।ै मनष्य प्रारर् से ही इन विवर्न्न प्रकार की कलाओ का शौक़ीन रहा ह।ै मनष्य ु ु ं ं ने अपने विकास क े साथ ही इन कलाओ म ें अपनी रुवच प्रकट की ह।ै िह चाह े परा पाषाि काल या ु ं पाषाि काल के वर्वत्तवचत्र हों या विवर्न्न नदी घाटी सभ्यताओ म ें वमलने िाली मवतभयाँ या वचत्रकारी। ू ं वसन्ध, माया, रोमन, मसे ोपोटावमया, इनका स◌ृी प्राचीन नदी घाटी सभ्यताओ म ें इन कलाओ के नमन े ु ू ं ं

Plagiarism detected: **0.08%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 6 resources! id: **167**

प्राप्त हए ह।ें बाद के िषों म ें ◌ृी विवर्न्न रा िशों और शासकों के समय के विवर्न्न प्रकार की कला के ं नमने प्राप्त हए ह ें िो उनके कला-प्रेम के साथ साथ िशै ◌ावनकता का ◌ृी प्रमाि दते े ह।ें ◌ृारत विवर्न्न प्रकार ू क

ी कलाओ का साक्षी रहा ह।ै दशे के विवर्न्न मवदर, मकबरे, स्तप, स्मारक इत्यावद इसका उदहारि ह।ें ू ं ं चीन की दीिार, पीसा की मीनार, वमस्र के वपरावमड इत्यावद समपि भ विश्व म ें पाए िाने िाले इन कलाओ के ू ं कछ नमने ह।ें ु ू इन कलाओ म ें धम भ का ◌ृी स्पष्ट प्रर्ाि दखे ◌ा िा सकता ह।ै हर एक धम भ की मान्यताओ के अनसार उसके ु ं ं अननाइयों ने कला की रचना की ह।ै िसै े वहन्द धम भ के अननाइयों ने वचत्रकारी और मवतभ कला के ु ु ू ू साथ¬साथ स्थापत्यकला पर बल वदया, इस्लाम म ें विसम ें कला शास्त्र की मनाही ह ै ऐसे म ें ज्यावमवत के माध्यम से धावमकभ विचारों को अवर्व्यक्त वकया ह,ै और ऐसे म ें मकबरों, मीनारों िसै े स्मारकों का वनमाभि वकया। ईसाई धम भ म ें कछ मनाही न होने के कारि कला के विवर्न्न माध्यमों से धावमभक विचारों को ु अवर्व्यक्त वकया ह।ै स◌ृी धमों ने अपने वहसाब से ईश्वर के रूप को दशाभने की कोवशश की ह।ै यह सत्य ह ै वक कला का रूप अलग रहा ह ै परन्त ये स◌ृी हम ें कला का रसास्िादन कराती ह ै और हमारे अन्दर कोमल ु िगे ों को उद्दवे लत करती ह ें और विद्यावथभयों म ें अपने दशे के साथ-साथ अन्य समदायों और दशे ों के वलए ु ं आदर का र्ाि पैदा करती ह ै । नत्य ृ नत्य कला की एक अत्यन्त प्राचीन विधा ह ै िो उस समय से इस समय तक चली आ रही ह ै । ृ उदाहरितः- र्रतनाटयम नत्य का उद्भि र्गिान वशि के रौद्र रूप में आकर वकए गए ताडि से माना ृ ृ ं िाता ह ै । कहा िाता ह ै वक िब सती ने वपतगह म ें अिहले ना पाकर यज्ञकड म ें कदकर अपनी िान द े दी ृ ृ ु ू ं थीं तो उनके झलसे हए शरीर को वशि ने अपने कधे पर उठाकर रौद्र रूप धारि कर महाताडि वकया था ं ं ु और त◌ृी र्रतनाटयम की शरुआत हई थी । यही कारि ह ै की र्रतनाटयम नत्य म ें नटराि की मवतभ ृ ृ ृ ु ू रखकर नत्य वकया िाता ह।ै इसी प्रकार अन्य नत्यों के पीछे ◌ृी कछ दतकथाए ◌ँ ह ें िो एक कला रूप की ृ ृ ु ं प्राचीनता को वसि करती ह ें । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 76 ु शास्त्रों एव वविषयों का अवबोध CPS 2 ं ◌ृारतीय नत्य को मख्य रूप से दो ◌ृागों म ें बाँटा िा सकता ह;ै शास्त्रीय नत्य एि लोक नत्य। शास्त्रीय नत्य ृ ृ ृ ृ ु ं म ें र्रतनाटयम, कथकली, कत्थक, मविपरी, ओवडसी, कवचपड़ी, सवत्रया नत्य आते ह ें । लोक नत्य के ृ ृ ृ ु ु ु मख्य प्रकारों म ें यक्षगान, वबह, गरबा, पडिानी, िािी इत्यावद। ◌ृारत म ें हर एक

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व… id: **168**

क्षेत्र की एक अलग ू ु ं नत्य शलै ◌ी पाई िाती ह ै । इसके अलािा पाश्चात्य नत्य के ◌ृी कई प्रकार ह

ें विसम ें सालसा, ब्रेक डास, रॉक ृ ृ ं एड रोल इत्यावद आते ह ें । बच्चों को इन स◌ृी नत्य शवै लयों को बताया िा सकता ह,ै उनकी प्रारवर्क ृ ं ं पहचान नत्य शलै ◌ी म ें करायी िा सकती ह ै और तश्चात उनकी रुवच िाली विधा म ें उनको आग े सीखने को ृ प्रोत्सावहत वकया िा सकता ह ै । नत्य ◌ृी विद्यावथभयों म ें वर्यात्मक पक्ष से िड़े स◌ृी मलयों का विकास ृ ु ू करने म ें मदद करती ह ै । सगीत ं ◌ृारतीय सगीत का प्राद◌ृुाभि िेद के मत्रोत्चार से माना िाता ह ै । इस प्रकार कहा िा सकता ह ै वक ◌ृारत म ें ं ं ु सगीत का प्रारर् लगर्ग 5000 साल से पहले हआ था । इसके और प्राचीन होने का प्रमाि इस कारि ं ं नहीं वमल सकता क्योंवक अन्य कलाओ की तरह सगीत गफा की दीिारों या वर्वत्त वचत्

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 3 resources! id: **169**

रों के रूप म ें उके रा ु ं ं नहीं िा सकता । और न ही मवतभकला के रूप म ें आ सकता ह ै । यह श्रव्य माध्यम ह ै अतः राग के रूप म

ें ू मात्र एक पीढ़ी से दसरी पीढ़ी म ें िा सकता ह ै । यही कारि ह ै वक अत्यन प्राचीनकाल म ें इसके होने की ू प्रमाविकता को वसि नहीं वकया िा सकता ह ै पर यह कहा िा सकता ह ै वक सगीत का प्रारर् मानि ं ं िीिन के प्रारर् के साथ ही हो गया होगा । ं सगीत को मख्य रूप से दो ◌ृागों म ें बाँटा िा सकता ह;ै विसम ें पहला ह ै गायन और दसरा ह ै ु ं ू िादन । यवद इनको आग े ◌ृी वि◌ृावित वकया िाए तो गायन को अन्य ◌ृागों म ें बाँटा िा सकता ह ै िसै े लोकगीत,

Plagiarism detected: **0.29%** https://www.rekhtadictionary.com/word-family/s… id: **170**

शास्त्रीय सगीत और पाश्चात्य सगीत । ◌ृारतीय सगीत को तीन मख्य ◌ृागों म ें बाँटा िा सकता ु ं ं ं ह-ै वहन्दस्तानी शास्त्रीय सगीत, कनाभटक शास्त्रीय सगीत और क्षेत्रीय सगीत। ितभमान समय म ें शास्त्रीय ं ं ं ु सगीत म ें दो प्रकार के सगीत को वलया िाता ह;ै वहन्दस्तानी और कनाभवटक । कनाभवटक सगीत म ें कनाभटक, ं ं ं ु आध्र प्रदशे , तवमलनाड और के रल

के शास्त्रीय सगीत को वलया िाता ह ै। वहन्दस्तानी शास्त्रीय सगीत म ें ु ं ं ं ु गाने की शलै ी के अनसार कई घराने होते ह ै िसै े बनारस घराना, निावलयर घराना, आगरा घराना, ु पवटयाला घराना, वदलली घराना इत्यावद । शास्त्रीय सगीत म ें ध्रपद, धमर, ख्याल, तराना आती को ु ं सवममवलत वकया िाता ह ै िहीं अिभशास्त्रीय सगीत म ें ठमरी, दादरा, कव्िाली, ग़ज़ल, चैती, किरी को ु ं वलया िाता ह ै। सगीत वशक्षा शावत को बढ़ािा दने ा और विविधता की सराहना करना वसखाती ह ै। ं ं िशतन दशनभ शास्त्र

िह ज्ञान ह ै िो परम सत्य और प्रकवत के वसातों और इनके पीछे के कारिों की वििेचे ना ृ ं करता ह।ै दशनभ यथाथभ को परख सकने का द्दवष्टकोि ह।ै दाशवभ नक वचतन मलत: िििन के अथभ को खोि ू ं करने के रूप म ें डीक्य गया प्रयास ह।ै िस्ततः दशनभ

Plagiarism detected: **0.08%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… id: **171**

शास्त्र स्ितिं अथाभत प्रकवत तथा समाि और मानि ृ ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 77 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं वचतन तथा सज्ञान की प्रविया के सामान्य वनयमों का विज्ञान ह।ै दशनभ शास्त्र सामाविक चेतना का एक रूप ं ं ह ै। सामान

्यतः Philosophy शब्द को दशनभ के अंग्रेिी शब्द के रूप म ें दखे ा िाता ह ै परन्त दोनों म ें अतर ु ं ं ह।ै दशनभ िहााँ यथाथभता का तत्ि ज्ञान ह ै और वफलोसोफी विवर्

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 2 resources! id: **172**

न्न विषयों का विश्लेषि । वफलोसोफी का शाववब्दक अथभ ज्ञान के प्रवत प्रेम से ह।ै वफलोसोफी के अथों म ें दशनभ शास्त्र शब्द का प्रयोग सिप्रभ थम पाइथागोरस ने वकया था और एक विवशष्ट अनशासन के रूप म

ें दशनभ को प्लेटो ने विकवसत वकया। दशनभ ु शास्त्र वक तीन मख्य शाखायें ह;ैं पहला तत्ि मीमासा, दसरा ज्ञान मीमासा और तीसरा मलय मीमासा। ु ू ं ं ं ू हालावक दशनभ प्रारवर्क कक्षाओ म ें एक स्ितत्र अनशासन के रूप म ें पाठयचया भ म ें सवममवलत नहीं होता ह ै ृ ु ं ं ं ं पर विवर्न्न विषयों के माध्यम से दशनभ पढ़ने का प्रयास विद्यालयों म ें वकया िाता ह।ै उच्च माध्यवमक कक्षाओ से दशनभ शास्त्र के स्ितत्र अनशासन के रूप म ें पाठयचयाभ म ें सवममवलत हो िाता ह।ै ृ ु ं ं नववज्ञान ृ नविज्ञान या Anthropology शब्द की उत्पवत्त ग्रीक र्ाषा के शब्द anthropos से हई ह ै विसका अथभ ृ मनष्य या व्यवक्त ह।ै नविज्ञान मानि विज्ञान का समग्र विषय ह ै िो मानि के अवस्तत्ि की समग्रता का ृ ु विज्ञान ह।ै यह विषय सामाविक विज्ञान, मानविकी और मानि शरीरशास्त्र के विवर्न्न पहलओ के ु ं एकीकरि से समबवधत ह।ै यवद इन विषयों को अलग-अलग विषयों म ें दखे ा िाए तो उसका सही रूप ं कर्ी नहीं बन सकता बवलक िह इसकी कछ शाखाओ का ही रूप ले सकता ह।ै नविज्ञान विषय का लक्ष्य ृ ु ं मानि और मानि स्िर्ाि के वलए एक समग्र लेखा िोखा प्रदान करना ह ै। विद्यालयों म ें नविज्ञान एक ृ अलग विषय

Plagiarism detected: **0.05%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 3 resources! id: **173**

के रूप म ें नहीं पढ़ाया िाता बवलक यह विज्ञान और र्गोल का र्ाग होता ह ै। विवर्न्न ू कालों म ें मनष्य म ें वकस-वकस प्रकार क

े पररितभन आये ह,ैं ितभमान स्िरुप म ें आने के वलए मनष्य वकन ु ु बदलािों का साक्षी रहा ह ै और उसने वकस प्रकार प्रगवत की ह ै का समपि भ अध्ययन नवि

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 4 resources! id: **174**

ज्ञान के अतगतभ ृ ू ं वकया िाता ह।ै धमत धम भ र्ी विद्यालयी स्तर पर वकसी अलग विषय के रूप म ें ना पढ़ाये िाकर सर्ी विषयों म ें आधार के रूप म

ें शावमल वकया िाता ह।ै र्ारत िो स्िय म ें एक धमवभ नरपेक्ष दशे ह;ै के पाठयचयाभ और पस्काओ का ृ ु ं ं विकास करते हए यह ध्यान रखा िाता ह ै वक पैसे कोई र्ी पाठ शावमल ना वकए िायें विससे यह प्रतीत हो वक वकसी धम भ का प्रसार वकया िा रहा ह ै या वकसी धम भ के अननाइयों की र्ािना को आहत वकया िा ु रहा ह ै। यह प्रयास वकया िाता ह ै वक इसी

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **175**

प्रकार के पाठ शावमल वकए िायें विससे धमवभ नरपेक्षता को बढ़ािा वमले और सर्ी धमों के प्रवत आदर का विकास

हो िो शावत एि विविधता को सममान दने े के ं ं वलए आिश्यक ह ै। िसै े यवद धम भ को एक विषय के रूप म ें दखे ा िाए तो छठे ईसा पि भ के दौरान धम भ तथा ू नया दशनभ पिी तथा पवश्चमी दशे ों म ें उत्पन्न हए। समय के साथ परी दवनया म ें कई धमों का प्राद र्ाभि हआ ू ू ु ु हआ िसै े, सनातन धम,भ इस्लाम, ईसाईयत, पारसी, िनै , बौि, वसख, इत्यादी। समय आने पर इन धमों की उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 78 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं कई शाखायें इनके अननैयों के वहसाब से बनीं। िसै े सनातन धम भ म ें शिै , िष्ै ि िि और शक्त, इस्लाम में ु वशया और सन्नी और उसके बाद अन्य कई शाखायें, ईसाईयत म ें कै थोवलक और प्रोटेस्टेंट (ओलड ु टेस्टामटें और न्य टेस्टामटें), बौि धम भ म ें हीनयान और महायान, िनै धम भ म ें

श्वेतामबर और वदगबर ू ं इत्यावद। इन स◌ा्री धमों और उनकी विचारधाराओ ने ईश्वर का रूप अपने अनसार स े पररा्रावषत वकया। ु ं विचारधाराओ के अलग होने के बाद ◌ा्री, और ईश्वर का अलग-अलग स्ि्रुप मानने के बाद ◌ा्री इन स◌ा्री ं धमों का सार एक ही ह।ै ये स◌ा्री सत्य, दया, प्रेम, आस्था, विश्वास, बधत्ि के पक्षधर ह।ैं ु ं अभ्यास प्रश्न 3. मानविकी के अतगतभ वकन-वकन विषयों को सवममवलत वकया िाता ह?ै ं 4. सावहत्य विद्यावथभयों म ें वकन मलयों का विकास करती ह ै ? ू 5. इवतहास को पररा्रावषत कीविए । 1.5 मानववकी स े जुड़े मुद्द े और चुनौवतया ाँ दशे म ें मानविकी म ें हए शोध इतने सफल नहीं रह े ह ैं विनके द्वारा मानविकी को एक एकीकत ृ अनशासन

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 4 resources! id: **176**

के रूप म ें व्याख्या की िा सके या सचावलत वकया िा सके । यद्यवप सैिवतक रूप से ु ं ं से हम मानविकी को एक एकीकत अनशासन के रूप म ें व

िकवसत करने के पक्षधर रहते ह ैं परन्त ृ ु ु पाठयपस्तकों, वशक्षि और सचालन के मामले म ें खवडत व्यिहार और दृवष्टकोि अपनाते ह।ैं ् ु ं ं मानविकी के प्रवत विद्यमान दृवष्टकोि एक और मसला ह।ै एक लोक-सममत दृवष्टकोि मानविकी विषयों के गरै उपयोवगता से समबवधत ह।ै लोग इसे गरै उपयोगी विषय समझते ह ैं और ं पररिामस्ि्रूप कक्षा वशक्षि के दौरान ◌ा्री इस विषय को लेकर कम सममान रहता ह ै और ि े विद्याथी ◌ा्री िो इस विषय को पढ़ते ह ैं उन्ह ें स्िय को लेकर उस स्तर का स्ि-सममान नहीं वदखा ं पाते ह ैं वितना

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 3 resources! id: **177**

विज्ञान विषयों के विद्यावथभयों में होता ह।ै विज्ञान को मानविकी के तलना म ें श्रेष्ठतर ु विषय के रूप म

ें दखे ा िाता ह।ै यह प्रचवलत धारिा ह ै वक मानविकी विषय मात्र सचना दने े िाले ू ही विषय ह ैं िो के िल वलवखत पाठों और उनके स्मरि से ही समबवधत ह।ै उच्च स्तर की ं मानवसक वियाओ को यह सवममवलत नहीं करता ह।ै ं यह ◌ा्री माना िाता ह ै वक मानवि

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 3 resources! id: **178**

की विषयों के अध्ययन और विशेषज्ञता प्राप्त करने के पश्चात ् रोिगार के अिसर उतने अवधक नहीं ह ैं वितने की विज्ञान क

े अध्ययन के पश्चात वमलते ह।ैं साथ ् ही यह व्यािहाररक िीिन हते िीिन-कौशल नहीं प्रदान कर पाता ह।ै वशक्षा की राष्ट्रीय ु पाठयचया-भ 2005 ने मानविकी से समबवधत विवर्न्न विषयों म ें अनप्रयोग के स्थान पर धारिा को ् ु ं अवधक महत्ि वदया ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 79 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं ◌ा्रारत विविधता से पररपि भ दशे ह।ै अतः यह आिश्यक हो िाता ह ै वक पाठयपस्तकों म ें हर एक ् ू ु प्रदशे और सामाविक समह को स्थान वमले पर दशे की सास्कवतक िहदता और के न्िीय स्तर पर ृ ृ ू ं पाठयपस्तकों के वनमाभि के कारि हर एक प्रदशे को उन पस्तकों म ें स्थान दने ा मवश्कल हो िाता ् ु ु ु ह।ै यह धारिा ह ै वक मानविकी के विषयों म ें िैज्ञावनक कठोरता का अि्रा ह ै और एक हद तक यह बात सही ◌ा्री ह।ै विवर्न्न अनशासनों के मध्य अन्तसभमबन्ध स्थावपत करना। इस विषय की विविध प्रवविधयाँ ह।ैं ु तो कई बार अन्तसभमबन्ध स्थावपत करना कवठन हो िाता ह।ै साथ ही यह ◌ा्री वक स◌ा्री प्रकरि अन्तसभमबवधत करते हए पढ़ाए ◌ा्री नहीं िा सकते ह।ैं ं मानविकी विषयों के साथ कछ मानकीय समस्याए ाँ ◌ा्री ह।ैं मानविकी विषयों पर एक प्रामाविक ु विममदे ◌ारी ह ै िो मानिीय मलयों िसै े स्ितत्रता, विश्वास, परस्पर आदर का ि्रा, और विविधता ू ं के प्रवत आदर के ि्रा के लोकवप्रय आधार का वनमाभि और विस्तार कर सकें । कई लोग यह मानते और महसस करते ह ैं वक समवन्ित उपागम वकसी ◌ा्री अनशासन के बनिाट ू ु और अनठेपन के वलए एक खतरा ह।ै ू मानविकी म ें सवममवलत विवर्न्न विषयों की पाठयपस्तकों के लेखकों का दृवष्टकोि विस्तत करने ृ ् ु की आिश्यकता ह।ै हमारी पाठयपस्तकों म ें समन्ियन का अि्रा ह।ै ् ु सामाविक और रािनीवतक मद्दों को को विचारोत्ति क रूप से प्रस्तत करके मानविकी के वस्थवत ु ु म ें सधार लाने की आिश्यकता ह ै । ु लोगों म ें िागरूकता लाना तथा लोगों की मानवसकता पररिवतभत करना। रोिगार के अिसर `बढ़ाकर मानविकी के वस्थवत म ें सधार करना आिश्यक ह ै । ु लोगों को मानविकी के महत्ि की वशक्षा दने ा। मानविकी की बेहतर पस्तकों का वनमाभि करना। वकसी ◌ा्री प्रकरि पर आग े के अध्ययन के वलए ु रास्ता खोलना चावहए। लैंवगक समानता को और प्रोत्सावहत करना चावहए। विषय को और एकीकत दृवष्टकोि से समझना और समझाना चावहए। प्रश्नों और मलयाकन का स्तर बेहतर होना ृ ू ं चावहए। अथाभत ये मात्र स्मरि पर आधाररत नहीं होने चावहए बवलक उच्च स्तर की मानवसक वियायें इसम ें सवममवलत होनी चावहए। बेहतर तरीके से मानवि

Plagiarism detected: **0.08%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 3 resources! id: **179**

की विषयों को पढ़ाने के वलए वशक्षक प्रवशक्षि दने ा चावहए । अभ्यास प्रश्न 6. मानविकी विषयों की क्या विममदे ◌ारी होती ह ै ? उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 80 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 7. विद्यालयों म ें वशक्षकों और छात्रों क

े द्वारा विज्ञान विषयों को मानविकी विषयों की तलना म ें ु अवधक महत्ि वदया िाने का क्या कारि ह ै ? 1.6 शांवत वशक्षा एवं वववववधता के वलए सम्मान के बीजारोपण के सन्दर् भ म ें मानववकी म सम्मवलत ववषयों से सम्बवधत मुद्द ेऔर चुनौवतया ाँ ें ं विज्ञान के ज्ञान ने व्यवक्त का उत्थान तो वकया ह ै और व्यवक्त के उत्थान के साथ ही समाि म ें ◌ा्री प्रगवत की दृवष्ट से गिात्मक

परिवर्तन हुआ है पर इस प्रगति के साथ ही सामाजिक, मानवीय तथा नैतिक मूल्यों में गिरावट आयी है। समाज की प्रगति तो दी है। विज्ञान हमें कुशल और विकसित तो बना सकता है पर मानविकी विषयों के अभाव में हम एक व्यक्ति को मनुष्य के रूप में कल्पना भी नहीं कर सकते। मूल्यहीन समाज में कभी भी एक व्यक्ति मनुष्य नहीं बन सकता। मानविकी में शामिल किए जाने वाले विषय साहित्य, कला, शिल्पकला, नृत्य, चित्रांकन इत्यादि व्यक्ति के भावात्मक पक्ष का भी विकास करते हैं जो मनुष्य को इस योग्य बनाता है कि वह किसी भी विषय पर संवेदना के साथ सोच और समझ सके। जहाँ दर्शन शास्त्र हमें तार्किक ढंग से सोचने और समझने की क्षमता

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व… + 2 resources! id: **180**

प्रदान करता है। वर्तमान समय में मानविकी का ज्ञान मानव अनुभवों को खोजने और समझने के लिए एक आदर्श आधार प्रदान करता है। जिस

वक यदि हम दर्शन को पढ़ रहे हैं तो दर्शन की कोई शाखा उससे जुड़े हुए किसी नैतिक प्रश्न का उत्तर जानने के लिए हमें उद्वेलित कर सकती है। किसी अन्य भाषा के अध्ययन के द्वारा हम अन्य या विभिन्न संस्कृतियों में समानतायें ढूँढ सकते हैं साथ ही उनकी सराहना कर सकते हैं। किसी मूर्ति को देखते हुए हम यह विचार कर सकते हैं कि कैसे कलाकार के जीवन के अनुभवों ने उसकी रचनात्मकता को प्रभावित किया है। विश्व के किसी और प्रदेश या भाग से सम्बन्धित किताब पढ़कर हम वहाँ के लोकतंत्र को जान और समझ सकते हैं। किसी भी इतिहास को पढ़कर या सुनकर हम अतीत की घटनाओं को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं और उसी समय में भविष्य का एक स्पष्ट चित्र भी प्रस्तुत कर सकते हैं। यदि कहा जाए कि विद्यार्थी में मूल्यों का बीजारोपण करने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका मानविकी से सम्बन्धित विषय निभाते हैं तो यह कहीं से भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। मानविकी के अंतर्गत जिन विषयों को पढ़ाया जाता है जैसे सभी विषय शांति शिक्षा और विविधता की समझ में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शांति शिक्षा की पाठ्यचर्या सामान्यतया द्वंद्व, सहकारिता, परस्पर निर्भरता, वैश्विक जागरूकता, सामाजिक तथा पारिस्थितिक उत्तरदायित्व से सम्बन्धित अनुदेशों को समाविष्ट करती है। शांति और विविधता के लिए सराहना समाज में लाने के लिए दो मुख्य मार्ग हैं। पहला प्रसंग आधारित एकीकरण और दूसरा विषय आधारित एकीकरण। प्रसंग आधारित शिक्षण एकीकरण पाठ में जब भी आवश्यकता हो विविधता और शांति के मूल्यों की शिक्षा को समाविष्ट करता है। जहाँ पर विषय के वर्णित शिक्षण एकीकरण उन मुद्दों को उठाने से सम्बन्धित है जो ज्वलंत हों और फिर उस मुद्दे को इतिहास और राजनीति विज्ञान से सम्बन्धित करके कारण, उपाय और उपादेयता को जानने से है। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय 81 शास्त्रों एवं विषयों का अवबोध CPS 2 □ मानविकी विषयों का अध्ययन विद्यार्थी को एक अच्छा नागरिक बनाने में मदद करता है। एक अच्छा नागरिक अपनी समस्त कर्तव्यों का निर्वहन करता है। कोई भी सफल अपने मूल्यों पर निर्भर करता है। इन मूल्यों में प्रेम, त्याग, क्षमा, परोपकार, दया, करुणा, भ्रातृत्व, उदारता, विश्व-बंधुत्व और विश्व-शांति इत्यादि को समाविष्ट किया जाता है। मानविकी इन गुणों और विशेषताओं को विद्यार्थियों में बीजारोपित करती है और उनका मूल्यांकन करती है। □ दूसरों के लिए उनकी जाति, धर्म, प्रजाति, रूप रंग, नागरिकता, उम्र, लिंग, राजनीतिक तथा धार्मिक विश्वास, शारीरिक तथा मानसिक योग्यता के इतर आदर करने की भावना पोषित करती है। □ मानविकी का अध्ययन विद्यार्थियों को रचनात्मक बनाता है। मानविकी विषय विद्यार्थियों को इस योग्य बनाता है कि उनके मस्तिष्क में रचनात्मक विचार उत्पन्न हो सकें। विभिन्न लोगों की जीवनी, साहित्य, इतिहास, भाषा विद्यार्थियों के समक्ष नए आयामों को लेकर आते हैं जिससे वे अन्य मनुष्यों और उनसे जुड़े समाज की प्रकृति को समझ सकें जो शांति शिक्षा के लिए मददगार है। □ कला छात्रों को सौन्दर्य बोध कराती है और उसका रसास्वादन

Plagiarism detected: **0.04%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… id: **181**

करने में मदद करती है। साथ ही एक समृद्ध और अर्थपूर्ण जीवन जीने में मदद करती है

जो शांति और विभिन्नता की समझ के लिए आवश्यक है। □ मानविकी का अध्ययन विद्यार्थियों में संवादशीलता और दूसरे के साथ काम करने की योग्यता को बढ़ाता है। यह अन्य विद्यार्थियों के साथ छात्रों के व्यक्तिगत संबंधों को मजबूत बनाने में मदद करता है। जैसे नागरिकशास्त्र के अंतर्गत हम अपने अधिकारों के साथ साथ कर्तव्यों के बारे में जान पाते हैं जो हमारे अन्दर अच्छे नागरिक के गुणों को बढ़ाता है। हम समझ पाते हैं कि हमारे अधिकार ही नहीं बल्कि कुछ कर्त्तव्य भी हैं जिन्हें पूरा करना चाहिए। इसके साथ ही हम यह भी समझ पाते हैं कि जिस प्रकार से हमें अधिकार मिले हैं अगले व्यक्ति को भी वही अधिकार प्राप्त हैं ऐसे में हमें उनके अधिकारों का भी सम्मान करना चाहिए। व्यक्ति अपने नागरिक और सांस्कृतिक जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए तैयार करते हैं। □ मानविकी के अध्ययन द्वारा

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… id: **182**

विज्ञान, तकनीकी तथा चिकित्सा के प्रक्रिया को समझा जा सकता है अतः मानविकी का ज्ञान मात्र मानविकी को ही नहीं बल्कि विज्ञान, तकनीकी तथा चिकित्सा को भी समझने में मदद करती है। विज्ञान

ने समाज को आकार देने में और लोगों के जीवन की गुणवत्ता पर किस प्रकार से सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव डाला है; साहित्य इतिहास और दर्शन इसको समझने

Plagiarism detected: **0.05%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… id: **183**

म ें मदद करती ह।ै इसके साथ ही मानविकी के ये विषय समिा की आिश्यकता को ◌री बतात े ह ैं और विज्ञान को वदशा दने े में मदद करते ह

ैं वक िह आिश्यकता के अनसार कायभ कर सके । ◌ु □ विद्याथी मात्र अपनी मात◌ृाषा का ज्ञान ही नहीं

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 5 resources! id: **184**

प्राप्त करते बवलक आप अन्य स्थानीय ◌ृाषाओ के ◌ृ ◌ं साथ-साथ विदशे ◌ी ◌ृाषाओ और विदशे ◌ी सस्कवतयों के विषय म ें ज्ञान प्राप्त कर पाते ह।ैं ि◌ी न के िल ◌ृ ◌ं ◌ं उनके ज्ञान क

े क्षेत्र को विस्तत करता ह ै बवलक राष्ट्रीयता और अतराभष्ट्रीय समझ िैसे गिों को ◌री ◌ृ ◌ु ◌ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 82 ◌ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ◌ं विकवसत करता ह।ै विद्याथी में अपने दशे वक सस्कवत के प्रवत गि भ का ि◌ृा िागत होता ह ै और और ◌ृ ◌ृ ◌ं िह अपने दशे की विविधता को समझ पाते ह।ैं सावहत्य के द्वारा उनम ें विवर्न्न नैवतक, सामाविक और सास्कवतक मलयों का विकास सि◌्र हो पाता ह।ै ◌ृ ◌ू ◌ं ◌ं □ िश्वै ◌ीकरि के दौर म ें आधवनक और अतराभष्ट्रीय ◌ृाषाओ का ज्ञान और अन्य दशे ों वक सस्कवत की ◌ृ ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं िानकारी आिश्यक ह ै ऐसे म ें विदशे ◌ी ◌ृाषा और सावहत्य का अध्ययन उनकी इस समझ को बढ़ाने

Plagiarism detected: **0.07%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… id: **185**

म ें मदद करता ह ै । □ ◌ृाषा और कला के द्वारा की गयी ि◌्ावर्यवक्त शावत म ें योगदान दते ◌ी ह ै । ◌ं □ शावत से समबवधत बातों का दृष्टान्त दने ◌ा शावत वशक्षा म ें मदद करता ह

।ै िसै े कोई दशे वकसी ◌री ◌ं ◌ं ◌ं यिाह पररवस्थवत से गिर रहा हो और िहाँ शावत स्थावपत करने हते कोई कायभ का उदाहरि दके र ◌ु ◌ु ◌ं छात्रों को इस तरफ उत्प्रेररत कर सकता ह ै । □ शावत से समबवधत मद्दों पर नाटक का आयोिन वकया िा सकता ह ै । ◌ु ◌ं ◌ं □ सगीत को सवममवलत करना क्योंवक इससे यह सामिस्य, मधरता का वनमाभि करता ह ै और विश्व ◌ु ◌ं ◌ं शावत का सन्दशे दते े ह ैं तथा विश्व एकता की बात करते ह।ैं सगीत एक ऐसा माध्यम ह ै िो परे विश्व को ◌ू ◌ं ◌ं एक सत्र म ें बाँध सकता ह।ै कहा िाता ह ै वक सगीत की कोई ◌ृाषा नहीं होती ह ै और यह सीमातीत ◌ू ◌ं होता ह ै ऐसे म ें विश्व शावत म ें सगीत महत्िपि भ र्वमका अदा कर सकता ह।ै ◌ू ◌ू ◌ं ◌ं □ शावत से समबवधत विषयों पर कविता, गद्य िए कहानी वलखना तथा इसके वलए विवर्न्न ◌ं ◌ं ◌ं प्रवतयोवगताओ का आयोिन करना विससे विद्यावथभयों के अन्दर विश्व शावत की ि◌्ाना का विकास ◌ं ◌ं हो सकता ह ै । □ अवतररिं, पाठय पस्तकों की समीक्षात्मक विश्लेषि करना, साथ ही शावत और विवर्

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व… + 2 resources! id: **186**

न्न स्थानों की ◌ृ ◌ु ◌ं विविधता के महत्ि को समझने के वलए अवतररिं को पढ़ना और वनवहताथभ को समझना मानविकी के द्वारा वकया िाता ह ै । □ कला और वशलप की िानकारी दने ◌ी चावहए तथा दसरे स्थानों क

◌ी कला और वशलप को पाठयचयाभ म ें ◌ृ ◌ू शावमल करना चावहए। इसके साथ ही कला से समबवधत अन्ि◌ेष िों और वनमाभि का कक्षा म ें ◌ं सामवहक रूप से प्रयास वकया िा सकता ह ै क्योंवक विवर्न्न समिा वक वर्न्न कला तथा वशलप ◌ू विविधता को समझने का आधार

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व… + 2 resources! id: **187**

प्रदान करती ह ै और विश्व को नए दृवष्टकोि से समझने की क्षमता प्रदान करती ह

।ै इसके द्वारा विद्याथी शावत हते विैश्व की अतदृवभ ष्ट प्राप्त कर सकते ह ैं ◌ु ◌ं ◌ं □ सगीत , दृश्य कला की रचना और मचन सहयोग िसै े कौशलों को बढ़ा सकता ह।ै सगीत को सनना ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं और इसकी सराहना अन्य स्थानों के सास्कवतक मलयों के वलए ◌री सराहना के ि◌ृा को विकवसत ◌ृ ◌ू ◌ं करता ह।ै □ शावत वशक्षा से समबवधत नाटकों का सपादन विससे विद्यावथभयों के अन्दर समानर्वत की ि◌्ाना ◌ु ◌ू ◌ं ◌ं ◌ं विकवसत हो सके । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 83 ◌ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ◌ं □ मानविकी से िड़े विषयों का अध्ययन व्यवक्त को पि भ और साथभक िीिन

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **188**

प्रदान करता ह ै । ◌ु ◌ू □ मानविकी के अध्ययन के फलस्ि◌्रूप विद्यावथभयों म ें िीिन मलयों का विकास

सि◌्र हो पता ह ै िो ◌ू ◌ं िीिन के

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 3 resources! id: **189**

प्रत्येक स्तर पर उनकी मदद करते ह।ैं □ मानविकी के ध्यान के फलस्ि◌्रूप हम प्रत्येक वस

◌्थवत म ें अपनी अतदृवभ ष्ट का प्रयोग करना सीख िाते ◌ं ह।ैं □ मानविकी मानिीय मलयों को समझने म ें हमारी मदद करता ह।ै विविधता के प्रवत सममान और ◌ू शावत हते मानिीय मलयों को िानना अवतआिश्यक ह ै । हम िब तक मलयों को िानेंग े ही नहीं ◌ु ◌ू ◌ू ◌ं वक एक मानि के रूप म ें वकन गिों की अपेक्षा हमसे की िाती ह ै तब तक हम उन गिों को ◌ु ◌ु विकवसत नहीं कर

सकते है। □ मानविकी में और मानविकी के द्वारा हुए अनुभवों के माध्यम से हम रचनात्मक एवं आलोचनात्मक तरीके से सोचना, तर्क करना और प्रश्न करना सीखते हैं। अभ्यास प्रश्न 8. भाषा शावत वशक्षा और विविधता के प्रवत आदर का भाव वकस प्रकार विकवसत करती है? 9. संगीत शावत वशक्षा और विविधता के प्रवत आदर का भाव विकवसत करने में वकस प्रकार मदद करती है? 1.7 सारांश मानविकी के विषयों को उदारवादी कलाओ के भाग के रूप में देखा जाता है। Webster's Dictionary के अनुसार मानविकी

Quotes detected: **0.03%** id: **190**

"सीखने और वशक्षा की शाखाओ का मुख्य रूप से एक सांस्कृतिक चरित्र होता है।"

यह भाषा, सावहत्य, कला, संगीत, दर्शन और धर्म पर बल देता है। जैसा वक पहले में विवित वकया गया है वक मानविकी में इवतहास, शास्त्रीय अध्ययन, उदारवादी कलाओ, अंग्रेजी, कला-इवतहास, आधुवनक भाषाओ, दर्शन, धावमर्क अध्ययन एवं लेखन इत्यावद को सवममवलत करता है। मानविकी में हुए खोजों के द्वारा हम सीखते हैं वक वकस प्रकार रचनात्मक और आलोचनात्मक तरीके से हम सोचते हैं, वकस प्रकार तर्क करते हैं और प्रश्न पूछते हैं। क्योंवक ये कौशल वकसी भी चीज़ के वलए समझ या अंतर्दृष्टि देते हैं। जैसे कविता हमें नयी अंतर्दृष्टि

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व… id: **191**

प्रदान करती है। यही बात पेंवटग के साथ भी है। मानविकी को कला, विज्ञान सामविक विज्ञान एवं वचवकत्सकीय विषयों से संबंध करके पढ़ाना चावहए। इससे मानविकी विषयों के साथ-साथ इन विषयों की समझ भी बढ़ती है। साथ ही

ही व्यावहाररक जगत में हमारी समझ बढ़ती है वक कक्षा के इतर वास्तविक जीवन में हम प्राप्त ज्ञान का प्रयोग वकन पररवस्थवतयों में और वकस प्रकार कर उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय 84 शास्त्रों एवं ववषयों का अवबोध CPS 2 सकते हैं। मानविकी पर यह दारोमदार रहा है वक वह यह मानवीय मूल्यों जैसे-स्वतंत्रता, विश्वास, परस्पर आदर, समानता इत्यावद को वनवमर्त और विस्तृत कर सके जो शावत और विविधता के वलए आवश्यक है। 1.8 शब्दावली 1. भाषाविज्ञान: भाषा का वैज्ञावनक अध्ययन को भाषा विज्ञान के रूप में जाना जाता है। 2. सावहत्य: सामान्य तौर पर सावहत्य का अर्थ कविताओ, कहावनयों, उपन्यास इत्यावद से लगाते हैं। सावहत्य एक ऐसा शब्द है विसकी कोई सिर्वमान्य पररभाषा नहीं है परन्तु इसे विस रूप में पररभावषत वकया जाता है उनमें सभी वलवखत सामवग्रयों, रचनाओ, शास्त्र समूहों इत्यावद को शावमल वकया जाता है। 3. मानविज्ञान: मानविज्ञान मानव विज्ञान का समग्र विषय है जो मानव के अवस्तत्व की समग्रता का विज्ञान है। यह विषय सामाविक विज्ञान, मानविकी और मानव शरीरशास्त्र के विवभन्न पहलुओ के एकीकरण से संबंवधत है। विवभन्न कालों में मनुष्य में वकस-वकस प्रकार के पररितर्न आये हैं, ितर्मान स्वरूप में आने के वलए मनुष्य वकन बदलािों का साक्षी रहा है और उसने वकस प्रकार प्रगवत की है का समपूर्ण अध्ययन मानविज्ञान के अंतगर्त वकया जाता है। 1.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. मानविकी शब्द की उत्पवत्त पुनर्जागरण लैवटन अवर्व्यवक्त Studia humanitatis या "study ऑफ़ humanitas" से हुई है। 2. Blyth (1990) ने मानविकी को पररभावषत करते हुए कहा है वक

Quotes detected: **0.06%** id: **192**

"प्राथवमक पाठ्यचयार् का वह भाग जो जीवित और स्थान विशेष पर कायर्शील और समूहों और समुदायों, तर्क और ितर्मान से आपस में जुड़े हुए व्यवक्तयों से संबंवधत है,"

मानविकी है। 3. मानविकी के अंतगर्त सवममवलत होने वाले विषयों में आधुवनक भाषायें, शास्त्रीय भाषायें, भाषा शास्त्र, सावहत्य, इवतहास, विवधशास्त्र/ न्यायशास्त्र, दर्शन शास्त्र, पुरातत्वविज्ञान, मवहला वशक्षा, पयार्वरण वशक्षा, बहुसांस्कृवतक वशक्षा, सांस्कृवतक वशक्षा, वफल्म और मीवडया वशक्षा, कोलोवनयल और पोस्ट-कोलोवनयल वशक्षा, वचवकत्सकीय मानविकी इत्यावद हैं। 4. सावहत्य विद्यावथर्यों में सावहवत्यक रसास्वादन की योग्यता बढ़ाने के साथ ही अन्य मूल्यों जैसे वर्न्न-वर्न्न भाषा-भावषयों के मध्य वमत्रता का भाव पैदा करना, नागररक गुणों और संस्कृवत का विकास करना, विद्यावथर्यों में वलखने और पढ़ने के प्रवत रुवच उत्पन्न करना, विवभन्न भाषाओ को संरवक्षत करना एवं उनका प्रसार करने जैसे मूल्यों को विकवसत करती है। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय 85 शास्त्रों एवं ववषयों का अवबोध CPS 2 5. इवतहास अतीत की सूचनाओ का क्रमबद्ध एवं व्यिवस्थत संकलन है। अध्ययन के विषय

Plagiarism detected: **0.05%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 4 resources! id: **193**

के रूप में इवतहास को व्यवक्त, समुदाय, संस्था या कोई अन्य चीज़ जो समय के साथ पररवर्तत हुई हो के अध्ययन एवं व्याख्या के रूप में

वलया जाता है। 6. मानवीय मूल्यों जैसे स्वतंत्रता, विश्वास, परस्पर आदर का भाव और विविधता के प्रवत आदर के भाव के लोकवप्रय आधार का वनमार्ण और विस्तार करना मानविकी की विममेदारी है। 7. मानविकी विषयों को गैर उपयोगी विषय समझा जाता है और पररणामस्वरूप कक्षा वशक्षण के दौरान भी इस विषय को लेकर कम सममान रहता है और जो विद्याथी भी जो इस विषय को पढ़ते हैं उन्हें स्वयं को लेकर उस स्तर का स्व-सममान नहीं वदखा पाते हैं वितना

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 3 resources! id: **194**

विज्ञान विषयों के ं विद्यावथभयों म ें होता ह।ै विज्ञान को मानविकी के तलना म ें श्रेष्ठतर विषय के रूप म

ें दखे ा िाता ह।ै ु यह प्रचवलत धारिा ह ै वक मानविकी विषय मात्र सचना दने े िाले ही विषय ह ैं िो के िल वलवखत ू पाठों और उनके स्मरि से ही समबवधत ह।ै उच्च स्तर की मानवसक वियाओ को यह सवममवलत ं ं नहीं करता ह।ै 8. विद्याथी अपनी मात◌ृराषा के साथ-साथ अन्य स्थानीय ◌राषाओ तथा विदशे ी ◌राषाओ और ृ ं ं विदशे ी सस्कवतयों के विषय में ज्ञान प्राप्त कर पाते ह।ैं िो न के िल उनके ज्ञान के क्षेत्र को विस्तत ृ ृ ं करता ह ै बवलक राष्ट्रीयता और अतराभष्रीय समझ िसै े गिों को ◌री विकवसत करता ह।ै विद्याथी ु ं म ें अपने दशे वक सस्कवत के प्रवत गि भ का िरा िागत होता ह ै और और िह अपने दशे की ृ ृ ं विविधता को समझ पाते ह।ैं सावहत्य के द्वारा उनम ें विवर्न्न नैवतक, सामाविक और सास्कवतक ृ ं मलयों का विकास सिर् हो पाता ह।ै ू ं 9. सगीत सामिस्य, मधरता का वनमाभि करता ह ै और विश्व शावत का सन्दशे दते ा ह ै । यह विश्व ु ं ं ं एकता की बात करता ह ै । सगीत िह माध्यम ह ै िो परे विश्व को एक सत्र म ें बाँधता ह।ै ू ू ं 1.10 सदं र् भ ग्रंथ सची ू

Plagiarism detected: **0.07%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… + 5 resources! id: **195**

1. NCERT (2005). National Curriculum Framework 2005. New Delhi: National Council of Educational Research and Training. 2. NCERT (2009). Position Paper National Focus Group on Arts, Music, Dance and Theatre. New Delhi: National Council of Educational Research and Training.

3. राष्ट्रीय शवै क्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2005)। राष्ट्रीय पाठयचयाभ की रुपरेखा ् ु 2005. नयी वदलली: राष्ट्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद ु 4. राष्ट्रीय शवै क्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2009). कला, सगीत, नत्य और रगमच ृ ु ं ं ं ् राष्ट्रीय फोकस समह का आधार पत्र। नयी वदलली: राष्ट्रीय शवै क्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि ू ु पररषद। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 86 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 5. Wikipedia, (n.d.). Humanities Retrieved from https://en.wikipedia.org/wiki/Humanities 1.11 वनबधात्म क प्रश्न ं 1. मानविकी के अतगभत सवममवलत वकए िाने िाले विषयों का सवक्षप्त िििनभ कीविए । इन विषयों ं ं को पाठयचयाभ म ें रखना क्यों आिश्यक ह ै ? ् 2. मानविकी विषयों से िड़े मद्द े और चनौवतयों का िििनभ कीविए । ु ु ु 3. शावत वशक्षा एि विविधता के वलए सममान के बीिारोपि के वलए मानविकी म ें सवममवलत ं ं विषयों का क्या महत्ि ह?ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 87 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं इकाई 3- गवणत

Plagiarism detected: **0.05%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 7 resources! id: **196**

ज्ञान की एक शाखाके रूप में , विद्यालयी पाठ्यचया में इसका स्थान, गवणत वशक्षण के मुद्द तथा े चुनौवतया,ाँ राष्ट्रीय विकास के एक माध्यम के रूप म

ें इसकी िूवमका के संबंध में Mathematics as a Branch of Knowledge, its Place in the School Curriculum, Issues and Challenges of mathematics Teaching with respect to its Role as a Vehicle of National Development 3.1 प्रस्तािना 3.2 उद्दश्े य 3.3 गवित: ज्ञान की एक शाखा 3.4 विद्यालय की पाठयचयाभ में गवित स्थान ् 3.5 गवित वशक्षि के मद्द े तथा चनौवतयााँ, राष्ट्रीय विकास के एक माध्यम के रूप में ु ु इसकी र्वमका के सबध में ू ं ं 3.6 साराश ं 3.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 3.8 सदर्भ ग्रथ सची ू ं ं 3.9 वनबधात्मक प्रश्न ं 3.1 प्रस्तावना गवित मानि ज्ञान की प्राथवमक विधाओ म ें शावमल ह ै मानि सभ्यता वितना ही प्राचीन ह।ै िसै े िसै े ं मानि िििन का विस्तार हआ िसै े गवित का ◌री विस्तार हआ ह ै तथा यह मानि ज्ञान-

Plagiarism detected: **0.05%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… id: **197**

विज्ञान की एक व्यापक एि समि शाखा के रूप म ें विकवसत हआ। प्रत्येक क्षेत्र चाह े िो िशै ावनक, गवितज्ञ, ृ ं प्रौद्योवगकीविद, अथभशास्त्री या क

ोई और विषय विशेषज्ञ के साथ आम आदमी ◌री रोिमराभ के िििन में ् गवित

Plagiarism detected: **0.03%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… id: **198**

की सामान्य िानकारी से लेकर समन्नत प्राविवलयों तक वकसी न वकसी रूप म ें गवित का प्रयोग

ु करता ह।ैं गवित दवै नक िििन के साथ सिभ्यापी रूप म ें समाया हआ ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 88 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं इस इकाई म ें हम ये िानेंगे की गवित का, ज्ञान की एक शाखा के रूप म ें क्या महत्त्ि ह ै तथा विद्यालय की पाठयचयाभ म ें इसका क्या स्थान ह?ै साथ ही साथ हम गवित वशक्षि के मद्द े तथा चनौवतयों, राष्ट्रीय ् ु ु विकास के एक माध्यम

Plagiarism detected: **0.09%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 4 resources! id: **199**

के रूप म ें इसकी र्वमका के सबध में चचा भ कीविए ग।े ू ं ं 3.2 उद्दश्े य इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप- 1. गवित का, ज्ञान की एक शाखा के रूप म ें क्या महत्त्ि ह ै यह बता सकें ग।े 2. विद्यालय की पाठयचयाभ म ें गवित के स्थ

ान की व्याख्या कर सकें ग े । ् 3. गवित वशक्षि के मद्द े तथा चनौवतयों का विश्लेषि कर सकें ग।े ु ु 4. राष्ट्रीय विकास के एक माध्यम

Plagiarism detected: **0.09%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 5 resources! id: **200**

के रूप म ें इसकी र्वमका के सबध म ें चचाभ कर सकें ग।े ू ं ं 3.3 गवणत: ज्ञान की एक शाखा ज्ञान लोगों के ्रौवतक तथा बौविक सामाविक वियाकलाप की उपि ; सके तों के रूप म ें िगत के ं िस्तवनष्ठ गिों और सबधों, प्राकवतक और मानिीय तत्त्िों के बारे म

ें विचारों की अवर्व्यवक्त ह।ै ृ ु ु ं ं िागरूकता या विशेष रूप से अवधवनयम, तथ्य , या सच्चाई की समझ को ज्ञान कहते ह ैं ।विवर्न्न लोगों ने गवित के महत्त्ि को अपनी अपनी तरह से परर्ा्रावषत वकया ह।ै बीसिीं शताब्दी के प्रख्यात वब्रवटश गवितज्ञ और दाशवभ नक बटेंड रसेल के अनसार

Quotes detected: **0.09%** id: **201**

"गवित को एक ऐसे विषय के रूप में परर्ा्रावषत वकया िा ु सकता ह ै विसमें हम िानते ही नहीं वक हम क्या कह रह े ह,ैं न ही हमें यह पता होता ह ै वक िो हम कह रह े ह ैं िह सत्य ्री ह ै या नहीं"

। परातन काल से ही स्री प्रकार के ज्ञान-विज्ञान में गवित का स्थान सिोपरर ु रहा ह- यथा वशखा मयािाणा नागाना मणयो यथा। तथा विाङगशास्त्राणा गवणत मवध्नत वस्थतम॥ (िाग ृ ृ ू ू ं ं ं ं ं ं ज्योवतष) अथाभत वि

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.deepawali.info/ka-se-gya-tak-k-se-… id: **202**

स प्रकार मोरों में वशखा और नागों म ें मवि का स्थान सबसे उपर है, उसी प्रकार

स्री िदे ाग और ं शास्त्रों म े गवित का स्थान सबसे ऊपर ह।ै महान गवितज्ञ गाउस ने कहा था वक "गवित स्री विज्ञानों की रानी ह।ै " गवित, विज्ञान और प्रौद्योवगकी का एक महत्िपि भ उपकरि (टल) ह।ै ्रौवतकी, रसायन विज्ञान, ू ू खगोल विज्ञान आवद गवित के वबना नहीं समझ े िा सकते। ऐवतहावसक रूप से दखे ा िाए तो िास्ति म ें गवित की अनेक शाखाओ का विकास ही इसवलये वकया गया वक प्राकवतक विज्ञान म ें इसकी ृ ं आिश्यकता आ पड़ी थी। "गवित एक ऐसा उपकरि ह ै विसकी शवक्त अतलय ह े और विसका उपयोग ु सित्रभ ह े ; एक ऐसी ्राषा विसको प्रकवत अिश्य सनेगी और विसका सदा िह उत्तर दगे ी " प्रो. हाल । ृ ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 89 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं प्रवसि िैने गवितज्ञ महािीराचायभ के अनसारबहवर्प्रभलापैः वकम, त्रयलोके सचरारे। यद वकवचद िस्त ृ ु ु ं ृ ृ तत्सिभम,गवितेन वबना न वह ॥ ृ ृ अथाभत बहत प्रलाप करने से क्या लर् ह े ? इस चराचर िगत म ें िो कोई ्री िस्त ह ै िह गवित के वबना ु नहीं ह े । उसको गवित के वबना नहीं समझा िा सकता । गैवलवलयो के अनसिा "ज्यावमवत की रेखाओ और वचत्रों म ें हम िि अक्षर सीखते ह ैं विनसे यह ससार ु ं ं रूपी महान पस्तक वलखी गयी ह े ।" ु हमें अपने िीिन में हर कदम पैर गवित का इस्तेमाल करना पड़ता ह ैं - उस िक्त िब समय िानने के वलए हम घड़ी दखे ते ह,ैं अपने खरीद े गए सामान या खरीदारी के बाद बचने िाली रेिगारी का वहसाब िोड़ते ह ैं या वफर फटबाल टेवनस या विके ट खले ते समय बनने िाल े स्कोर का लेखा-िोखा रखते ह।ैं ु व्यिसाय और उद्योगों से िड़ी लेखा सबधी सवियाए गवित पर ही आधाररत ह।ैं बीमा (इश्योरेंस) सबधी ु ं ं ं ं ं ं ं ं गिनाए तो अवधकाशतया ब्याि की चिवि दर पर ही वनर्भर ह।ै िलयान या विमान का चालक मागभ के ृ ं ं वदशा-वनधाभरि के वलए ज्यावमवत का प्रयोग करता ह।ै ्रौगोवलक सिक्षे ि का तो अवधकाश कायभ ही ं वत्रकोिवमवत पर आधाररत होता ह।ै यहा तक वक वकसी वचत्रकार के आरेखि कायभ में ्री गवित मददगार ं होता ह,ै िसै े वक सदर् भ (पसभपेवक्टि) में विसमें वक वचत्रकार को वत्रविमीय दवनया में विस तरह से इसान ं ं ु और िस्तए असल में वदखाई पड़त े ह,ैं उन्हीं का तदनरूप वचत्रि िह समतल धरातल पर करता ह।ै ु ु ं सगीत म ें स्िरग्राम तथा सनादी (हामोनी) और प्रवतवबद (काउटरपाइट) के वसात गवित पर ही आवश्

Plagiarism detected: **0.06%** https://bsebresult.in/ka-kha-ga-gha/ id: **203**

रत ं ं ं ं ं ं ं ु होते ह।ैं गवित का विज्ञान म ें इतना महत्ि ह े तथा विज्ञान की इतनी शाखाओ म ें इसकी उपयोवगता ह ै वक ं गवितज्ञ एररक टेमपल बेल ने इसे

Quotes detected: **0.01%** id: **204**

'विज्ञान की साम्राज्ञी और सेविका'

की सज्ञा दी ह।ै वकसी ं ्रौवतकविज्ञानी के वलए अनमापन तथा गवित का विवर्न्न तरीकों का बड़ा महत्ि होता ह।ै रसायनविज्ञानी ु वकसी िस्त की अमलीयता को सवचत करने िाल े पी एच (pH) मान के आकलन के वलए लघगिक का ु ू ु इस्तेमाल करते ह।ैं िीिों और क्षेत्रफलों के अनमापन द्वारा ही खगोलविज्ञानी सयभ, तारों, चि और ग्रहों ु ू ं आवद की गवत की गिना करते ह।ैं प्रािी-विज्ञान म ें कछ िीिन्तिओ के िवि-पैटनों के विश्लेषि के वलए ृ ु ु ं विमीय विश्लेषि की मदद ली िाती ह।ै उच्च गवतिाले सगिकों द्वारा गिनाओ को दसरी विवधयों द्वारा की ं ं ू गई गिनाओ की अपेक्षा एक अश मात्र समय के अदर ही समपन्न वकया िा सकता ह।ै इस तरह कमयटरों ू ं ं ं के आविष्कार ने उन स्री प्रकार की गिनाओ में िावत ला दी ह ै िहा गवित उपयोगी हो सकता ह।ै िसै े- ं ं ं िसै े खगोलीय तथा काल मापन सबधी गिनाओ की प्रामाविकता म ें िवि होती गई, िसै े-िसै े

नौसचालन ृ ं ं ं ं ॊरी आसान होता गया तथा विस्टोफर कोलमबस और उसके परिती काल से मानि सदरगामी नए प्रदशे ों ु ू की खिो म ें घर से वनकल पड़ा। साथ ही, आगे के मागभ का नक्शा ॊरी िह बनाता गया। गवित का उपयोग बेहतर वकस्म के समिी िहिा, रेल के इिन, मोटर कारों से लेकर हिाई िहािों के वनमाभि तक म ें हआ ह।ै ु ं राडार प्रािवलयों की अवर्कलपना तथा चाद और ग्रहों आवद तक राके ट यान िरेे ने में ॊरी गवित से काम ं वलया गया ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 90 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं अभ्यास प्रश्न 1. सगीत म ें स्िरग्राम तथा सनादी (हामोनी) और प्रवतवबद (काउटरपाइट) के वसित गवित पर ं ं ं ं ं ं ु आवश्रत होते ह।ैं । (सत्य/ असत्य) 2. गवै लवलयो ने गवित को

Quotes detected: **0.01%** id: **205**

'विज्ञान की साम्राज्ञी और सेविका'

की सज्ञा दी ह।ै (सत्य /असत्य) ं 3. वचत्रकार के आरेखि कायभ म ें ॊरी गवित मददगार होता ह ै । (सत्य/असत्य) 4. गवित को ज्ञान की उपयोगी शाखा के रूप म ें दखे ना ज़रूरी नहीं ह ै । (सत्य/ असत्य) 3.4 ववद्यालय की पाठ्यचया म गवणत स्थान ें प्रारर् से ही गवित का विद्यालय पाठयिम म ें महत्िपि भ स्थान रहा ह।ै गवित सॊरी विज्ञानो की िननी ह।ै ृ ू ं दवनया गवित के वबना गवत नही कर सकती ।प्रकवत म ें कई गवितीय अिधारिाओ, पैटनभ, कानन, आवद ृ ू ं ु को दखे ा िा सकता ह।ै गवित मानि रीमराभ की विदगी के विवर्न्न पहलओ से सबवधत िरूरतों से ु ं ं ं ं समबवधत ह ै । प्लेटो का मानना था की िो व्यवक्त गवित से अनवर्ज्ञ ह ै उन्ह ें विद्यालय म ें प्रिशे नहीं ं वमलना चवहये। उन्होंने तो अपने दरिाज़ े पर वलख रखा था "िो गवित से अनवर्ज्ञ ह ै उसे मरे े दरिा े में प्रिशे नहीं करना चावहए

Quotes detected: **0.01%** id: **206**

"। बरनाडभ शॉ के अनसार "

तावकभ क वचतन के वलए गवित से शवक्तशाली माध्यम ु ं ह"ै ।इनके अलािा ॊरी कई वशक्षाविद ने विद्यालय के पाठयिम म ें गवित के महत्ि को स्िीकारा ह।ै इनका ृ ॊरी ये मानना ह ै की गवित वशक्षा के वबना व्यवक्त का बौविक और सास्कवतक विकास असर्ंि ह।ै कोठारी ृ ं ं आयोग ने ॊरी िितभमान वशक्षा म ें गवित के महत्ि को स्िीकारा ह।ै इस आयोग म ें उललेवखत ह ै की " "िज्ञै ावनक द्दवष्ट अपनाने का मख्य लक्षि िस्तओ

Plagiarism detected: **0.11%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 2 resources! id: **207**

को मात्रात्मक रूप से अवर्व्यक्त करना ह।ै इसवलए ु ु ं आधवनक वशक्षा में गवित का स्थान अवधक महत्िपिभ हो िाता ह।ै ॊरौवतक विज्ञान की प्रगवत म ें इसका ु ू महत्िपि भ योगदान ह ै , साथ ही िवै िक विज्ञान के विकास म ें ॊरी अवधकावधक रूप से इसका प्रयोग वकया ू िा रहा ह ै । इस शताब्दी म ें स्िचालन विज्ञान

और साइबरनेवटक्स के आगमन से नई िज्ञैावनक औद्योवगक िावत िा िन्म हआ ह ै और इसवलए गवित के अध्ययन पैर ध्यान दने ा और अवनियभ हो गया ह।ै इस ं विषय का उवचत आधार स्कलों म ें रखना चवहये।" इसी कारिि्श गवित कक्षा १० तक की अवनियभ ू वशक्षा म ें एक महत्िपि भ स्थान रखता ह ै । नयी वशक्षा नीवत म ें ॊरी गवित का महत्िपि भ स्थान ह।ै ू ू ॊरारत के ज्यादातर राज्यों म ें गवित माध्यवमक या उच्च प्राथवमक स्तर तक एक अवनियभ विषय ह ै । िहाँ छात्र वमवडल या िवनयर हाई स्कल के बाद तकवनकी वशक्षा के क्षेत्र म ें िाते ह ैं िहा ॊरी गवित ू ू ं एक अवनियभ विषय ह।ै राष्ट्रीय स्तर के विद्यालयों िसै े कें िीय विद्यालय तथा सेन्ट्रल बोडभ ऑफ़ सेकण्डरी एिके शन का पाठयिम विद्यालयों म ें ॊरी गवित हाई स्कल तक पाठयचयाभ का एक अवनियभ विषय ह।ै ृ ृ ु ू उच्च वशक्षा म ें गवित एक िकै वलपक विषय बन िाता ह ै । अथाभत वसफभ िही छात्र गवित अध्ययन करते ह ैं विसे इसम ें रूवच हो या वफर उच्च वशक्षा या तकवनकी वशक्षा म ें इसकी ज़रुरत हो। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 91 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं यहाँ ये चचाभ करना ॊरी ज़रूरी ह ै की आवखर गवित को विद्यालय पाठयिम म ें विशेष स्थान क्यों ृ वदया । िसै े वमवडल स्कल तक गवित को एक अवनियभ विषय बनाना। इसका उत्तर ह ै िीिन म ें गवित की ू उपयोवगता। नेपोवलयन ने सही कहा था की गवित

Plagiarism detected: **0.1%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **208**

के ज्ञान के वबना वकसी राष्ट्र का विकास सर्ंि नहीं ह।ै ं वशक्षा का लक्ष्य छात्रों को रचनात्मक िीिन के वलए तैयार करना ह ै और इसके वलए ज़रूरी ह ै i. ज्ञान और उन कशलताओ का विकास करना िो छात्रों को व्यिकाररक िीिन म ें योगदान द।े ु ं ii. छात्रों के बौविक और तावकभ क विकास क

े वलए गवित की वशक्षा ज़रूरी ह।ै इसकी उनका िीिन तकभ पि भ और अनशावसत होगा िो सफलता के वलए काफी िरूरी ह।ै ू ु iii. साथ ही साथ वशक्षा का उद्दश्े य छात्रों म ें ऐसी िावछत अविर्वत्तयों और आदशों का विकास ृ ं करना ॊरी ह ै िो उसे अच्छा नागररक और सामाविक उपयोगी बनाए । गवित इन सॊरी गिों को विकवसत करने म ें महत्िपि भ र्वमका वनॊराता ह ै । िीिन को व्यिवस्थत बनाने के ु ू ू वलए व्यवक्त को समय, धन और सामाविक वियाओ को वनयवत्रत आिश्यक ह ै और इसम ें गवित का ं ं ज्ञान उपयोगी ह।ै साथ ही साथ गवित मवस्तष्क के अनशासन के वलए ॊरी ज़रूरी ह ै क्योंवक गवित से ु तावकभ क बवि का विकास होता ह।ै गवित की विशषे ताए ँ वनमनवलवखत ह ै : ु सरलता - गवित अपनी विचारों या तथ्यों को सरलता से प्रस्तत मदद करती ह ै विससे लोग हमारी ु बात सकें । पररशिता - गवित तकभ , वचतन और वनिभय पैर आधाररत ह ै और

ये वसित िीिन के वलए बहत ु ं ं आिश्यक ह।ै पररिामों की वनवश्चतता - गवित म ें व्यवक्तक त्रवट और व्यवक्तवनष्ठा की कोई िगह नहीं ह।ै इसम ें उत्तर ु या तो सही होता या गलत। छात्र अपनी महित और लगन से अन्य प्रवकया द्वारा खद ही पररिामों ु का सत्यापन कर सकता ह ै िो की उनके आत्मविश्वास को बढ़ता ह।ै आत्मविश्वास िीिन में सफलता के वलए अवत आिश्यक ह।ै मौवलकता - गवित मौवलत वचतन पैर आधाररत ह ै और इसमें रटन्त विद्या की िगह नहीं ह।ै गवित के ं प्रश्न का हल छात्रों म ें तावकभ क क्षमता को विकवसत ह।ै इससे छात्र आग े चलकर िीिन म ें आने िाली समस्याओ को हल करने के वलए तैयार होता ह।ै गवित विषय गया ज्ञान अन्य विषयों के वलए ्री ं ज़रूरी ह ै िो की इस वचत्र से स्पष्ट होता ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 92 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं उपरोक्त वबदओ से स्पष्ट ह ै की गवित का विद्यालय पाठयिम म ें विशेष स्थान ह।ै ् ं ं ु अभ्यास प्रश्न 5. गवित उच्च वशक्षा का एक अवनिायभ विषय ह ै । (सत्य/ असत्य) 6. छात्रों के बौविक और तावकभ

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **209**

क विकास के वलए गवित की वशक्षा ज़रूरी ह।ै (सत्य /असत्य) 7. वचत्रकार के आरेखि कायभ म ें ्री गवित मददगार होता ह ै । (सत्य/असत्य) 8. गवित

Plagiarism detected: **0.08%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 8 resources! id: **210**

को ज्ञान की उपयोगी शाखा के रूप म ें दखे ना ज़रूरी नहीं ह ै । (सत्य/ असत्य) 3.5 गवणत वशक्षण के मुद्द े तथा चुनौवतया,ाँ राष्ट्रीय ववकास के एक माध्यम के रूप म इसकी ्रूवमका के संबध म ें ं ें नेपोवलयन न े कहा था

Quotes detected: **0.02%** id: **211**

"गवित के साथ राज्य की समवि िडी हई ह"

ै । वकसी ्री राष्ट्र के विकास को ृ ु गवित से अलग करके नहीं सोचा िा सकता ह।ै मानि अवस्तत्ि के वलए गवित के महत्ि को कोई नकार नहीं सकता। गवित इसान के रोिमराभ की विदगी की गवतविवधयों से िडी हई ह ै । गवित रोिमराभ की की ु ं ं समस्याओ को सलझाने का एक आिस्यक यत्र ह।ै गवित एक महत्िपिभ विषय ह ै क्योंवक यह व्यवक्त के ु ू ं ं तकभ , समस्या को सलखन का कौशल या यीँ कह ें की सोचने की शवक्त को बढ़ता ह।ै राष्ट्र का विकास ु ू उसके हर नागररक के विकास से िड़ा ह ै और इसवलए गवित एक महत्िपिभ योगदान दते ा ह।ै गवित विषय ु ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 93 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं की दवै नक िीिन में उपयोवगता िले पहल को दखे ा िाए तो ऐसा कोई कायभ निर ही नहीं आता, िहाँ ू वबना गवित के कछ समिर् हो पा रहा हो। मिदर, वकसान, दकानदार, नौकरी करने िाला और चाह े कोई ु ू ु ्री मवहला-परूष, बच्चे विसन े वशक्षा प्राप्त की हो या नहीं की हो, स्री अपनी विन्दगी म ें गवित का ु बखबी से उपयोग करते वदखलाई पड़त े ह।ैं एक वकसान को अपने खते म ें हई फसल

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 5 resources! id: **212**

की मात्रा का पि भ ू ू वनधाभरि करना हो, खते म ें बीिारोपि के समय लगने िाले बीि की मात्रा क

ा पता लगाना हो, फसल काटने के दौरान समय मिदरी का वनधाभरि करना हो या उतनी फसल के वलए आिशयक बोररयों की ् ू सख्या का पता लगाना हो िह सटीकता के साथ लगा लेता ह।ै घर पर वकसी ्री दवै नक वियाकलाप को ं ले लें, चाह े िह नहाने धोने का कायभ हो, बच्चों का खले ना हो, रसोई का कायभ करना हो या बािार में खरीददारी हो स्री कायो म ें गवितीय कौशलों (अन्दािा, अनमान, समस्या समाधान के विवर्न्न मॉडल ु सोचना, सादृष्यीकरि, गवितीय सम्प्रेषि, वनरूपि, सामान्यीकरि आवद) का उपयोग वकया िाता ह।ै विसने गवित की औपचाररक वशक्षा नहीं ली हो िो मौवखक और विसने औपचाररक वशक्षा ली ह ै िो मौवखक और वलवखत दोनों ही रूपों म ें इस्तेमाल कर पाते ह।ैं िाष्ट्रीय ववकास के आवश्यक सभी

Plagiarism detected: **0.1%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… + 2 resources! id: **213**

क्षेत्रों में गवणत के योगिान विज्ञान और तकनीक - विज्ञान और प्रौद्योवगकी वकसी ्री राष्ट्र के विकास की नींि ह ै और गवित को विज्ञान और प्रौद्योवगकी की ्राषा कहा िाता ह।ै इसवलए गवित की वशक्षा राष्ट्रीय विकाश के वलए बहत ही आिश्यक ह।ै गवित की ज़रुरत एकीकत विज्ञान िसै े की ्रौवतक ृ विज्ञान, रसायन विज्ञान, िीि विज्ञान

और इिीवनयररग पाठयिमों के वलए ज़रूरी ह ै को की हमें ् ं ं प्रौद्योवगकी की तरफ ले िाता ह।ै शये र बािार - गवित शये र बािार का एक अवर्न्न अग ह।ै स्री गिना िसै े प्रबधन शलक, ु ं ं वनिशे की रिनीवत , डीपीएस, डीिाई, ईपीएस, बी.िी िगरै ह म ें गवित का इस्तेमाल होता ह ै । बैंवकग क्षेत्र - बैंवकग प्रिाली वकसी ्री राष्ट्र के आवथभक विकास को बढ़ािा दने े के वलए ं ं महत्िपि भ र्वमका वन्राता ह।ै बैंक उत्पादक वनिेश के वलए सड़ाधन िटा कर हर अथभव्यिस्था म ें ू ू ु ं विकास म ें कें िीय र्वमका वन्राते ह।ैं बैंवकग व्यिस्था म ें गवित का योगदान वकसी से छपा नहीं ू ु ं ह।ै वचवकत्सा - गवित वचवकत्सा के क्षेत्र का एक महत्िपि भ अग ह।ै गवित का ज्ञान दिा की खराक, ू ु ं सिाता िींच इत्यावद के आिश्यक ह ै । ं मौसम पिाभनमान - मौसम का पिाभनमान सामान्य और विवशष्ट मौसम घटना के बारे म ें ू ु ू ु र्विष्यिािी करने का विज्ञान ह ै िो की एक वदए गए क्षेत्र के वलए मौसम सबधी कारकों के ं ं आकलन पर आधाररत होता ह ै । ये पिाभनमान वकसी राष्ट्र को वकसी ्री हालात, प्राकवतक ृ ू ु ं आपदा िसै े कपन, र्कप , बाढ़ आवद की िानकारी दके र उन वस्थवत से वनपटने के वलए तैयार ू ं

ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 94 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं करता ह।ै QG-ओमेगा समीकरि, गिना , अतर समीकरि, आवशक विर्दे क समीकरि इत्यावद ं ं का इस्तेमाल करके मौसम पिाभनमान वकया िाता ह।ै ू ु छोटे और मध्यम स्तर के उद्यम- लघ और मध्यम स्तर के उद्योग वकसी राष्ट्र के विकास म ें ु महत्िपि भ योगदान दते े ह।ैं बढ़ई मसे न, प्लबर , टेलर इत्यावद स िरी अपने काम को पूरा करने म ें ू ू ं गवित का सहारा लेत े ह।ैं गवित का ज्ञान छोटे और मध्यम स्तर के उद्योंगों के वलए बहत ज़रूरी ह ै ज़रूरी ह।ै र्विष्य की आबादी का अनमान लगाया ह ै और िनसख्या के प्रिर्ा को िानने के वलए ु ं गवितीय उपकरि गवितीय उपकरि िलिाय पररितभन / नलोबल िावमगिं के प्रिर्ा को वदखाने के वलए ु गवितीय मॉडल पेड़, मौसम और िमीन की सतह की प्रकवत के प्रकार के आधार पर िगल की ृ ं आग के प्रसार को वदखाने के वलए आवथभक विकास, िन साक्षरता, गरीबी और कपोषि के उन्मलन के वलए गवित का योगदान ु ू गवणत वशक्षण के मद्दे तथा चनौवतयाँ, िा

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… id: **214**

ष्ट्रीय ववकास के एक माध्यम के रूप में इसकी ु ु भवमका के सबध में ू ं ं राष्ट्रीय विकास के प्रत्येक

पहल म ें गवित सहायक हो सकता ह ै । समयक तरीके से इस विषय को ू उपयोग करके इससे तावकभ क क्षमता िाले मानि ससाधन िरी तैयार वकये िा सकते ह।ैं समाि के ं सास्कवतक , िरौवतक तथा मनोिैज्ञ ावनक स िरी विकास के माध्यम के रूप म ें गवित अपनी र्वमका वन िरा ृ ू ं सकता ह।ै परन्त इस विषय का रपर प्रयोग नहीं क्या िा पा रहा ह ैं । इसका कारि दोषपि भ वशक्षा ु ू ू प्रिाली ह ैं । स्कलों म ें गवित वशक्षा का विश्लेषि वकया िाए तो बहत सारे मद्द े सामने आते ह ैं विनम ें से ू ु कछ वनमित ह ैं : ु 1. गवणत ववषय से भय: इसे गवित की वचता और

Quotes detected: **0%** id: **215**

'मथै पफोवबया'

पदों से िरी िाना िाता ह ैं ं विद्यालय म ें पढ़ाया िाने िाले विषयों म ें गवित का स्थान सिोपरी ह ै विससे की विद्याथी र्य तथा असफलता महसस करते ह ैं । इस र्य का विश्लेषि वकया िाए तो वमलता ह ै की गवित की ू अमतभ प्रकवत , प्रतीकात्मक िराषा का प्रर्ोि। गवितीय प्रतीकों को वबना समझ े प्रयक्त वकया ृ ू ु ु िाता ह ै विससे बच्चों पर नीरसता और घबराहट िािी होन े लगती ह ै और ि े गवित से िरागने लगते ह ैं । सचयी पिवत का अथभ ह ै की गवित का एक सप्रत्यय दसरे सप्रत्यय पर वनर्रभ करता ह ै ृ ं ं ं ू िसै े यवद विद्याथी को दशमलि म ें कवठनाइ होती ह ै तो प्रवतशत िरी कवठन लगगे ा । यवद वप्रतशत कवठन लगता ह ै तो बीिगवित म ें िरी कवठनाइ होगी। और इसी प्रकार गवित के अन्य प्रकरि िरी कवठन लगगें े। 2. गवणत के सवालों के प्रवत धािणा : गवित के बारे म ें एक आम धि वमथक धारिा ह ै वक ं इसके सिालों का करने का एक ही तरीका होता ह ै और वसफभ और वसफभ िही तरीका सही होता उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 95 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं ह।ै उस तरीके म ें महारत हावसल करने का िरी एक ही तरीका होता ह ै वक उस तरीके का अभ्यास तब तक करते रहना चावहए िब तक एक वनवश्चत प्रविया को पूरा करते हए अपने-आप न होने ू लग।े इसम ें बच्चों को उस तरीके के पदों को एक खास िम में याद रखना पड़ता और इस्तेमाल करते िक्त उसी िम म ें उसे लाग करना होता ह।ै उस िम म ें थोडा िरी इधर उधर होने पर उस ू तरीके से वमलने िाले ििाब म ें गड़बवड़या हो िाती ह ै ।उसी प्रविया को बारबार करते और ं दोहराते रहने से स्िािरािविक तौर पर बच्चे उबन महसस करता ह ै क्योंवक उसम ें समझने की ू गिाइश नहीं के बराबर होती ह।ै ु ं 3. अध्यापक िािा वशक्षण सहायक सामग्री उपयोग न किना – वशक्षि सहायक सामग्री विषय िस्त को रोचक ढग से प्रस्तत करने म ें सहायता प्रदान करती ह ैं । कछ अध्यापक वशक्षि ु ु ु ं सामग्री की उपयोग गवित की कक्षा म ें नहीं या नाममात्र करते ह ैं । िो की छात्रों की वशक्षा में बढ़ी बाधक बन िाती िा ती ह।ै गवित का ज्ञान तकभ पर वनर्रभ करता ह ै की रटने पर। इसवलए वबना वशक्षि सामग्री उपयोग वकये गवित की वशक्षा मवश्कल होती ह ै । ु 4. कक्षा का मनोवैज्ञावनक वाताविण: गवित की अवधगम अध्यापक बच्चों के साथ कै से काम करते ह ैं इस बात पर िरी वनर्रभ करेगा। कक्षा का िातािरि ऐसा होना चावहए वक बच्चे उसमें सह िरागी हों, अपने विचार व्यक्त कर सकें , गलवतयाँ कर सकें और उनके बारे म ें वबना वकसी सकोच के बात कर सकें । ऐसे िातािरि म ें ही बच्चों के गवित के साथ स्िस्थ एि गहन ररश्ते ं ं कायम हो सकते ह ैं । अध्यापक को बच्चों की सह िरावगता म ें सहायक होने की प्रवियाएँ रचनी चावहए विससे की उनसे सिाद स्थावपत हो सके । गवित की कक्षा के प्रमख पक्ष की तरह इस ु ं बात को गहराई से स्िीकारना िरूरी ह ै वक बच्चे गवित की धारिाओ तथा अिधारिाओ को ं ं अपनी पिभ धारिाओ और अनर्िों के साथ समावहत करके और सविय िरागीदारी की प्रविया में ू ु ं उन्ह ें सशोवधत करके विकवसत करते ह।ैं ं 5. कविन पाठयचयात : गवित पाठयचयाभ गवितीय सप्रत्ययों को समझने और आत्मसात करने से ् ् ं ज्यादा िोर विवधयों ओर सत्रों के ज्ञान को दते ी ह ै विससे की विद्यावथभयों म ें वचता तथा वनराशा ू ं बढ़ती ह।ै पाठयचयाभ लचीली नही ह ै और ना ही कक्षा के स िरी विद्यावथभयों की आिश्कता की ् पवतभ करने िाली ह ै बच्चों के वलए यह पाठयचयाभ परीक्षा पास करने के वलए तथ्यों के र्डार की ् ू ं तरह ह ै 6. गवणत ववषय पि एकावधकािा की कमी - अध्यापक के वलए बहत ज़रूरी ह ै की िो खद ु विषय रख े त िरी छात्रों के सिालों का उत्तर दने े ा सिर् होगा। विषय पर अध्यापक की पकड़ न ं होना बड़ी बाधक का काम करता ह ै और छात्रों की उस विषय म ें रूवच कम हो िाती ह।ै 7. अध्यापक का गवणत वशक्षण में िक्ष न होना - अध्यापक को हमसे ा वशक्षि की नयी नयी विवधयों से अिगत रहना चावहए क्योंवक उसके वबना कक्षा नीरसता आ िाती ह ै । इसवलए अध्यापक के वलए ज़रूरी ह ै की हमशे ा गवित के सेवमनार, कायभगोष्ठी िगरै ह म ें िरागीदारी रखनी चावहए। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 96 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 8. गवणत के प्रवत माहौल - समाि और वशक्षक प्रायः उसी बच्चे को होनहार मानते ह ैं िो सख्याओ, सवियाओ और सत्र याद कर उसमें

मान रखकर सिाल को तीव्र गवत से हल करने म ें ू ं ं ं ं महारत हावसल करना र्र सीख िात े ह।ैं िो बचचे इन दक्षताओ को हावसल नही कर पाते ह ैं उन ् ं पर मन्द बवि, कछ नहीं कर पाने के लेबल लगाना ्री शरू वकया िाता। इसका पररिाम य े ु ु ु होता ह ै

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 2 resources! id: **216**

की छात्रों के प्रवत रूवच घटती िाती ह।ै 9. गवणत के प्रवत सामावजक नजरिये - छात्राओ स

े कहा िान े लगता ह ै वक यह विषय लड़वकयों ं के बस का नहीं ह।ै गवित पर लड़कों का ही हक होता ह ै ऐसा नहीं ह ै लड़वकयाँ ्री उतना ही गवित सीख सकती ह ैं वितना लड़के सीख सकते ह।ैं गवित विषय के इस सामाविक पहल पर ू बात की िानी चावहए। मवहलाओ द्वारा गवित में वकए गए योगदान, बािार, घर पर मवहलाओ ं ं द्वारा की िान े िाली गवित की गवतविवधयों पर बातचीत होनी ही चावहए। अभ्यास प्रश्न 9. गवित पर लड़कों का ही हक होता ह ै ।(सत्य/असत्य) 10. अध्यापक द्वारा वशक्षि सामग्री उपयोग न करना गवित वशक्षि की एक बड़ी बाधा ह ै । (सत्य/असत्य) 11. गवित वचवकत्सा के क्षेत्र का एक महत्िपि भ अग ह ै (सत्य/असत्य) ू ं 12. गवित वशक्षा एक वकसान के वलए आिश्यक नहीं ह ै (सत्य/असत्य) 13. डीपीएस, डिीाई, ईपीएस, बी.िी शये र बािार म ें इस्तेमाल होने िाले शब्द ह ैं । (सत्य/असत्य) 3.6 सारांश ज्ञान मनष्य के ्ौवतक तथा बौविक सामाविक वियाकलाप की उपि, सके तों

Plagiarism detected: **0.07%** https://bsebresult.in/ka-kha-ga-gha/ + 2 resources! id: **217**

के रूप म ें िगत के ु ं िस्तवनष्ठ गिों और सबधों, प्राकवतक और मानिीय तत्िों के बारे म ें विचारों की अवर्व्यवक्त ह।ै ृ ु ु ं ं िागरूकता या विशषे रूप से अवधवनयम, तथ्य , या सच्चाई की समझ को ज्ञान

कहते ह ैं । विवर्न्न लोगों ने गवित के महत्ि को अपनी अपनी तरह से परर्ावषत वकया ह।ै गवित, विज्ञान और प्रौद्योवगकी का एक महत्िपि भ उपकरि (टल) ह।ै ्ौवतकी, रसायन विज्ञान, खगोल विज्ञान आवद गवित के वबना नहीं ू ू समझ े िा सकते। ऐवतहावसक रूप से दखे ा िाए तो िास्ति म ें गवित की अनेक शाखाओ का विकास ही ं इसवलये वकया गया वक प्राकवतक विज्ञान म ें इसकी आिश्यकता आ पड़ी थी। ृ प्रारर् से गवित का विद्यालय पाठयिम म ें महत्िपि भ स्थान रहा ह।ै कोठारी आयोग ने ्री ितभमान वशक्षा ् ू ं म ें गवित के महत्ि को स्िीकार ह।ै आधवनक वशक्षा म ें गवित का स्थान अवधक महत्िपि

Plagiarism detected: **0.04%** https://testbook.com/question-answer/ques--61… id: **218**

भ हो िाता ह।ै ु ू ्ौवतक विज्ञान की प्रगवत में इसका महत्िपिभ योगदान ह ै साथ ही िवै िक विज्ञान क

े विकास म ें ्री ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 97 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं अवधकावधक रूप से इसका प्रयोग वकया िा रहा ह ै । इस शताब्दी म ें स्िचालन विज्ञान और साइबरनेवटक्स के आगमन से नई िैज्ञावनक औद्योवगक िावत िा िन्म हआ ह ै और इसवलए गवित के ं अध्ययन पैर ध्यान दने ा और अवनिायभ हो गया ह।ै इस विषय का उवचत आधार स्कलों में रखना चवहये। ू ्ारत के ज्यादातर राज्यों म ें गवित माध्यवमक या उच्च प्राथवमक स्तर तक एक अवनिायभ विषय ह ै । िहाँ छात्र वमवडल या िवनयर हाई स्कल के बाद तकवनकी वशक्षा के क्षेत्र म ें िाते ह ैं िहा ्री गवित एक ू ू ं अवनिायभ विषय ह।ै राष्ट्रीय स्तर के विद्यालयों िसै े कें िीय विद्यालय तथा सेन्ट्रल बोडभ आॅफ सेकण्डरी एिके शन का पाठयिम विद्यालयों म ें ्री गवित हाई स्कल तक पाठयचयाभ का एक अवनिायभ विषय ह।ै ् ् ु ू उच्च वशक्षा म ें गवित एक िकै वलपक विषय बन िाता ह ै । अथाभत वसफभ िही छात्र गवित अध्ययन करते ह ैं विसे इसम ें रूवच हो या वफर उच्च वशक्षा या तकवनकी वशक्षा म ें इसकी ज़रुरत हो। गवित इन स्री गिों को ु विकवसत करने म ें महत्िपि भ र्वमका वन्ाता ह ै । िीिन को व्यिवस्थत बनाने के वलए व्यवक्त को समय, ू ू धन और सामाविक वियाओ को वनयवत्रत आिश्यक ह ै और इसमें गवित का ज्ञान उपयोगी ह।ै साथ ही ं ं साथ गवित मवस्तष्क के अनशासन के वलए ्री ज़रूरी ह ै क्योंवक गवित से तावकभ क बवि का विकास होता ु ु ह।ै मौवलकता - गवित मौवलत वचतन पैर आधाररत ह ै और इसम ें रटन्त विद्या की िगह नहीं ह।ै गवित के ं प्रश्न का हल छात्रों में तावकभ क क्षमता को विकवसत ह।ै इससे छात्र आग े चलकर िीिन म ें आने िाली समस्याओ को हल करने के वलए तैयार होता ह।ै ं वकसी ्री राष्ट्र के विकास को गवित से अलग करके नहीं सोचा िा सकता ह।ै मानि अवस्तत्ि के वलए गवित के महत्ि को कोई नकार नहीं सकता। गवित इसान के रोिमराभ की विदगी की गवतविवधयों ं ं से िडी हई ह ै । राष्ट्रीय विकास के आिश्यक स्री क्षेत्रों म ें गवित के योगदान ह ै िसै े विज्ञान और ु तकनीक, शये र बाज़ार, बैंवकग, वचवकत्सा, मौसम पिाभनमान, छोटे और मध्यम स्तर के उद्यम इत्यावद । ू ु ं अध्यापक द्वारा वशक्षि सामग्री उपयोग न करना,गवित विषय पर एकावधकार की कमी ,अध्यापक का गवित विषय म ें दक्ष न होना ,गवित के प्रवत माहौल ,गवित के प्रवत सामाविक निररये िसै ी गवित वशक्षि के कछ मद्द े तथा चनौवतयों ह ैं ु ु ु 3.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. सत्य 2. असत्य 3. सत्य 4. असत्य 5. असत्य 6. सत्य 7. सत्य 8. असत्य उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 98 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 9. असत्य 10. सत्य 11. सत्य 12. असत्य 13. सत्य 3.8 संदर् भग्रन्थ सची ू 1. राष्ट्रीय पाठयचयाभ 2005, रा.श.ै अन.प्र.प., 2006 ् ु 2. गवित वशक्षि, राष्ट्रीय फोकस समह का आधार पत्रा, रा. श.ै अन. प्र. प., 2006 ू ु 3. गवित का पाठयिम, रा. श.ै अन. प्र. प., 2006 ् ु 3.9 वनबधात्मक प्रश्न ं 1. गवित का, ज्ञान की एक शाखा के रूप म ें महत्ि की

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.rekhtadictionary.com/word-family/s… id: **219**

व्याख्या कीविए।ह ै 2. “विद्यालय की पाठयचयाभ म ें गवित का के न्द्रीय स्थान ह”ै इस कथन की तकभ सगत व्याख्य

ा ृ ं कीविए । 3. गवित वशक्षि के मद्द े तथा चनौवतयों का विश्लेषि कीविए ? ु ु 4. राष्ट्रीय विकास के एक माध्यम

Plagiarism detected: **0.07%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 5 resources! id: **220**

के रूप म ें इसकी र्वमका के सबध म ें चचाभ कीविए। ू ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 99 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं इकाई 4 - ज्ञान की एक शाखा के रूप में व

िज्ञान 4.1 प्रस्तिाना 4.2 उद्दश्े य 4.3 ज्ञान की एक शाखा के रूप में विज्ञान 4.4 विज्ञान का स्कल पाठयिम में स्थान ृ ू 4.5 विज्ञान वशक्षि की समस्याए एिम चनौवतयााँ :िज्ञावनक प्रवित्त को अन्तवनविष्ट ृ ु ं करने में, इसकी र्वमका के सन्दर्भ में एिम सामाविक आवथभक विकास के िाहक ू के रूप में 4.6 साराश ं 4.7 शब्द िाली 4.8 अभ् यास प्रश् नों के उत् तर 4.9 सदर्भ ग्रथ सची ू ं ं 4.10 वनबधात् मक प्रश्न ं 4.1 प्रस्तावना आिा का यग

Plagiarism detected: **0.04%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… + 2 resources! id: **221**

विज्ञान और तकनीकी का यग ह ै । वपछले कछ िषों म ें विज्ञान ने हमारे िीिन के लगर्ग ु ु ु हर क्षेत्र म

ें पररितभन ला वदया ह ै । आि हम आकाश को छने, चााँद, तारों तक पहचाँने की कलपना को ू साकार रूप प्रदान कर सकन े म ें सक्षम हए ह ैं , यह सब

Plagiarism detected: **0.08%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 3 resources! id: **222**

विज्ञान के कारि ही सिर् हो पाया ह।ै विज्ञान ं एिम िैज्ञावनक वनरतर हमारे सख सविधाओ की बढ़ोतरी करने म ें प्रयासरत ह ैं । इस इकाई में हम ज्ञान की ु ु ं ं एक शाखा के रूप म ें विज्ञान, विज्ञान का स्कल पाठयिम म ें स्थान , विज्ञान

वशक्षि की समस्याए एिम ृ ू ं चनौवतयााँ :िज्ञै ावनक प्रवित्त को अन्तवनविष्टभ करने म,ें इसकी र्वमका के सन्दर् भ म ें एिम सामाविक आवथभक ृ ु ू विकास के िाहक

Plagiarism detected: **0.09%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 8 resources! id: **223**

के रूप म,ें के विषय म ें विस्तारपिकभ चचाभ करेंग।े ू 4.2 उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप 1. ज्ञान की एक शाखा के रूप म ें विज्ञान िीिन के प्रत्येक क्षेत्र को वकस प्रकार प्रर्ावित कर रहा ह े , यह समझ सकें गे । 2. विज्ञान क

ा हमारे स्कल पाठयिम म ें क्या स्थान ह,ै इसका विस्तारपिकभ िणिभ कर सकें गे । ृ ू ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 100 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 3. विज्ञान के अध्ययन के फलस्िरूप छात्रों के व्यवक्तत्ि म ें होने िाले पररितभनों के विषय म ें विस्तारपिकभ िणिभ कर सकें ग े । ू 4. िज्ञै ावनक प्रवित्त को अन्तवनविष्ट करने तथा सामाविक आवथभक विकास के िाहक

Plagiarism detected: **0.1%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 5 resources! id: **224**

के रूप में, विज्ञान ृ वशक्षि के क्षेत्र म ें आने िाली समस्याओ और चनौवतयों को समझ सकें ग े । ु ं 5. विज्ञान वशक्षि के क्षेत्र म ें आने िाली समस्याओ और चनौवतयों को दर करने हते क्या प्रयास वकय े ु ु ं ू िा सकते ह ैं , इसका विस्तारपिकभ िणिभ कर सकें ग।े ू 4.3 ज्ञान क

ी एक शाखा के रूप म ववज्ञान ें मनष्य का मन स्िर्ाि से ही विज्ञास होता ह,ै िो कछ र्ी हमारे आस पास , हमारे घर या समाि म ें घवटत ु ु ु होता ह,ै उसके बारे म ें िानने की हमारी विज्ञासा सहि और स्िार्ाविक ही होती ह ै । उदाहरि के वलए िषाभ

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 2 resources! id: **225**

क्यों होती ह?ै आसमान का रग नीला क्यों होता ह?ै कमपयटर के माध्यम से कै से दर बैठे व्यवक्तयों ू ं ू को दखे ा या सना िाता ह ै ? इस प्रकार क

े अनेक प्रश्न वनरतर हमारे मवस्तष्क म ें आते ही रहते ह ैं । इन सर्ी ु ं प्रश्नों के सही उत्तर

Plagiarism detected: **0.12%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 3 resources! id: **226**

प्राप्त करन े और सत्य की खोि म ें लग े रहने के कायभ को विज्ञान का नाम वदया िा सकता ह ै । विज्ञान अथाभत Science शब्द की उत्पवत्त लेवटन र्ाषा के शब्द Scire (To know) से हई ह,ै विसका अथभ ह ै िानना । इस प्रकार विज्ञान शब्द का अथभ उस ज्ञान से ह,ै िो हमारी बवि द्वारा ग्रहि ु वकया िाये तथा इस प्रकार

ग्रहि वकया गया ज्ञान शब्दों के माध्यम से दसरों तक प्रेवषत वकया िाये । ू सामान्य अथत में “सामान्य

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 6 resources! id: **227**

ज्ञान का सगवठत रूप विज्ञान ह।ै अथाि “ज्ञान का िमबि रूप विज्ञान ह ै ।” ं आइस्टीन के अनसा

Quotes detected: **0.05%** id: **228**

“हमारी ज्ञान अनर्वतयों की अस्त व्यस्त विवर्न्नता को एक तकभ पि भ विचार ृ ृ ू ू ं प्रिाली वनवमतभ करने के प्रयास को विज्ञान कहते ह।ैं ”

Plagiarism detected: **0.15%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 10 resources! id: **229**

ज्ञान की एक शाखा के रूप म ें विज्ञान का क्षेत्र अत्यत विस्तत एिम व्यापक ह ै । ररौवतक विज्ञान, िाि ृ ं विज्ञान, , वचवकत्सा विज्ञान, अन्तररक्ष विज्ञान , कवष विज्ञान, िै प्रोधोवगकी विज्ञान, रक्षा एिम परमाि ृ ृ उिाभ, आवद क्षेत्रों म ें िो ररी कछ आि उपलब्ध ह,ै िह विज्ञान की ही दने ह ै । विज्ञान के क्षेत्र म ें होने ृ िाली प्रगवत एिम विकास ने ज्ञान की एक शाखा के रूप म ें मानि िीिन के लगरग हर एक क्षेत्र को विस

तरह से प्ररावित वकया ह,ै यहााँ पर हम उसकी चचाभ करेंगे- 1. िैवनक जीवन में उपयोग - ररौवतक वि

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 2 resources! id: **230**

ज्ञान के अतगतभ दो उपविषय ररौवतकी एिम रसायन शास्त्र ं आते ह।ैं ररौवतक विज्ञान के माध्यम से छात्रों क

ो विवर्न्न पदाथो के गि धमो का अध्ययन करने , ृ उनका विश्लेषि सश्लेषि करके , उनकी रचना और उनके पारस्पररक प्रिरयाओं से अिगत होने का ं अिसर प्राप्त होता ह ै । िबवक िीि विज्ञान के अतगतभ तीन उपविषय िित विज्ञान, िनस्पवत विज्ञान ृ ं ं एिम सक्ष्म िीवै िकी आते

Plagiarism detected: **0.08%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 3 resources! id: **231**

ह ैं । िीि विज्ञान िीिों एिम िनस्पवतयों के गि धम भ एिम विशेषताओ के ू ृ ं बारे म ें िमबि अध्ययन करने म ें सहायता करता ह ै । िीि विज्ञान के ज्ञान के कारि ही हम रेशम के कीड़ों से रेशम एिम र्ड़े ों से ऊन प्राप्त

करके अपन े वलए िस्त्रों का वनमाभि कर पाते ह ैं । हमारे शरीर के विवर्न्न अगों की कायभप्रिाली , उनके रोगों एिम उन रोगों से वनदान कै से हो? , यह सब िीि

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… id: **232**

विज्ञान ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 101 ृ शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं के ज्ञान द्वारा ही सिरि हो पाता ह ै । िीि विज्ञान के आधवनक ज्ञान क

े कारि ही आि हमारे दशे के ृ ं वचवकत्सा विराग ने इतनी तरक्की कर ली ह ै वक वकसी ररी बड़े से बड़े रोग की िाच एिम वनदान ं आि हमारे दशे म ें ही सिरि ह ै । हमारे घरों म ें दवै नक िीिन म ें उपयोग वकये िाने िाले विवर्न्न ं उपकरि िसै े पखा, टीवी, कलर , ए. सी., यातायात के विवर्न्न साधन िसै े कार , बस , रेल ,विमान ू ं , यहााँ तक की वबिली ररी ररौवतक शास्त्र की ही दने ह ैं । इन सररी ससाधनों ने हमारे िीिन को ं सरल एिम सगमय बना वदया ह ै । इसी प्रकार हमारे दवै नक िीिन म ें उपयोग म ें आने िाली विवर्न्न ृ िस्तए िसै े : पीने का शि पानी ,विवर्न्न रोगों के वलए प्रयोग म ें आने िाली दिाइया, इिके शन, ृ ृ ं ं ं साबन, स्प्रे , शमे प कपडे , आवद सब रसायन

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 2 resources! id: **233**

विज्ञान के ज्ञान के कारि ही हमको प्राप्त हो रह े ह ैं । ृ ू 2. कवष- रारतीय कवष म ें िावत विज्ञान की ह

ी दने ह ै । लगरग 75% वकसानों ने उिरभ कों, कीटनाशकों ृ ृ ं ि कवष की आधवनक विवधयों को अपनाया ह,ै विसके फलस्िरूप फसलों एिम फलों की वकस्मों म ें ृ ृ सधार हआ ह ै । इस समबन्ध म ें रारतीय वशक्षा आयोग ने ररी वलखा ह ै वक

Quotes detected: **0.11%** id: **234**

“ ववज्ञान पि आधारित ृ नयी कवष प्रौद्योवगकी का ववकास सवातवधक महत्वपणत है वपछले सौ वषों में वव्श्व के अनेक ृ ू भागों में कवष में िावत आई है , जैसे- िासायवनक इवजवनयरिग तथा यावत्रकीकिण का ृ ं ं ं ं ववकास तथा जैव-वैज्ञावनक सोच में िावत आना मनष्य के िहने के ढग के वैज्ञावनक ृ ं ं िविष्टकोण से कवष प्रौद्योवगकी में अत्यत सधिा हआ है ”

। विज्ञान ही ह ै विसके महत्िपिभ ृ ृ ृ ू ं योगदान के कारि आि हम कवष के क्षेत्र म ें आत्मवनरभर हो गये ह ैं । आिादी से पहले िहााँ हमारे दशे ृ की समपि भ िनता को अनि उपलब्ध नही हो पाता था । िहीं विज्ञान के योगदान के कारि आि ू हमारा दशे इस वस्थती म ें ह ै वक दशे के सररी लोगों के वलए अन्न की आपवतभ करन े के बाद ररी हम ू आि अन्न का वनयाभत करने की वस्थती में ह ैं । आि रेवडयो एिम टेलीवििन पर प्रसाररत वकये िाने िाले विवर्न्न कवष आधाररत कायिमों

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **235**

के माध्यम से वकसानों को कीट वनयत्रि, फसलों की ृ ं दखे राल और खाद के प्रयोग

की उवचत िानकारी

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 11 resources! id: **236**

प्राप्त हो िाती ह।ै फलस्िरूप इन कायभिमों से वकसानों को फसलो को उन्नत बनाने के वलए उवचत ज्ञान प्राप्त होता ह,ै साथ ही उन्ह ें मौसम की पि भ ू िानकारी ्री हो िाती ह,ै व

िससे अब ि े फसलों की कटाई एिम बिाई के प्रवत सिग एिम ु सािधान रहने लग े ह।ैं 3. वचवकत्सा - वचवकत्सा के क्षेत्र म ें विज्ञान हमारे शारीररक स्िास्थ्य के साथ साथ मानवसक स्िास्थ्य को ्री बनाये रखने म ें महतिपि भ र्वमका वन्रा रहा ह।ै पहले विन र्याि रोगों के उपचार के वलए ू ू हम ें विदशे िाना होता था , विज्ञान के विकास के कारि , आि ऐसे वकसी ्री बड़े से बड़े रोग की वचवकत्सा सविधा हमारे दशे म ें ही उपलब्ध ह।ै आि सचार के विवर्न्न

Plagiarism detected: **0.05%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… + 3 resources! id: **237**

माध्यमों िसै े अख़बार, ु ं रेवडयो एिम टेवलविज़न के माध्यम से स्िास्थ्य समबन्धी सचनाए सदर ग्रामीि क्षेत्र तक पहचँी रही ह ैं । ू ु ं ू विज्ञान क

े द्वारा ही विवर्न्न रोगों िसै े- हिै ा, चचे क पर परी तरह से तथा टी.बी., पोवलयो ि बच्चों ू के वदमागी बखार पर काफी सीमा तक काब पा वलया गया ह ै । आि क्री असाध्य लगने िाले रोग ु ू िज्ञै ावनकों द्वारा खोिी गयी विवर्न्न दिाइयों, उपकरिों , ससाधनों, एिम तकनीवकयों के प्रयोग से ं असाध्य नही रह गये ह ैं । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 102 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 4. अन्तरिक्ष - आि हमारा दशे िज्ञै ावनक प्रगवत के पथ पर अग्रसर ह।ै ्रारत को आि उन सात दशे ों की श्रेिी म ें रखा िाता ह,ै िोवक उपग्रह छोड़ने की क्षमता रखते ह।ैं

Plagiarism detected: **0.12%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 7 resources! id: **238**

विज्ञान के द्वारा दरस्थ वशक्षा के ू क्षेत्र म ें िावत हई ह ै , एडसेट िसै े शवै क्षक उपग्रहों के माध्यम से हम ें आि घर बैठे ही वशक्षा के ु ं विवर्न्न कायभिमों की िानकारी ्री प्राप्त हो िाती ह।ै अन्तररक्ष म ें स्थावपत वकये गये विवर्न्न उपग्रहों के माध्यम से हम पथ्िी के िातािरि एिम महासागर पर वनगरानी रखकर ,मौसम की हर पल ृ िानकारी प्राप्त

करत े रहते ह ैं । हमारे पथ्िी के िातािरि म ें वकस प्रकार के पररितभन हो रह े ह ैं िसै े : ृ नलोबल िावमगिं ,ओिोन परत क्षरि , ये पररितभन क्यों हों रह े ह?ैं इन पररितभनों के वनकट र्विष्य म ें क्या दष्पररिाम हो सकते ह?ैं इन पररितभनों से होने िाले नकसान को कै से रोका िा सकता ह ै ? य े ु ु सारी िानकारी विज्ञान के कारि ही हमको प्राप्त हो पा रही ह।ै 5. िक्षा एवम पिमाण ऊिात- िज्ञै ावनक प्रगवत एिम विकास पर ही हमारे दशे की सरक्षा व्यिस्था वनर्रभ ु ु करती ह।ै विज्ञान ही ह ै विसके कारि हमारी सैन्य शवक्त एिम सगठन मिबत हो रहा ह।ै आि हमारे ू ं पास पथ्िी, आकाश, वत्रशल , नाग एिम अवनन िसै ी सफल वमसाइलें ह ैं ,िो हमारे दशे को विपरीत ृ ू पररस्थवत म ें वकसी ्री चनौती का सामना करने म ें सक्षम बनाती ह ैं और वकसी ्री विपरीत पररवस्थवत ु म ें हमारे दशे की सरक्षा करने में सक्षम ह।ैं ु 6. जैव प्रोधोवगकी ववज्ञान- िज्ञै ावनक िवष्टकोि से िैि प्रोधोवगकी एक नया विषय ह ै । आि िैि प्रोधोवगकी ही ह ै , विसके द्वारा हम वफगर वप्रवटग िसै ी तकनीकी का प्रयोग वकसी अपरावधक समस्या ं ं ं को सलझाने म ें करके , अपराधी को सिा वदलाने म ें सक्षम हो गये ह ैं । िैि प्रोधोवगकी की सहायता से ु ही हम , डी. एन. ए. टेवस्टग द्वारा वकसी बालक के िवै िक वपता की िानकारी ्री प्राप्त कर सकने म ें ं सक्षम हो गये ह।ैं इसके माध्यम से िहाँ एक ओर हमने कवष के क्षेत्र म ें फसलों की नयी नयी उन्नत ृ वकस्मों का विकास वकया ह ै ,िहीं दसरी ओर हमने रासायवनक उिरभ कों की वनर्रभ ता को कम करने के ू वलए िवै िक उिरभ कों का ्री विकास वकया ह ै । आि हम उत्पावदत खाद्य सामग्री को िैि प्रोधोवगकी के माध्यम से ही लमबे समय तक सरवक्षत रख सकते ह ैं । ु अभ्यास प्रश्न 1. विज्ञान अथाभत Science शब्द की उत्पवत्त______्राषा के शब्द ______से हई ह,ै विसका अथभ ह ै िानना। 2. ्रौवतक विज्ञान के अतगभत दो उपविषय ______ एिम ______आते ह।ैं ं 3. एडसेट पथ्िी के िातािरि पर वनगरानी रखने हते अन्तररक्ष म ें स्थावपत वकया गया एक उपग्रह ह।ै ृ ु ु (सत्य / असत्य) 4. वफगर वप्रवटग िसै ी तकनीकी का प्रयोग वकसी बालक के िवै िक वपता की िानकारी प्राप्त करने हते ु ं ं ं वकया िाता ह।ै (सत्य / असत्य) उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 103 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 4.4 ववज्ञान का स्कू ल पाठ्यक्रम म स्थान ें कोठारी आयोग ने अपनी ररपोटभ म ें स्पष्ट रूप स े वलखा था वक

Quotes detected: **0.04%** id: **239**

“ववज्ञान औि गवणत ववद्यालय जीवन के प्रथम िस वषों में सभी ववद्यावथतयों को उनकी सामान्य वशक्षा के रूप में अवनवायत रूप से पढाये जाने चावहए”

।

Plagiarism detected: **0.16%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 4 resources! id: **240**

विज्ञान और गवित की पढाई पर इन वदनों काफी िोर वदया िा रहा ह।ै हमारे दशे की प्रगवत और विकास के वलए यह अत्यत आिश्यक ह ै वक विज्ञान के अध्ययन के स्तर को ऊँचा ं वकया िाये और इन विषयों की वशक्षा पर छोटी कक्षाओ से ही ध्यान वदया िाये। आि विज्ञान का ं अध्ययन करने िाले छात्रों की सख्या म ें अप्रत्यावशत बढ़ोतरी हई ह ै । सरकार के द्वारा ्री छात्रों म ें विज्ञान ं की वशक्षा को प्रोत्सावहत करने के वलए विवर्न्न स्कीम चलायी गयी ह ैं ,विनके द्वारा छात्र

ों को वशक्षा हते आवश्यक मदद प्रदान की िाती ह।ै उदहारि के वलए NCERT , वदलली,

Plagiarism detected: **0.1%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 10 resources! id: **241**

प्रत्येक िष भ राष्ट्रीय विज्ञान ु प्रवत◌्रा खिो परीक्षा आयोवित करती ह ै ,इस परीक्षा के माध्यम से चन े गये छात्रों को विज्ञान विषय में ु वशक्षा प्राप्त करने हते आवथभक मदद प्रदान की िाती ह।ै ु सामान्यतया हम समय और समाि की माग के आधार पर ही स्कल के पाठयिम म ें वकसी विषय को ◌ृ ◌ू ं स्थान

Plagiarism detected: **0.09%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 6 resources! id: **242**

प्रदान करते ह।ैं वशक्षा को सस्कवत के सरक्षि, सिंधभन एिम हस्तान्तरि की प्रविया के रूप म ें ◌ृ ◌ं ◌ं ◌ं परर◌्रावषत वकया िाये या व्यवक्तत्ि के विकास एिम सामाविक विकास की प्रविया के रूप म ें परर◌्रावषत वकया िाये , विज्ञान का महत्ि स्ि्य ही स्पष्ट हो िाता ह ै । वकसी ◌्री दशे का विकास

उसकी आवथभक ं वस्थवत पर वनर्रभ करता , देश की आवथभक वस्थवत उत्पादन पर वनर्रभ करती ह ै और उत्पादन म ें अप्रत्यावशत िवि नयी िज्ञै ◌ावनक तकनीकी

Plagiarism detected: **0.21%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 9 resources! id: **243**

के प्रयोग के कारि ही सिंर् हो सकती ह।ै व्यवक्तत्ि के ◌ृ ◌ं विकास के वलए ◌्री व्यवक्त म ें िज्ञै ◌ावनक प्रिवत्त होना एिम उसका िज्ञै ◌ावनक विवधयों के प्रयोग म ें वनपि ◌ृ ु होना आिश्यक ह।ै इस प्रकार हम कह सकत े ह ैं वक आधवनक यग म ें प्रत्येक व्यवक्त के वलए विज्ञान ु ु विषय का ज्ञान अवनिायभ हो गया ह ै । अतः छात्रों को स्कल से ही विज्ञान वशक्षा सही प्रकार से दी िाये , ू इस उद्दश्े य को ध्यान म ें रखते हए हमारे स्कल पाठयिम म ें विज्ञान को एक अवनिायभ विषय बनाकर ◌ ू महत्िपि भ स्थान वदया गया ह।ै स्कल पाठयिम म ें विज्ञान को एक महत्िपि भ विषय के रूप म

ें रखकर हम ◌ ू ू ू छात्रों के व्यवक्तत्ि म ें िो पररितभन कर सकते ह ैं ,यहाँ पर हम उनकी विस्तत चचाभ करेंगे- ◌ृ 1. अन्धविश्वासों से मवि विलाना - विज्ञान एक ऐसा विषय ह ै विसम ें

Quotes detected: **0%** id: **244**

“क्या”,

Quotes detected: **0%** id: **245**

“क्यों”

एिम

Quotes detected: **0%** id: **246**

“कै से”

ु प्रश्न वनवहत होते ह।ैं िब छात्र स्कल की वशक्षा से ही विज्ञान का अध्ययन प्रारमर् कर दते ◌ा ह ै तो ये ू स◌्री प्रश्न छात्र के व्यवक्तत्ि का वहस्सा बन िाते ह।ैं अब छात्र अपने घर या आस पास के समाि म ें वकसी ◌्री घटना को दखे ता ह,ै तो उसका मन मवस्तष्क अपने आप ही उस घटना का विश्लेषि करन े लगता ह ै । िह उस घटना को यँू ही तब तक स्िीकार नही करता, िब तक उसको कोई ठोस प्रमाि ू नही वमल िाता । इसको हम एक उदाहरि की सहायता से समझ सकते ह ैं ,मान लीविये यवद वकसी

Plagiarism detected: **0.03%** https://alphabetsinhindi.com/hindi-alphabets-wi… id: **247**

विज्ञान पढने िाले छात्र को यह बताया िाता ह ै वक यज्ञ करने से र्गिान प्रसन्न होते ह ैं और

तब िषाभ होती ह ै , तो यह छात्र इस तथ्य को यँू ही स्िीकार नही करेगा ।िह स्ि्य यज्ञ करके दखे गे ◌ा और ू ं यवद प्रत्येक यज्ञ के बाद िषाभ नही हई तो िह इस तथ्य को वितभ या अस्िीकार कर दगे ◌ा वक यज्ञ ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 104 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं करने से िषा

Plagiarism detected: **0.2%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 6 resources! id: **248**

भ होती ह ै । इस प्रकार विज्ञान का अध्ययन करने से छात्र को समाि म ें व्याप्त अन्धविश्वास से ◌्री स्ि्य मवक्त वमल िाती ह ै । ु ं 2. कायत क्षमता में ववि किना- विज्ञान के अध्ययन से छात्र की कायभ क्षमता म ें ◌्री िवि होती ह।ै ◌ृ ◌ृ विस छात्र को विज्ञान की आधवनक तकनीवकयों का ज्ञान होता ह,ै िह अपने काय भ िज्ञै ◌ावनक ु तकनीकी की सहयता से शीघ्र एिम कम समय में समाप्त कर लेता ह ै । उदहारि के वलए यवद विज्ञान के छात्र को ई-मले का ज्ञान ह ै और िह वकसी दसरे दर बैठे व्यवक्त को कोई पत्र िर्े ना ू ू चाहता ह ै तो िह छात्र

परान े माध्यम यावन डाक के द्वारा अपना पत्र ना िर्े कर, दर बैठे व्यवक्त को ई- ु ू मले करेगा और कछ वमनट या सेके ण्ड म ें पत्र को ई-मले के माध्यम से दसरे व्यवक्त तक आसानी स े ु ू पहचा दगे ◌ा । इस प्रकार

Plagiarism detected: **0.1%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… id: **249**

विज्ञान के ज्ञान से ही हम े दवै नक िीिन के वकसी ॰री कायभ को कम समय, ं कम व्यय, ि कम श्रम म ें परा करने म ें सहायता वमलती ह ै । ू 3. तथ्यात्मक वचतन पिवत ववकवसत किना - विज्ञान छात्रों म ें तथ्यात्मक वचतन पिवत विकवसत ं ं करने म ें सहायक होता ह ै । विज्ञान क

ी प्रकवत ऐसी होती ह ै वक िब ॰री हम ें कोई नया तथ्य वमलता ह ै ृ तो हम उसके प्रकाश म ें परानी स॰ी धारिाओ को पनः परर॰ावषत कर लेते ह ैं । इस प्रकार इन परानी ु ु ु ं धारिाओ का के िल ऐवतहावसक महत्ि रह िाता ह।ै हमारे समाि म ें ॰री कछ रीवत-ररिा एिम ु ं सामाविक रुवड़याँ ह ैं िो पीड़ी डर पीड़ी चली आ रही ह ैं । विज्ञान छात्र म ें ऐसी वचतन पिवत ं विकवसत करता ह ै वक छात्र अपने आस पास के सामाविक िीिन म ें व्याप्त परानी परमपराओ को ु ं स्िय ही नए तथ्यों के प्रकाश म ें पनः परर॰ावषत करता िाता ह ै और रुवडयों से हमेशा के वलए मक्त ु ु ं होता िाता ह।ै उदहारिस्िरुप यवद वकसी विज्ञान के छात्र को उसके आस पड़ोस के लोगों द्वारा या घर के सदस्यों द्वारा यह बताया वदया िाता ह ै वक लड़वकया वसफभ कढ़ाई बनाई करने म ें दक्ष होती ह,ैं ु ं गवित के सिाल हल करने में दक्ष नही

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 4 resources! id: **250**

होती ह ैं । ऐसी वस्थवत म ें यवद यही छात्र अपनी कक्षा की वकसी सहपाठी को या अन्य वकसी छात्रा को गवित के सिाल हल करने म ें दक्ष पाता ह ै , तो िह

परानी धारिा को नए तथ्य के प्रकाश म ें पनः परर॰ावषत कर लेता ह ै और समझ लेता ह ै वक िो ु ु

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.myupchar.com/baby-names/boy-na… + 2 resources! id: **251**

प्राचीन तथ्य उसे समाि द्वारा बताया गया था िह महत्िहीन ह ै , एक लड़की ॰री गवित के सिाल हल करने म ें दक्ष हो सकती ह ै । इस प्रकार िह प्राचीन र

ुवडयों के बधन से ॰री मक्त हो िाता ह।ै ु ं 4. सामावजक प्रगवत के वलए तैयाि किना -

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… id: **252**

विज्ञान सामाविक प्रगवत के वलए छात्रों को तैयार करता ह।ै वकसी ॰री समाि की प्रगवत समाि म ें रहने िाले लोगों के िवष्टकोि पर वनर्रभ करती ह।ै विज्ञान क

ा अध्ययन ही हम ें यह बताता ह ै वक वकसी सिामक रोग के फै लने से बचाि करने के वलए क्या ं उपाय वकये िाये? अपने आस पास के िातािरि को वकस प्रकार शि रखा िाये? समाि के लोगों ु को विंष्य म ें अस्िच्छ पानी के सेिन से होने िाली स्िास्थ्य समबन्धी समस्यायों के प्रवत वकस प्रकार सचेत वकया िाये ?

Plagiarism detected: **0.09%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… id: **253**

विज्ञान छात्रों म ें समाि के प्रवत उत्तरदावयत्ि एिम सामाविक िािना का विकास करता ह ै । विज्ञान वचतन पिवत छात्रों को सकवचत िवष्टकोि से सािर्भ ौवमक िवष्टकोि की ु ं ं ओर ले िाती ह।ै आग े चलकर यही छात्र िब बड़े होकर समाि का वहस्सा बनते ह ैं तो ि े विज्ञान

उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 105 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं के द्वारा पररिवतभत अपने सािभ॰ौवमक िवष्टकोि की सहायता से सामाविक प्रगवत म ें सहायक होते ह ैं । 5. जीवन की दैवनक समस्याओ को वैज्ञावनक ववववध से हल किना वसखाना : विज्ञान छात्रों को ं उनके दवै नक िीिन म ें आने िाली वकसी ॰री समस्या को िैज्ञ ावनक विवध से हल करना वसखाता ह।ै िैज्ञ ावनक विवध के कछ वनवश्चत सोपान ह,ै पहला सोपान ह ै – समस्या की पहचान करना , दसरा ु ू सोपान ह-ै समस्या पर वचतन करना , तीसरा सोपान ह-ै वचन्तन के फलस्िरूप समस्या के िो ॰री हल ं सामने आयें, उनकी सत्यता िाचने के वलए प्रयोग करना, चौथा सोपान ह-ै प्रयोगों के पररिाम को ं अन्य पररवस्थवतयों म ें िाचना एिम पाचिा सोपान ह-ै िो पररिाम सही वसि हों, उन्ह ें वनयम मान ं ं लेना। उदाहरि के वलए यवद छात्र अपने घर पर टेलीविज़न पर कोई कायभिम देख रहा ह ै त॰ी टेवलविज़न चलते चलते अचानक बद हो िाये और स्िीन खाली वदखने लग,े तो छात्र सबसे पहले ये दखे ता ं ह ै की समस्या क्या ह ै ? क्या स॰ी चैनल पर टेलीविज़न की स्िीन खाली वदख रही ह?ै हर चैनल पर िह यही पाता ह ै की स्िीन खाली ही निर आ रही ह।ै अब िह इस पर वचतन करता ह ै वक हआ ं क्या ह ै ? क्या के िल आिाज़ नही आ रही ह,ै या तस्िीर ॰री नही आ रही ह ै या टेलीविज़न गरम हो गया ह ै उसके कारि ऐसा हो रहा ह ै । अब वचतन के फलस्िरूप उसके सामने एक हल आता ह ै वक ं के बल ऑपपरेटर की वबिली चली गयी होगी , विस िीह से ये हआ होगा । अब छात्र के बल ऑपरेटर को िोन करके इसकी पवष्ट करता ह ै और उसे पता चल िाता ह ै वक के बल ऑपरेटर के ु यहाँ वबिली चले िाने से ये समस्या हई ह,ै कछ ही समय म ें ये समस्या सही हो िाएगी और ु टेलीविज़न पर वफर से कायभिम प्रसाररत होने लगगें ।े इस उदाहरि के समान ही विज्ञान का छात्र अपने दवै नक िीिन की प्रत्येक समस्या को िैज्ञावनक विवध का प्रयोग करके ठीक प्रकार से हल करने म ें सक्षम हो िाता ह ै । 6. अनशासनात्मक िवष्टकोण ववकवसत किना - विज्ञान एक ऐसा विषय ह ै विसका अध्ययन करन े ु के वलए एकाग्रता, कवठन पररश्रम , वनयम, सव्यिवस्थत ज्ञान , वनयमानसार प्रयोगात्मक कायभ करन े ु ु की आिश्यकता िसै ी अनेक आिश्यक पररवस्थवतया ह ैं ,विनका पालन एक विज्ञान के छात्र को ं करना ही होता ह।ै अतः विज्ञान के छात्र म ें अनशासन से रहने की आदत का वनमाभि स्िय ही हो ु ं िाता ह ै 7. नैवतक मल्य ववकवसत किना - सच्चाई , ईमानदारी, न्यायवप्रयता, समय का पाबद

होना, दसरे के ू ं ू िविष्टकिो को सममान दने ा, दसरे के विचारों का आदर करना, र्ला बरा सोचने की सामथ्यभ रखना, ु ू वनयमों का पालन करना आवद स◌ री गि ि एक अच्छे चररत्र के वलए वनिाभयक ह ैं , विज्ञान के ु अध्ययन के फलस्िरूप छात्र म ें स्िय ही विकवसत हो िाते ह ैं । ं 8. सावतभौवमक िविष्टकोण ववकवसत किना - िज्ञै ावनक वचतन पिवत छात्रों म ें सिार्भ ौवमक िविष्टकिो ं विकवसत करने म ें सहायक होती ह।ै धम भ एिम सस्कवत की वचतन पिवत िले छात्र का िविष्टकिो ृ ं ं

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 4 resources! id: **254**

क्षेत्र विशेष की सीमा से बधा होता ह ै । िबवक विज्ञान के वनयम और व्याख्यायें वकसी क्षेत्र

या राष्ठ ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 106 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं की सीमा म ें बधे नही

Plagiarism detected: **0.03%** https://instapdf.in/hindi-varnamala-chart/ id: **255**

होते ह ैं । िज्ञै ावनक वचतन पिवत िाला छात्र वकसी र◌ी राष्ठ द्वारा विज्ञान क

े ं ं क्षेत्र म ें वकये गये योगदान को दखे कर, वबना वकसी र्दे िर्ा के उस राष्ठ का सममान करता ह ै । उसका वचतन एिम िविष्टकिो सकवचत नही होता ह ै अवपत सिार्भ ौवमक होता ह।ै ु ु ं ं अभ्यास प्रश्न 5. स्कल पाठयिम म ें विज्ञान को एक महत्िपि भ विषय के रूप में रखने से छात्रों के व्यवक्तत्ि म ें होने ृ ू ू िाले वकन्ही तीन पररितभनों को बताइये? 4.5 ववज्ञान वशक्षण की समस्याए ं एवम चुनौवतया ाँ : वैज्ञाववनक प्रववत्त को ृ अन्तवनर्वववष्ट करने म, इसकी ◌रूवमका के सन्दर् भ म एवम सामावजक आर्वथक ें ें ववकास के वाहक

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 4 resources! id: **256**

के रूप म ें विज्ञान की वशक्षा का मख्य उद्देश्य छात्रों म ें िैज्ञावनक प्रवित्त का विकास करना ह ै और साथ ही छात्रों को ृ ु सामाविक आवथभक विकास क

े वलए तैयार करना ह ै । पवण्डत ििाहर लाल नेहरु ने 1946 म ें अपनी पस्तक

Quotes detected: **0.01%** id: **257**

“ वडस्किरी ऑफ़ इवडया”

म ें िज्ञै ावनक प्रवित्त का सामान्य विचार स्पष्ट वकया था उन्होंने इसे ृ ु ं िीिन शलै ी, सोचने का तरीका, कायभ करन े का तरीका, तथा सहचरों के साथ व्यिहार करने का तरीका बताया था । िनमानस म ें िज्ञै ावनक िविष्टकिो का विकास हमारे सविधान के अनच्छेद 51, अ के अतगतभ ु ं ं मौवलक कत्तव्भ य म ें से एक ह।ै िष भ 1976 म ें 42 ि ें सविधान सशोधन म ें

Quotes detected: **0.01%** id: **258**

“िज्ञै ावनक प्रवित्त”

के साथ ृ ं ं

Quotes detected: **0.01%** id: **259**

“मनष्य िावत की सिेा”

को िोड़ा गया ह।ै इसी के साथ र◌ारत दवनया का पहला राष्ठ बन गया ह ै , विसने ु ु िज्ञै ावनक चेतना को नागररक कत्तव्भ यों म ें शावमल वकया ह ै । अन्िषे ि की प्रवित्त तथा प्रश्न पछे िाने का अवधकार िज्ञै ावनक प्रवित्त का मलाधार ह।ै अतः िैज्ञावनक ृ ृ ू ू प्रवित्त विकवसत करने के वलए छात्रों म ें िज्ञै ावनक ढग स े सोचने समझने की क्षमता और कायभ करने की ृ ं आदत होनी चावहए। छात्रों को वकसी र◌ी प्रकार के अधविश्वासों से दर रहकर वकसी र◌ी बात को वबना ं ू प्रयोग एिम परीवक्ष के स्िीकार नही करना चावहए। हमारी िनै , साख्य एिम बौि परमपराए र◌ी इसी मत ं ं का समथभन करती ह।ैं अतः विज्ञान की वशक्षा इस प्रकार दी िानी चावहए वक छात्रों म ें िज्ञै ावनक प्रवित्त ृ विकवसत की िा सके और उनम े तथ्यों को गहरायी से िानने की एिम नयी नयी बातों को िानने तथा खोिने की विज्ञासा बनी रह े । िहीं छात्रों को सामाविक आवथभक विकास हते तैयार करने के वलए यह ु िानना िरुरी ह ै वक वकस प्रकार रहने से एिम वकस प्रकार के कायभ करने से सामाविक एिम आवथभक विकास होगा। िसै े शरीर को स्िस्थ वकस प्रकार रखा िाये? छत की बीमाररयों को फै लने से कै से रोका ू िाये ? वकन िज्ञै ावनक तकनीवकयों का प्रयोग वकया िाये विनकी सहायता से कम धन , कम श्रम एिम उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 107 ु

Plagiarism detected: **0.08%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 4 resources! id: **260**

शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं कम समय म ें अवधक उत्पादन वकया िा सके ? इत्यावद इस प्रकार का सपि भ ज्ञान विज्ञान की वशक्षा के ू ं द्वारा ही प्राप्त वकया िा सकता ह।ै िज्ञै ावनक प्रवित्त को अन्तवनविभष्ट करने म ें तथा छात्रों को साम

ाविक आवथभक विकास हते तैयार करने म,ें ृ ु विज्ञान वशवक्ष के क्षेत्र म ें अनेक समस्यायें एिम चनौवतयाँ ह ैं यहाँ पर हम उन स◌ री की विस्तारपिकभ चचाभ ु ू करेंगे- 1. ववज्ञान वशक्षकों के वलए उवचत प्रवशक्षण कायतिम का अभाव - हमारे दशे म ें

Plagiarism detected: **0.15%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 4 resources! id: **261**

विज्ञान वशक्षको के वलए उवचत प्रवशक्षि कायभिम का अि्रा ह।ै कछ विद्यालयों म ें पयाभप्त ौवतक सविधाओ एिम ु ु ं नयी तकनीकी से पररपि भ प्रयोगशाला तो ह ैं वकन्त विज्ञान वशक्षकों को इन नयी तकनीकीयों को ू ु प्रयोग करने का ज्ञान ही नही ह ै । कक्षा म ें स्माटभ बोडभ ह,ैं कप्यटर ह,ैं लेवकन प्रि्राशाली विज्ञान ू ं वशक्षि के वलए इनका प्रयोग कै से करना ह,ै इसकी िानकारी विज्ञान वशक्षकों को नही ह।ै विज्ञान वशक्षकों को वशक्षि के क्षेत्र म

ें प्रयोग होने िाली नयी वशक्षि विवधयों का ्री उवचत ज्ञान नही ह ै , ि े आि ्री कक्षाओ म ें प्राचीन परपरागत वशक्षि विवधयों के माध्यम से ही वशक्षि कायभ समपावदत करते ं ं ह।ैं अतः विज्ञान वशक्षकों के प्रवशक्षि कायभिम म ें ितभमान समय के अनसार सधार वकये िाने की ु ु आिश्यकता ह ै । विवर्न्न नयी तकनीवकयों को कक्षा म ें वकस प्रकार प्रयोग करना

Plagiarism detected: **0.09%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 3 resources! id: **262**

ह ै , विज्ञान के क्षेत्र म ें नयी वशक्षि विवधयाँ कौन -सी ह ैं ,उनको प्रि्राशाली वशक्षि हते वकस प्रकार प्रयोग करना ह ै , ु विज्ञान वशक्षकों के प्रवशक्षि कायभिम म ें इसका प्रवशक्षि ्री शावमल वकया िाना चावहए। 2. उच्च गणवत्ता वाले ववज्ञान वशक्षकों का अभाव- हमारे दशे म ें उच्च गिित्ता िाले विज्ञान

ु ु वशक्षकों का पहले से ही अि्रा ह,ै क्योंवक हमारे दशे म ें वशक्षकों को पयाभप्त िते न नही वदया िाता ह,ै अतः िो कछ एक उच्च गिित्ता िाले कशल वशक्षक ह ैं ्री, ि े अच्छे िते न पाने की लालसा म ें ु ु ु अपने दशे म ें सिा प्रदान ना करके , दसरे दशे ों को पलायन कर िाते ह।ैं अतः आिश्यक ह ै की ू वशक्षकों के िते न िवृि की वदशा म ें प्रयास वकये िायें और ऐसा करके प्रवत्राशाली वशक्षकों के ृ पलायन को रोका िा सके । 3. कक्षा में वशक्षक की भवमका - हमारे विद्यालय की कक्षाओ म ें वशक्षक की र्वमका एक तानाशाह ू ू ं शाशक के समान हो

Plagiarism detected: **0.24%** https://bsebresult.in/ka-kha-ga-gha/ id: **263**

ती ह।ै छात्रों को वशक्षक से कोई प्रश्न करने की स्ितत्रता नही होती ह।ै वशक्षक िो ं कछ ्री िानता ह,ै उसे छात्रों के मन मवस्तष्क में र्र दने े की कोवशश करता ह,ै वबना इस बात की ु परिाह वकये की छात्रों को कछ समझ आ रहा ह ै वक नही , उनकी सीखने म ें कोई रूवच ह ै वक नही ु और उन्होंने कछ सीखा ह ै वक नही । छात्रों म ें िैज्ञावनक मनोिवत्त विकवसत करने हते छात्रों को वशक्षक ृ ु ु से प्रश्न करने की और अपने विचार व्यक्त करने की पि भ स्ितत्रता होनी चावहए। वशक्षक को छात्र की ू ं विज्ञासा को शात करने हते एक वमत्र के समान छात्रों का पथ प्रदशनभ करना चावहए तथा छात्रों को ु ं स्िय करके सीखने के अिसर प्रदान करने चावहए । ं 4. नवीन वशक्षण ववववधयों के ज्ञान

का अभाव - हमारे विद्यालय की

Plagiarism detected: **0.04%** https://setmygadget.com/k-se-gya-tak/ id: **264**

कक्षाओ म ें वशक्षक विज्ञान ं वशक्षि हते आि ्री प्राचीन परपरागत वशक्षि विवधयों का प्रयोग करते ह ैं । कक्षाओ म

ें विज्ञान िसै े ु ं ं प्रयोग आधाररत विषय को व्याख्यान विवध के माध्यम से ही पढाया िाता ह ै । िबवक छात्रों में उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 108 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं िैज्ञ ावनक मनोिवत्त विकवसत करने हते वशक्षक द्वारा प्रयोग प्रदशनभ विवध ,प्रयोगशाला विवध, कासेप्ट ृ ु ं मवै पग विवध िसै ी नई वशक्षि विवधयों का प्रयोग वकया िाना चावहए । वशक्षक कक्षा वशक्षि में ं निीन वशक्षि विवधयों का सफलतापिकभ प्रयोग कर सके , इसके वलए वशक्षकों को इन वशक्षि ू विवधयों के प्रयोग म ें प्रवशवक्षत वकये िाने की आिश्यकता ह ै । यवद आिश्यक हो तो वकसी विशेष प्रकरि के स्पष्टीकरि हते वशक्षकों को ,छात्रों को शवै क्षक भ्रमि पर ्री ले िाना चावहए, िसै े: वकसी ु परमािा अनसन्धान कें ि या वकसी फै क्री या वकसी मयवियम म ें छात्रों को शैवक्षक भ्रमि पर ले िाना। ु ु ू ऐसा करने से छात्रों म ें िैज्ञ ावनक प्रिवत्त प्रबल होगी । ृ 5. कक्षा में छात्रों की अवधक सख्या- विज्ञान एक ऐसा विषय ह ै विसम ें छात्रों को स्िय करके सीखने ं ं के अिसर प्रदान वकये िाने चावहए अथाभत छात्र द्वारा वकसी ्री तथ्य को स्िीकत या अस्िीकत करने ृ ृ का आधार छात्र के द्वारा स्िय वकये गये प्रयोग एिम परीक्षि के वनष्कष भ होने चावहए । कक्षा म ें छात्र ं को स्िय करके सीखने के अिसर प्रदान वकये िायेंग े त्री उनके अन्दर िैज्ञ ावनक प्रिवत्त विकवसत हो ृ ं सके गी, लेवकन हमारे स्कलों की कक्षाओ म ें छात्रों की सख्या इतनी अवधक ह ै वक प्रत्येक छात्र को ू ं ं स्िय करके सीखने के अिसर प्रदान करना सि्र् नही ह ै । ं ं 6. पाठयिम में प्रयोगात्मक कायत का अभाव- हमारा विज्ञान का पाठयिम सैवधतक ह,ै वकन्त ् ् ु ं व्यिहाररक नही ह ै । यह छात्रों को स्िय करके सीखने के अिसर प्रदान नही करता अवपत उनको ु ं तथ्यों को रट लेने की प्रिवत्त पर बल दते ा ह।ै अतः यह आिश्यक ह ै की विज्ञान के पाठयिम को ृ ् व्यिहाररक बनाया िाये प्रत्येक प्रकरि म ें प्रयोगात्मक वियाकलापों को अवधक स्थान वदया िाये। विससे की छात्रों म ें िैज्ञ ावनक प्रिवत्त का विकास हो सके और ि े वकसी तथ्य को रटने के स्थान पर ृ स्िय प्रयोग एिम परीक्षि करके ,उसके वनष्कष भ के आधार पर सीख सकें । ं 7. प्रयोगशाला में भौवतक सववधाओ का अभाव- विज्ञान प्रयोग आधाररत विषय ह,ै हमारे दशे के ु ं कछ स्कलों म ें या तो प्रयोगशाला ही नही ह ैं और यवद ह ैं ्री तो प्रयोगशालाओ म ें पयाभप्त ौवतक ु ू ं सविधाए ही नही ह।ै विनके अि्रा म ें एक कशल प्रवशवक्षत वशक्षक चाहकर ्री छात्र को ऐसा ु ु ं िातािरि ही प्रदान नही कर पाता ह ै वक छात्र विज्ञान िसै े विषय को स्िय प्रयोग करके सीख सके । ं अभ्यास प्रश्न 6. िनमानस म ें िैज्ञ ावनक िवष्टकोि का विकास हमारे सविधान के अनच्छेद ________के अतगतभ ु ं ं __________ म ें से एक ह।ै 7. िष भ __________में________ सविधान सशोधन म ें

Quotes detected: **0.01%** id: **265**

“िज्ञै ावनक प्रिवत्त”

के साथ

Quotes detected: **0.01%** id: **266**

“मनष्य िावत ृ ु ं ं की सिा”

को िोड़ा गया ह।ै 8. िज्ञै ावनक प्रिवत्त का मलाधार बताइये ? ृ ू 9. विज्ञान वशक्षि के क्षेत्र म ें आने िाली वकन्हीं दो समस्याओ को वलवखए ? ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 109 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 4.6 सारांश

Plagiarism detected: **0.23%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… + 9 resources! id: **267**

विज्ञान के अतगतभ होने िाली नयी नयी तकनीकीयों की खोि ें ि अविष्कार, वकसी ाी समाि एिम ं सस्कवत को एक प्रगवतशील स्िरूप प्रदान करते ह।ैं विज्ञान प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमारे िीिन के ृ ं प्रवत िवष्टकोि को प्रािवत करता ह ै , हमारे आवथभक एिम सामाविक पररितभनों को प्रोत्सावहत करता ह।ै विसके कारि कोई ाी देश या समाि उन्नवत के पथ पर आग े बढ़ता रहता ह ै । इस इकाई म ें हमने , ज्ञान की एक शाखा के रूप म ें विज्ञान हमारे िीिन के लगर्ग हर क्षेत्र को वकस प्रकार प्रािवत करता ह,ै इसके विषय म ें विस्तत अध्ययन वकया ह ै । विज्ञान का स्कल पाठयिम म ें क्या स्थान ह ै ? स्कल ृ ृ ू ू पाठयिम म ें विज्ञान को एक महत्िपि भ विषय के रूप म

ें रखकर हम छात्रों के व्यवक्तत्ि म ें िो पररितभन कर ृ ू सकते ह ैं , उनके विषय म ें विस्तारपिकभ िीिनभ वकया गया ह ै । साथ ही िज्ञै ावनक प्रिवत्त को अन्तवनविष्टभ ृ ू करने म ें एिम सामाविक आवथभक विकास के िाहक के रूप म ें ,

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… id: **268**

विज्ञान वशक्षि की क्या समस्याए एिम ं चनौवतयाँ ह ैं , इन समस्यायों और चनौवतयो को वकस प्रकार दर वकया िा सकता ह,ै इस पर ाी ु ु ू विस्तारपिकभ चचाभ की गयी ह ै । विज्ञान क

ी वशक्षा का मख्य उद्दश्े य छात्रों म ें िज्ञावनक प्रिवत्त का विकास ृ ू ु करना ह ै और साथ ही छात्रों को सामाविक आवथभक विकास के वलए तैयार करना ह ै । स्पष्ट ह ै वक िब तक हमारा विज्ञान वशक्षि उन्नत नही होगा, तब तक हम इन उद्दश्े यों को प्राप्त ही नही कर सकें ग े । अतः हम ें विज्ञान वशक्षि को उन्नत बनाने के हर सिर् प्रयास करने चावहये। ं 4.7 शब्द ावली 1. ववज्ञान :

Quotes detected: **0.01%** id: **269**

“ज्ञान का िमबि रूप विज्ञान ह ै ।”

4.8 अभ्य ास प्रश्न ों के उत्त र 1. लेवटन, Scire 2. ाौवतकी , रसायन शास्त्र 3. असत्य 4. असत्य 5. स्कल पाठयिम म ें विज्ञान को एक महत्िपि भ विषय के रूप में रखने से छात्रों के व्यवक्तत्ि म ें ृ ू ू होने िाले तीन पररितभन ह ैं - i. अधविश्वासों से मवक्त वमलना ु ं ii. कायभक्षमता म ें िवि होना ृ iii. िीिन की दवै नक समस्याओ को िज्ञै ावनक विवध से हल करना सीखना ं 6. 51, अ, मौवलक कत्तव्भ य 7. 1976, 42 िें उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 110 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 8. अन्िषे ि की प्रिवत्त तथा प्रश्न पछे िाने का अवधकार ृ ू 9.

Plagiarism detected: **0.03%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… + 2 resources! id: **270**

विज्ञान वशक्षि के क्षेत्र म ें आने िाली दो समस्याए ह ैं – ं i. विज्ञान

वशक्षकों के वलए उवचत प्रवशक्षि कायभिम का अिाि ii. पाठयिम म ें प्रयोगात्मक कायभ का अिाि ू 4.9 सदं र् भ ग्रंथ सची ू 1. माहश्वे री, िी. के . एिम माहश्वे री, सधा 2005. विज्ञान वशक्षि , आर. लाल. पवब्लके शन्स, ु मरे ठ 2. नेगी, प्रो. िे . एस. 2013. ाौवतक विज्ञान वशक्षि, अग्रिाल पवब्लके शन्स , आगरा 3. माहश्वे री, िी. के . 2005. आर. लाल. पवब्लके शन्स, मरे ठ 4. http://pragati.nationalinterest.in/2014/05/role-of-scientific-temper/ 5. http://therationalistsociety.com/blogging/?p=221 4.10 वनबधात्म क प्रश्न ं 1.

Quotes detected: **0.03%** id: **271**

“विज्ञान को विद्यालय के पाठयिम म ें महत्िपिभ स्थान वदया िाना एक उवचत वनियभ ह ै ।”

इस ृ ू कथन को विज्ञान द्वारा होने िाले लाािों के सन्दर् भ म ें स्पष्ट कीविए । 2. ज्ञान की एक शाखा के रूप म ें विज्ञान मानि िीिन को वकस प्रकार प्रािवत कर रहा ह ै ? विस्तार से िीिनभ कीविए । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 111 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं इकाई 5- िाषा : वि

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 4 resources! id: **272**

ज्ञान की एक शाखा के रुप में 5.1 प्रस्तािना 5.2 उद्दश्े य 5.3 ाषा: अथभ, पररााषा एि सप्रत्य ं ं 5.4 ाषा के तत्ि 5.5 ाषा ज्ञान की एक शाखा के रुप म

ें 5.6 पाठयिम में ाषा का स्थान ़ 5.7 समिा के विवर्न्न कायों में समरसता स्थावपत करने में ाषा की र्वमका ू 5.8 राष्रीय एकीकरि में ाषा की र्वमका ू 5.8.1 राष्रीय एकीकरि एि ाषा ं 5.9 ाषा वशक्षि की समस्याएँ एि चनौवतयाँ ु ं 5.10 साराश ं 5.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 5.12 सदर्भ ग्रथ सची एि सहयोगी पस्तकें ू ु ं ं ं 5.13 वनबधात्मक प्रश्न ं 5.1 प्रस्तावना मानि िावत की अवद्वतीय उपलवब्धयों का यवद उललेख वकया िाए तो ाषा का उस में अग्रिी स्थान ह।ै ाषा मनष्य की िह विवशष्ट उपलवब्ध ह ै िो उसे अन्य प्रावियों से अलग करती ह ै तथा समिा में विचार- ु विवनमय करने के योनय बनाती ह।ै यँू तो विचार-विवनमय या सप्रेषि सके तों के माध्यम से ी होता ह ै ू ं ं लेवकन ाषा सप्रेषि का सिोत्कष्ट माध्यम ह।ै ाषा सप्रेषि को प्रिाी बनाती ह ै विसके पररिामस्िरूप ृ ं ं समिा के विवर्न्न सदस्यों के मध्य सबध स्थावपत होता ह।ै दसरे शब्दों म ें यह ी कहा िा सकता ह ै वक ं ं ू ाषा के द्वारा ही सामाविक सबधों का वनमाभि होता ह।ै आचायभ हिारी प्रसाद वद्विदे ी ने ी कहा ह ै – ं ं

Quotes detected: **0.08%** id: **273**

“शब्द इसी उद्दश्े य से बनाए गए ह ैं वक व्यवक्त की िाना दसरे के वचत्त म ें आसानी से उतार दी िा सके । ू व्यवक्त यवद अपने आप में पररपि भ होता तो शब्द द्वारा अथभ को प्रकट करने िाली ाषा की आिश्यकता ू नहीं होती”

। थोड़ा और विस्तार म ें दखे ा िाए तो मानि समिा में ाषा द्वारा तीन प्रमख कायभ सपावदत ु ं वकए िाते ह-ैं प्रथम, विचारों के सप्रेषि का कायभ, वद्वतीय, सामाविक सबध स्थावपत करने का काय भ ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 112 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं तथा ततीय, ाषा के माध्यम से िैयवक्तक सचना पान े का कायभ। इस प्रकार, ाषा मानि समिा के वलए ृ ू अवत महत्िपि भ कायों का सपादन करता ह।ै अब यवद यह इतने महत्िपिभ कायों का सपादन करता ह ै तो ू ू ं ं इसका अध्ययन-अध्यापन ी प्रिािपि भ ढग से होना चावहए तावक अपने कायों का सपादन कर सकें । ू ं ं प्रिािपिभ अध्ययन-अध्यापन के वलए ाषा के पाठयिम म ें स्थान, समिा में ाषा की र्वमका, राष्रीय ़ ू ू एकता के वलए ाषा की आिश्यकता, आवद का ज्ञान, ाषा के अध्ययन-अध्यापन कायभ में लगे हए व्यवक्तयों के वलए आिश्यक ह।ै प्रस्तत इकाई की रचना इस उद्दश्े य से की गई ह ै वक ाषा के अध्ययन ु एि अध्यापन में लगे हए व्यवक्तयों को ाषा के सप्रत्यय का गहन ज्ञान हो सके तथा िह समिा एि राष्र ं ं ं के उत्थान म ें ाषा की र्वमका से पररवचत हो सके । ितभमान में ाषा वशक्षि की चनौवतयों को िान सकें । ू ु इस प्रकार यह इकाई ाषा वशक्षि एि अवधगम के कायभ म ें लग े हए व्यवक्तयों के वलए अवत उपयोगी ह।ै ं इसके इतर अन्य विषयों के वशक्षकों के वलए ी यह बहत उपयोगी ह।ै 5.2 उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप- 1. ाषा की पररााषा द े सकें ग।े 2. ाषा के सप्रत्यय की विस्तत वििेचे ना कर सकें ग।े ृ ं 3. ाषा के तत्िों का उललेख कर सकें ग।े 4. ाषा को ज्ञान की एक शाखा के रुप में स्थावपत कर सकें ग।े 5. विद्यालय पाठयिम म ें ाषा के स्थान पर तकभ पि भ चचा भ कर सकें ग।े ़ ू 6. समिा म ें समरसता स्थावपत करने म ें ाषा की र्वमका की वििेचनभ कर सकें ग।े ू 7. राष्रीय एकीकरि में ाषा की र्वमका का वििेचनभ कर सकें ग।े ू 8. ाषा वशक्षि की समस्याओ एि चनौवतयों का वििेचनभ कर सकें ग।े ु ं ं 5.3 ाषा: अथ,भ पवराषा एवं सप्रं त्यय अपने व्यापक अथभ म ें ाषा अवर्व्यवक्त का साधन ह ै विसमें मनष्य की ाषा के साथ– साथ, साके वतक ु ं ाषा एि पश-पवक्षयों की ाषाएँ ी शावमल होती ह।ै सकवचत अथभ में, ाषा का आशय वसफभ मनष्य ु ु ु ं ं की ाषा से ह।ै ाषाविज्ञानी ाषा का इसी अथभ म ें अध्ययन करते ह।ैं ाषा शब्द की व्यत्पवत्त ाष् ु धात से हई ह।ै ाष् धात का अथभ ह-ै अव्यक्त िािी या स्पष्ट िािी या मनष्य की िािी। अथाभत ु ु ु सकवचत अथभ म ें ाषा शब्द क प्रयोग मख्यतः मनष्य के उच्चारि अियिों द्वारा उच्चररत उन ध्िवन ु ु ु ं सके तों के वलए होता ह ै िो अथभिान होते ह।ैं पाविवन ने ी कहा ह-ै

Quotes detected: **0.01%** id: **274**

“व्यक्त िाचा समच्चारि”

े । ु ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 113 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं डॉक्टि भोलानाथ वतिािी ने ाषा को पररावषत करते हए कहा ह ै वक “ाषा उच्चारि अियि से उच्चररत यादृवच्छक ध्िवन प्रतीकों की िह व्यिस्था ह ै विसके द्वारा वकसी ाषा ाषी समिा के लोग आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते ह।ैं “ आचायत िवेंि नाथ शमात के अनसार, “ाषा यादृवच्छक ध्िवन सके त प्रिाली को कहते ह ैं विसकी ु ं सहायता से मनष्य परस्पर विचार-विवनमय या सहयोग करते ह।ैं “ ु चॉम्स्की के शवदों में , “अथभपि भ उच्चररत ध्िवनयों की वनयमानशावसत व्यिस्था ाषा ह।ै “ ू ु उपयक्त पररााषाओ से चार बातें स्पष्ट होती ह:ैं ु ं i. भाषा ध्ववन सके तों का समह है - ाषा का अवनिायभ अग ध्िवन ह।ै ध्िवन मनष्य की ू ु ं ं िागवियों एि वनःश्वास िाय की अतविभ या के पररिामस्िरूप उत्

Plagiarism detected: **0.05%** https://setmygadget.com/k-se-gya-tak/ id: **275**

पन्न होती ह।ै इसे ध्िवन या ध्िवन ु ं ं ं समह को ाषा कहते ह।ैं ू ii. यह ध्ववन सके त यादृवच्छक होते हैं - य

ादृवच्छक का अथभ होता ह ै मनगढ़त या अपनी इच्छा से ं ं वनवमतभ । ध्िवन सके त विस अथभ का प्रवतवनवधत्ि करते ह ैं इनका उसके साथ कोई सबध नहीं होता ं ं ं ह।ै िसै े- आम िो वक एक िक्ष का प्रवतवनवधत्ि करता ह,ै सस्कत म ें उसी के वलए रसाल तथा ृ ृ ं अग्रेिी में मगैं ो शब्द का प्रवतवनवधत्ि करता ह।ै दसरे शब्दों में हम यह कह सकत े ह ैं वक ध्िवन ं ू और अथभ में कोई तावकभ क सबध नहीं होता ह।ै ं ं iii. ये ध्ववन सके त रुढ़ होते हैं - समय के साथ-साथ एक अथभ विशषे का प्रवतवनवधत्ि करने के ं वलए विशषे ध्िवन सके तों का समह समिा में प्रवसि हो िाता ह।ै इसे ही ध्िवन सके त या ध्िवन ू ं ं सके त के समहों का रुढ़ हो िाना कहा िाता ह।ै अब प्रश्न यह उठता ह ै वक अथभ और ध्िवन म ें ू ं यवद कोई तावकभ

क सबध नहीं ह ै तो एक विशषे ◌राषा ◌राषी समिा के अवधकाश सदस्य द्वारा एक ◌ं ◌ं ◌ं अथभ विशेष को व्यक्त करने के वलए एक ही ध्िविन सके त या ध्िविन सके तों के समह का प्रयोग ◌ू ◌ं ◌ं क्यों वकया िाता ह।ै अथाभत आम को आम ही क्यों कहा िाता ह,ै कटहल क्यों नहीं कहा िाता ह?ै iv. ध्ववन सके त अथतवान होते हैं-

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindigrammarworksheet.blogspot.com/2… id: **276**

प्रत्येक ध्िविन सके त एक अथभ का प्रवतवनवधत्ि करते ह।ैं ◌ं ◌ं उपरोक्त विवेचे न के आधार पर ◌राषा को इस प्रकार

परर◌ावषत वकया िा सकता ह-ै "मनष्य की ◌ु िागवें िियों िए वनःश्वास िाय की अतविभ या के पररिामस्िरुप उत्पन्न ध्िविन या ध्िविनयों के समह ◌ु ◌ू ◌ं ◌ं विनके द्वारा विचारों के सप्रेषि का कायभ सपन्न होता ह,ै ◌राषा कहते ह"ैं । ◌ं ◌ं 5.4 ◌राषा के तत्व वकसी िस्त के वनमाभि में प्रयक्त सामग्री को उस िस्त का तत्ि कहते ह।ैं यथा- मानि शरीर के वनमाभि म ें ◌ु ◌ु ◌ु पााँच मल तत्ि होते ह-ैं वक्षवत, िल, पािक, गगन और समीर। मवतभ के वनमाभि में मल तत्ि होता ह ै वमट्टी। ◌ू ◌ू ◌ू अब यवद इन मल तत्िों को हटा वदया िाए तो इनसे वनवमभत िस्त का अवस्तत्ि ◌री समाप्त हो िाता ह।ै ◌ू ◌ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 114 ◌ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ◌ं वमट्टी ह ै तो मवतभ अन्यथा नहीं। अतः, यवद ◌राषा ह ै तो इसके कछ मलर्त तत्ि ◌री होंग े और िे े तत्ि ह-ैं ◌ू ◌ु ◌ू ◌ू ध्िन्यात्मकता (साउड एवलमटें) और अथभित्ता (मीवनग एवलमटें)। ध्िविन और अथभ के अिरा म ें ◌राषा ◌ं ◌ं की कलपना नहीं की िा सकती ह ै । अभ्यास प्रश्न 1. ◌राषा शब्द की व्यत्पवत्त ___________धात से हई ह।ै ◌ु ◌ु 2.

Quotes detected: **0.01%** id: **277**

'व्यक्त िाचा समच्चारि'

यह कथन_______________ ह।ै ◌ु ◌ं 3. अथभ और ध्िविन या ध्िविन समह म ें तावकभ क सबध ________ होता ह।ै ◌ू ◌ं ◌ं 4. सकवचत अथभ म ें ◌राषा से आशय वसफभ ____________की ◌राषा से ह।ै ◌ु ◌ं 5. ध्िन्यात्मकता िए अथभित्ता _______________ के तत्ि ह।ैं ◌ं 6. डॉ० ◌रोलानाथ वतिारी के अनसार ◌राषा को परर◌ावषत कीविए । ◌ु 7. आचायभ दिे िं नाथ शमाभ ने ◌राषा को वकन शब्दों म ें परर◌ावषत वकया ह।ै 8. चॉमस्की के अनसार, ◌राषा की परर◌राषा क्या ह?ै ◌ु 9. ध्िविन सके त के यादृवच्छक होने से आप क्या समझते ह?ैं ◌ं 10. ध्िविन सके त के रुढ़ होने से क्या आशय ह?ै ◌ं 5.5 ◌राषा ज्ञान की एक शाखा के रुप म ें उपरोक्त विवेचे न से स्पष्ट ह ै वक ◌राषा का समिा म ें महत्िपि भ स्थान ह।ै ◌राषा के कारि ही मनष्य एक-दसरे ◌ू ◌ु ◌ू के वनकट आए। उनके मध्य सबध स्थावपत हए और समिा का वनमाभि हआ। इस प्रकार, ◌राषा समिा का ◌ं ◌ं एक महत्िपि भ अग ह।ै िब मनष्य ने एक साथ रहना प्रारर् वकया उस समय उनके द्वारा कछ मलय, ररती- ◌ू ◌ु ◌ु ◌ू ◌ं ◌ं ररिरा परपराए,ाँ

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.myupchar.com/baby-names/boy-na… id: **278**

विश्वास आवद विकवसत की गई तावक समिा के विवर्न्न सदस्यों के बीच सघषभ ना हो ◌ं ◌ं ◌ं और सामाविक िीिन शलै ी का विकास हो सके । आने िाली सतवत को इन मलयों, विश्वास

ों, रीवत- ◌ू ◌ं ररिरों, परपराओ, आवद विन्ह ें की सयक्त रुप से सस्कवत कहा िा सकता ह,ै हस्तातररत करन े की ◌ृ ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं आिश्यकता ने वशक्षा को िन्म वदया। ◌राषा के वबना तो वशक्षा की कलपना ◌री नहीं की िा सकती ह।ै अथाभत वशक्षा ग्रहि करने िए वशक्षा प्रदान करने के वलए ◌राषा एक अवनिायभ आिश्यकता ह।ै कालातर ◌ं ◌ं में ज्ञान के नतन आयाम विकवसत होते गए और उन्ह ें अविभत करने के वलए ◌राषा की आिश्यकता बढ़ती ◌ू गई। इस प्रकार, ◌राषा मानि समिा की एक महत्िपि भ आिश्यकता ह।ै अब प्रश्न यह उठता ह ै वक इस ◌ू महत्िपिभ तथ्य को व्यवक्त सीखता कै से ह?ै क्या यह िन्मित ह ैं या वफर इसे मनष्य समिा के साथ ◌ू ◌ु अतविभ या करके सीखता ह?ै इस प्रश्न के उत्तर में यह कहा िा सकता ह ै वक ध्िविनयों को उत्पन्न करने की ◌ं शवक्त बालक म ें िन्मित होती ह ै और िावगवन्ियों म ें पररपक्िता के साथ-साथ बालक ध्िविनयााँ उत्पन्न उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 115 ◌ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ◌ं करने लगता ह।ै लेवकन उवचत रुप से बोलने की शवक्त का विकास पररिार िए समिा के साथ अतविभ या ◌ं ◌ं करने से ही होता ह।ै कब कौन सी ध्िविन उत्पन्न करनी ह,ै कौन सी ध्िविन कब वकस अथभ का प्रवतवनवधत्ि करेगी, आवद तथ्यों का ज्ञान तो समिा के साथ अतविभ या के पररिामस्िरुप ही उपाविभत हो पाता ह।ै ◌ं अथाभत ◌राषा को सीखना पड़ता ह।ै अब िब ◌राषा मानि समिा के वलए इतना महत्िपिभ ह ै और यह ◌री ◌ू

Plagiarism detected: **0.08%** https://www.myupchar.com/baby-names/boy-na… + 2 resources! id: **279**

स्पष्ट हो गया ह ै वक यह िन्मित नहीं ह,ै इसे अवितभ करना पड़ता ह ै तो ज्ञान के अन्य शाखाओ की तरह ◌ं इसे ◌री ज्ञान की एक शाखा के रुप में स्थावपत वकया िा सकता ह।ै ज्ञान की एक शाखा के रुप म

ें स्थावपत कर इसके औपचाररक अध्ययन-अध्यापन का लार् यह हआ ह ै वक व्यवक्त वसफभ स्िय की ◌राषा का ही ◌ं अध्ययन नहीं कर रहा ह ै िरन अन्य ◌राषा ◌राषी समिा के ◌राषाओ को ◌री सीख रहा ह।ै इसके ◌ं पररिामस्िरुप विवर्न्न ◌राषा◌राषी दो या अवधक समिा एक दसरे के सपकभ में आ रह े ह।ैं उनके मध्य ◌ं ◌ू वनकटता स्थावपत हो रही ह ै और िसधै कटबकम वक हमारी धारिा को बल वमल रहा ह।ै ◌ु ◌ु ◌ुं नलोबलाइिेशन को हम इसके पररि

Plagiarism detected: **0.08%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 6 resources! id: **280**

म के रुप म ें दखे सकते ह।ें 5.6 पाठ्यक्रम म ्राषा का स्थान ें ्राषा की परर्राषा एि ज्ञान की एक शाखा के रुप म ें उसकी स्थापना से पाठयिम म ें उसका स्थान स्ितः ृ ं स्पष्ट हो िाता ह।ै इसे वनमन तत्िों के माध्यम स

े और स्पष्ट वकया िा सकता ह:ै 1. पाठयिम वनमाभि के विवर्न्न वसातों में से एक वसात विषयों के समिाशे न से सबवधत ह।ै इस ृ ं ं ं ं ं वसात के अनसार, पाठयिम में उन विषयों का समिोश आश्यक ह ै होता ह ै िो विद्याथी के ृ ु ं बौविक, मानवसक, चाररवत्रक, सिनात्मक एि ि्रात्मक शवक्तयों के विकास में सहायक हो, िो उस ृ ं में सामाविक और राष्ट्रीय गिों की समवि करे तथा उसके िीिन की समस्त आश्यक्ताओ की पवत भ ृ ु ू ं में सहायक हो। दसरे शब्दों में कहा िा सकता ह ै वक व्यवक्तत्ि के सिांगीि विकास के वलए ू आश्यक विषयों का समिोश पाठयिम म ें वकया िाना चावहए। ्राषा इसके वलए सिाभवधक ृ महत्िपि भ विषय ह ै और इस दवष्ट से पाठयिम म ें इसका स्थान सिोच्च ह।ै ृ ू 2. ्राषा वसफभ एक विषय मात्र ही नहीं ह ै िरन अन्य विषयों के अध्ययन-अध्यापन का माध्यम ्री ह।ै अथाभत ्राषा ज्ञान की एक शाखा के साथ-साथ ज्ञान के अन्य शाखाओ के अिनभ का साधन ह।ै ं विद्याथी म ें ्राषाई योनयता वितनी परिपक्ि होगी बालक उतनी ही शीघ्रता से पाठय सामग्री को ग्रहि ृ करता ह।ै अतः, ्राषा की वशक्षा पर विशेष बल प्रदान वकया िाना चावहए और यह विशेष बल तब प्रदान हो सकता ह ै िब पाठयिम म ें इसका विशषे स्थान हो। ृ 3. बह्राषी राष्ट्र होने के कारि ्राषा की वशक्षा और महत्िपि भ हो िाती ह।ै ्राषा की उवचत वशक्षा से ू हम एक-दसरे की ्राषा को समझ पाएगेँ ।े हमारे मन म ें उनके प्रवत सममान पैदा होगा और पररिाम ू स्िरुप राष्ट्र म ें व्याप्त ्राषाई समस्या में कमी आएगी। अतः, पाठयिम म ें ्राषा का महत्िपि भ स्थान ृ ू होना चावहए। उपरोक्त विेचे न के आधार पर यह कहा िा सकता ह ै वक पाठयिम में ्राषा का स्थान ृ अवनियभतः सिोपरर ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 116 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं अभ्यास प्रश्न 11. वशक्षा ग्रहि करने एि वशक्षा प्रदान करने का सशक्त माध्यम__________ह।ै ं 12.

Plagiarism detected: **0.04%** https://matrawaleshabd.org/hindi-ka-kha-ga/ id: **281**

ध्िवन उत्पन्न करने की शवक्त बालक म ें _____________ होती ह।ै 13. ्राषा ज्ञान िास्ति म ें व्यवक्त का _____________ के साथ

अतविभ या का पररिाम ह।ै ं 14. पाठयिम म ें ्राषा का स्थान _____________ ह।ै ृ 5.7 समाज के वववर्न्न इकाइयों म समरसता स्थावपत करने म ्राषा की ें ें ्रूवमका समाि के विवर्न्न वि्रागों में समरसता का होना अवत आश्यक ह।ै विस प्रकार से सगीत यवद मधर नहीं ु ं होता ह ै तो शोर कहलाता ह ै और आनददायक नहीं होता ह ै उसी प्रकार यवद समाि के विवर्न्न वि्रागों ं में अथाभत समाि के विवर्न्न सस्थानों, उसके सदस्यों, उसके आदशों, आवद म ें समरसता ना हो तो समाि ं विरुवपत हो िाता ह ै और इसके विवर्न्न इकाइयों में द्वद को िन्म वमलता ह।ै पररिामस्िरुप सामाविक ं असतलन म ें िवि होती ह।ै ऐसी वस्थवत उत्पन्न न हो इसके वलए समाि में समरसता का होना आश्यक ृ ु ं ह।ै अब प्रश्न यह उठता ह ै वक समरस समाि हारमोवनयस सोसाइटी वकसे कहगें ।े एक समाि समरस तब कहा िाएगा िब िह अपने स्री सदस्यों के साथ एक समान व्यिहार करता ह ै तथा सब को समान अिसर

Plagiarism detected: **0.04%** https://instapdf.in/hindi-varnamala-chart/ id: **282**

प्रदान करता ह।ै समरसता िह आनददायक प्रि्रा ह ै िो विवर्न्न घटकों से सयक्त होकर एक होने से उत्पन्न होता ह

।ै ु ं ं समरसता से तात्पयभ एकरुपता से कदावप नहीं ह।ै यह विचारों, व्यिहारों या वियाओ में एकरुपता का नाम ं नहीं ह।ै यह तो एक ऑके स्रा की तरह ह।ै विस प्रकार से ऑके स्रा में गायक, िादक और सचालक ं वमलकर आनवदत करने िाल े कायभिम की प्रस्तवत करते ह ें उसी प्रकार विवर्न्न घटक वमलकर िब वकसी ु ं एक िस्त का वनमाभि करके आनद प्रदान करते ह ें तब उसे समरसता कहते ह।ें ु ं समाि विविध प्रकार के मनष्यों एि सस्थाओ का एक सगठन ह।ै प्रत्येक सस्था या व्यवक्त की अपनी ु ं ं ं ं ं आश्यकताएँ होती ह,ें अपने लक्ष्य होते ह।ें ि े अलग-अलग ्राषाएँ बोलते ह।ें उनका धम भ अलग होता ह,ै सस्कवत अलग होती ह ै लेवकन वफर ्री उन्ह ें एक साथ कायभ करना होता ह ै तावक हम समाि के लक्ष्य, िो ृ ं वक व्यवक्तगत लक्ष्य से श्रेष्ठ होता ह,ै को प्राप्त कर सकें । एक समरस समाि से आशय ऐसे समाि से ह ै विसम ें सबके वलए सरक्षा, सममान, समान अिसर और िीविकोपािनभ के उवचत साधन हो। इसके वलए ु समाि के प्रत्येक सदस्य को अपनी प्रवत्रा के विस्तार का अिसर एि सामाविक वस्िकवत वमलनी ृ ं चावहए। ्राषा एि समाि एक दसरे से अवत घवनष्ठ रुप से सबवधत ह।ै ्राषा समाि में अने

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **283**

क प्रकार के कायभ ं ं ं ू वनष्पावदत करता ह।ै समाि ्री ्राषा को विस्तार प्रदान करता ह।ै इस प्रकार द

ोनों एक-दसरे के परक ह।ें ू ू अगर यह कहा िाए की दोनों एक-दसरे के अवस्तत्ि के वलए आश्यक ह ै तो यह अवतशयोवक्त नहीं होगी। ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 117 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं समाि म ें सप्रेषि, शावत, सामाविक व्यिस्था, सत्ता एि अवधकाररता के प्रकटीकरि तथा सामाविक ं ं ं उद्दश्े यों के प्रकटीकरि के वलए ्राषा एक उपकरि

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 2 resources! id: **284**

के रुप म ें कायभ करता ह।ै लेवकन ्राषा का अगर त्रवटपि भ ढग से या अनप्रयक्त ढग से प्रयोग हो िाता ह ै तो िह

समिा की सारी व्यिस्था को वछन्न-वर्न्न ु ू ु ु ं ं कर दते ा ह।ै अतः, ्राषा को व्यवक्तगत वर्न्नता को महत्ि दते े हए द्वद को समाप्त करने िाला होना तथा ं सामाविक मलयों को बढ़ाा दने िाला होना चावहए। ू इस प्रकार, यह कहा िा सकता ह ै वक सामाविक सबधों को बनाए रखन े में ्राषा सहायता करता ह।ै ्राषा ं ं न वसफभ सामाविक सबधों को बनाए रखने में सहायता करता ह ै अवपत यह ्राषा एि उसके

Plagiarism detected: **0.11%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 2 resources! id: **285**

प्रयोक्ता के ृ ं ं ं मध्य सबधों की ्री िानकारी दते ा ह।ै ं ं ्रारत एक बह्राषी राष्ट्र ह।ै बह्रावषकता से आशय एक से अवधक ्राषाओ के प्रयोग से ह।ै ऐसे म ें ्राषा ं की वर्मका और ्री सशक्त हो िाती ह ै क्योंवक एक ्राषा एक सस्कवत का द्योतक होती ह ै और अगर ृ ू ं ्राषा का सही ढग से प्रयोग नह

ीं वकया िाए तो विवर्न्न ्राषा्राषी समहों के मध्य विवाद प्रबल हो िाता ू ं ह।ै ्राषा समिा के विवर्न्न सदस्यों के मध्य सेत का कायभ करती ह।ै िह उन्ह ें एक-दसरे के करीब लाती ह,ै ु ू एक-दसरे को समझने का अिसर दते ी ह।ै इसके पररिामस्िरुप पारस्पररक सबधों म ें प्रगाढ़ता स्थावपत ं ं ू होती ह ै िो कालातर म ें समरुपता में पररवितभत हो िाती ह।ै ं 5.8 राष्ट्रीय एकीकरण म ्राषा की ्रूवमका ें राष्ट्रीय एकीकरि म ें ्राषा की वर्मका को समझने से पहले राष्ट्रीय एकीकरि को समझना आिश्यक ह।ै ू राष्ट्रीय एकीकरि िास्ति में एक अमतभ सप्रत्य ह।ै समस्त अलगािादी प्रिवतयों से ऊपर उठकर राष्ट्र को ृ ू ं एक सत्र म ें बाँधने के प्रयास को राष्ट्रीय एकीकरि की सज्ञा दी िाती ह।ै दसरे शब्दों म ें कहा िाय तो यह ू ं ू एक राष्ट्र िो वक र्वम एि र्वमिासी, िन तथा िनसस्कवत तीनों का सवममवलत स्िरुप ह।ै इस प्रकार, ृ ू ू ं ं रष्ट्रीय एकीकरि राष्ट्र के स्री नागररकों म ें समावहत सामवहकता, एकता एि भ्रातत्ि की िािना आवद के ृ ू ं विकास की प्रविया ह।ै वनमनवलवखत परर्राषाओ के माध्यम से इसके अथभ को और अवधक स्पष्ट वकया ं िा सकता ह।ै डॉक्टर बेदी के अनसार, "राष्ट्रीय एकता का अथभ ह-ै दशे के विवर्न्न राज्यों के व्यवक्तयों की आवथभक, ु सामाविक, सास्कवतक एि ्राषा विषयक विवर्न्नताओ को िाछनीय सीमा के अतगभत रखना और उनमें ृ ं ं ं ं ं ्रारत की एकता का समािशे करना"। राष्ट्रीय एकता सममले न म ें राष्ट्रीय एकीकरि को परर्रावषत करते हए कह गया ह ै वक "राष्ट्रीय एकता एक मनोिज्ञै ावनक तथा शवै क्षक प्रविया ह ै विसके द्वारा लोगों के वदलों में एकता, सगठन एि सवन्नकटता की ं ं िािना, सामान्य नागररकता की िािना और राष्ट्र के प्रवत र्वक्त की िािना का विकास वकया िाता ह।ै सक्षेप म ें यह कहा िा सकता ह ै वक राष्ट्रीय एकता का प्रयास ही राष्ट्रीय एकीकरि ह।ै ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 118 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 5.8.1 िा

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… id: **286**

ष्ट्रीय एकीकिण एव भाषा ं ्राषा राष्ट्रीय एकीकरि के माग भ की सबसे बड़ी बाधा एि सबसे बड़ा समाधान दोनों ह।ै राष

्रीय एकता के ं विघटनकारी तत्िों म ें से ्राषा एक प्रमख तत्ि ह ै और उसका ज्िलत उदाहरि ह ै राज्य पनगठभ न आयोग ु ु ं द्वारा ्राषाई आधार पर राज्यों का पनगठभ न। ्राषा राष्ट्रीय एकता का सशक्त माध्यम ह ै क्योंवक उसी ्राषा ु के प्रयोग से ही महात्मा गाधी िी ने समस्त राष्ट्र को एक सत्र म ें बाँधकर दशे को स्ितत्र कराया। ू ं ं अब प्रश्न यह उठता ह ै वक राष्ट्रीय एकता की आिश्यकता क्या ह?ै िब हम सब एक राष्ट्र के िासी ह ैं तो एकता स्िा्राविक रुप से होनी चावहए लेवकन विि्रानकारी शवक्तयों के प्रि्रा म ें आकर यह खवडत होने ं लगती ह।ै ये विर्दे नकारी शवक्तयाँ वनमनवलवखत ह:ैं □ िावतिाद □ साप्रदावयकता ं □ ्राषािाद □ क्षेत्रिाद □ िोट की रािनीवत □ प्रातिाद आवद। ं इन विघटनकारी शवक्तयों के प्रि्रा को ्राषा के माध्यम से समाप्त वकया िा सकता ह।ै वशक्षा आयोग 1964-66 ने अपने प्रवतिदे न में इस सदर् भ में कछ सझाि वदए थें िो वनमनित ह-ैं ु ु ं 1. स्कल तथा कॉलेिों म ें वशक्षा का माध्यम मात्राषा हो और उच्चतर वशक्षा का माध्यम प्रादवे शक ृ ू ्राषाए ँीं बनाई िाए।ँीं प्रादवे शक ्राषाओ में पस्तक एि सावहत्य तैयार वकए िाए।ँीं वहदी के अवतररक्त ु ं ं ं स्री आधवनक ्रारतीय ्राषाओ के अतराभज्यीय आदान-प्रदान का साधन बनाया िाए। ्रारत की ु ं ं विवर्न्न ्राषाओ को सवनयोवित ढग से प्रोत्सावहत वकया िाए। ु ं ं 2. ्राषा एि यिाओ का सशवक्तकरि- यिाओ के सशवक्तकरि से आशय उन्ह ें शारीररक रुप से सशक्त ु ु ं ं ं करना नहीं ह ै बवलक उन्ह ें स्री प्रकार की सख-सविधाएँ तथा उपयक्त िातािरि प्रदान करना ह ै तावक ु ु ु िह सकारात्मक पररितभन म ें योगदान दके र अपन े िीिन को आनवदत कर सकें । ्राषा इसका एक ं प्रमख मलर्त उपकरि ह।ै यह समिा के िवचत िग भ और आरवक्षत सदस्यों के बेहतरी का प्रमख ु ू ू ु ं साधन ह।ै सामाविक न्याय एि समता के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रमख उपकरि वशक्षा ह।ै समिा ु ं

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व… id: **287**

विज्ञानी, इसे समिा के िवचत और हावशए पर रह रह े सदस्यों के कलयाि का श्रेष्ठ उपकरि मानते ह।ैं ं इस प्रकार, ्राषा यिाओ को उपयक्त िातािरि प्रदान करता ह

ै तावक यह सशक्त होकर समिा म ें ु ु ं सकारात्मक पररितभन ला सकें । इसके मध्यम से उनमें राष्ट्र के प्रवत एकता की िािना प्रबल होती ह ै और राष्ट्रीय एकीकरि को बल वमलता ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 119 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 3. ्राषा, सावहत्य एि राष्ट्रीय एकीकरि- ्राषा या विवर्न्न ्राषाओ के सावहत्य तथा सस्कवत म ें बहत ृ ं ं ं घवनष्ठ सबध ह।ै ्राषा के वबना वकसी

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **288**

प्रकार के सावहत्य की सकलपना नहीं की िा सकती ह।ै ◌ाषा ◌ं ◌ं ◌ं एि सस्कवत को एक-दसरे से पथक नहीं वकया िा सकता ह।ै इस प्रकार,

◌ाषा, सावहत्य एि सस्कवत ◌ृ ◌ृ ◌ृ ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं ◌ू तीनों एक-दसरे म ें अतगवभ मफत ह ै और ि े राष्ट्रीय एकीकरि में महत्िपि भ र्वमका वन◌ाते ह।ैं सावहत्य ◌ु ◌ू ◌ू ◌ं ◌ू एक कला ह ै िो लोगों का मनोरिन करती ह,ै अनदवे शत करती ह ै तथा उन्ह ें आने िाल े सकट से ◌ु ◌ं ◌ं आगाह करती ह।ै यह विविध

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindigyansansar.com/2024/10/24/हिन्दी-व… + 3 resources! id: **289**

प्रकार के मलयों एि अवर्व्यवक्तयों को विकवसत करती ह।ै सस्कवत का ◌ृ ◌ू ◌ं ◌ं ज्ञान प्रदान करती ह ै तथा नागररक उत्तरदावयत्ि एि प्रिातावत्रक मलयों को बल प्रदान करती ह

।ै ◌ू ◌ं ◌ं 5.9 ◌ाषा वशक्षण की समस्याओ ◌ं एवं चुनौवतया ◌ाँ(5.7 एवं 5.8 के ववशेष संदर् भ म) ें वकसी ◌ी राष्ट्र की सस्कवत एि रिनीवत का उस राष्ट्र की ◌ाषा से व्यापक सबध होता ह।ै ◌ारत िसै े ◌ृ ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं बह◌ावषक सस्कवत िाले राष्ट्र म ें तो यह सबध और ◌ी स्पष्ट पररलवक्षत होता ह।ै ◌ारतीय पररदृश्य म ें ◌ृ ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं ◌ारत की सास्कवतक, सामाविक और रािनैवतक वस्थवत का यहीँ की ◌ाषाओ पर व्यापक प्रि◌ाि ह ै ◌ृ ◌ं ◌ं दृवष्टगोचर होता ह।ै इस प्रि◌ाि के अनरुप ◌ारतीय ◌ाषाओ की एक विशेष शवै क्षक प्रवस्थवत तथा ◌ु ◌ं समस्याए ◌ँ ह।ैं यथा, वहदी ◌ाषा का उत्तर ◌ारत म ें मात◌ाषा एि विदशे ◌ी ◌ाषा

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 3 resources! id: **290**

के रुप में अध्ययन-अध्यापन ◌ृ ◌ं ◌ं होता ह ै तो दवक्षि ◌ारत में वद्वतीय ◌ाषा एि विदशे ◌ी ◌ाषा के रुप म

ें इसका अध्ययन-अध्यापन होता ह।ै ◌ं इन विशेष शवै क्षक प्रवस्थवत एि समस्याओ के कारि ◌ाषा वशक्षि एि अवधगम म ें अनेक चनौवतयों एि ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं कवठनाइयों

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.jansatta.com/khel/cricket/pak-vs-ba… id: **291**

का सामना करना पड़ता ह।ै एक ◌ाषा वशक्षक को वशक्षि कायभ करते समय विन प्रमख ◌ु चनौवतयों का सामना करन

◌ा पड़ता ह ै उनका िि्नभ वनमनवलवखत ह:ै ◌ु 1. भाषा के कायत का अपणत प्रचिा- ◌ाषा को सप्रेषि

Plagiarism detected: **0.07%** https://navbharattimes.indiatimes.com/astro/gr… + 2 resources! id: **292**

के माध्यम के रुप में इतना अवधक प्रचाररत ◌ू ◌ं कर वदया गया ह ै वक िनमानस इसके अवतररक्त ◌ाषा के विषय म ें कछ और सोचता ही नहीं ह।ै ◌ु लेवकन सप्रेषि का माध्यम होने के साथ ह

◌ी साथ ◌ाषा प्रत्येक बालक को उसका दृवष्टकोि ◌ं विकवसत करने में सहायता करती ह।ै िह बालक की रुवचयों, क्षमताओ, मलयों एि अवि◌ृवतयों ◌ृ ◌ू ◌ं ◌ं को ◌ी आकार

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **293**

प्रदान करती ह।ै 2. भाषाई कौशल का सम्यक ववकास- ◌ाषा वशक्षक का कायभ प्रमख चार ◌ावषक कौशलों- ◌ु श्रि, िाचन, लेखन एि पठन कौशल का विकास

करना होता ह।ै विद्यालय में ◌ाषा वशक्षक ◌ं बालक में पठन एि लेखन कौशल के समयक विकास म ें तो सफल हो पाता ह ै लेवकन विद्यालय ◌ं पाठयिम के कारि श्रि एि िाचन कौशलों के समयक विकास म ें सफल नहीं हो पाता ह।ै ◌ु ◌ं 3. भाषा एव सावहत्य के प्रवत रुवच का अभाव- यह ◌ारतीय पररप्रेक्ष्य में एक बहत बड़ी चनौती ◌ु ◌ं ह ै क्योंवक यहीँ अग्रिे ◌ाषा को छोड़कर िनमानस म ें वकसी अन्य ◌ाषा एि उस ◌ाषा के ◌ं ◌ं सावहत्य के प्रवत पयाभप्त पयाभप्त अरुवच ह।ै विद्याथी का ध्यान विज्ञान एि िाविज्य िसै े विषयों पर ◌ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 120 ◌ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ◌ं कें वित रहता ह।ै ◌ाषा एि सावहत्य के प्रवत उसका कोई रुझान नहीं होता ह।ै पररिामस्िरुप ◌ाषा ◌ं वशक्षि म ें अरुवच की समस्या उत्पन्न हो िाती ह।ै 4. भाषा का मानक रुप व स्थानीयता- ◌ाषा वशक्षि के साथ स्थानीयता को सबवधत करना ◌ं ◌ं आिश्यक ह।ै यवद ◌ाषा को स्थानीयता के साथ सबवधत नहीं वकया िाएगा तो विद्याथी अपन े ◌ं ◌ं ससार को साथभक रुप से नहीं समझ पाएगीँ ।े वहदी ◌ाषा के

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.munotes.in/Articles/Macro Econom… + 2 resources! id: **294**

क्षेत्र में तो यह बात और ◌ी महत्िपि्भ ◌ू ◌ं ◌ं हो िाती ह।ै ग्रामीि क्षेत्रों में आवदिासी क्षेत्र

ों के विद्यावथभयों की मात◌ाषा िहीँ की स्थानीय ◌ृ बोली होती ह।ै उन बोवलयों को वहदी की बोवलयों म ें सवममवलत वकया तो गया ह ै लेवकन उन ◌ं बोवलयों म ें और वहदी के मानक रुप में गहरा अतर होता ह।ै यह अतर अवधगम प्रविया के ◌ं ◌ं ◌ं प्रि◌ावि भ सपादन में बाधक ह।ै ◌ू ◌ं 5. वततनी उच्चािण सबवधत त्रवटयाँ- शि वलखना ि शि बोलना वकसी ◌ी ◌ाषा का एक ◌ु ◌ु ◌ु ◌ं ◌ं महत्िपि भ अग होता ह।ै शि लेखन एि शि िाचन का महत्िपि्भ अग शि ितभनी ि शि ◌ू ◌ु ◌ु ◌ू ◌ु ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं उच्चारि ह।ै ◌ाषा के वशक्षकों में त्रवटपि भ ितभनी एि उच्चारि की समस्या का पयाभप्त मात्रा म ें ◌ु ◌ू ◌ं पाया िाना ◌ाषा वशक्षि की एक बड़ी चनौती ह ै क्योंवक िब वशक्षक ही शि अशि वलखगें े एि ◌ु ◌ु ◌ु ◌ं बोलेंगे तो विद्याथी कहाँ से शि वलखना एि बोलना सीख पाएगीँ ।े ◌ु ◌ं 6.

पिापरिक वशक्षण वववधयाँ- अिा ्री ्राषा वशक्षक वशक्षि की पारपररक विवधयों का ही ं ं सहारा लेते ह ैं िो की ्राषा वशक्षि को नीरस बना दते ा ह।े 7. सहायक उपकिणों के अभाव की समस्या- ितभमान यग तकनीकी का यग ह।ै वशक्षि ु ु अवधगम के वलए अनेक प्रकार के यावत्रक साधनों का विकास बहत पहले ही हो चका ह।ै ्राषा ु ं वशक्षि के वलए ्राषा प्रयोगशाला के सप्रत्यय को ्री िन्म वमल चका ह ै ए ि उसका पयाभप्त ु ं ं विकास ्री हो चका ह।ै लेवकन ्ारतीय पररदृश्य में अिा ्री विद्यालयों में इन उपकरिों का ु पयाभप्त अ्िा ह ै और वशक्षकों को इन उपकरिों के उपयोग के वलए प्रवशवक्षत ्री नहीं वकया िाता ह।ै अतः, सहायक उपकरिों का अ्िा ्राषा वशक्षि के वलए एक महत्िपि भ चनौती ह।ै ू ु वहदी ्राषा वशक्षि की उपरोक्त चनौवतयों को सामाविक एकीकरि ए ि राष्ट्रीय एकीकरि के सदर्भ म ें ु ं ं ं ्राषा वशक्षि की चनौती के रुप म ें ्री दखे ा िा सकता ह।ै सामाविक एकीकरि ए ि राष्ट्रीय एकीकरि म ें ु ं ्राषा की र्वमका महत्िपि भ होती ह।ै अब यवद ्राषा का वशक्षि ही ठीक से नहीं हो पाएगा तो ्राषा द्वारा ू ू वकए िाने िाल े कायों का उवचत सपादन कै से स्िर् हो पाएगा। यथा, ्राषा का एक कायभ समिा के ं ं विवर्न्न सदस्यों के मध्य सप्रेषि स्थावपत करना ए ि विद्यावथभयों म ें मलय, दृवष्टकोि ए ि अवर्व्यवक्त ू ं ं ं विकवसत करना ह।ै ्राषा का वशक्षि उवचत ढग से नहीं होगा तो विद्याथी को शि-शि बोलना, ु ु ं वलखना, पढ़ना और सनना नहीं आएगा। समिा के विवर्न्न सदस्यों से सप्रेषि कै से करेगा? उसमें मलय, ु ू ं अवि्र्वक्त, दृवष्टकोि आवद का समवचत विकास कै से होगा? वनष्कषतभ ः, हम यह कह सकत े ह ैं वक ्राषा ृ ु वशक्षि की उपरोक्त सारी चनौवतयाँ सामाविक एकीकरि ए ि राष्ट्रीय एकीकरि के सदर्भ म ें ्राषा वशक्षि ु ं ं की चनौवतयाँ ह।ैं ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 121 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं अभ्यास प्रश्न 15. समिा के विवर्न्न इकाइयों म ें समरसता स्थावपत करने म ें ्राषा की र्वमका के पक्ष म ें कम से ू कम पाँच तकभ द।ें 16. राष्ट्रीय एकीकरि म ें ्राषा की र्वमका के पक्ष म ें कम से कम पाँच तकभ वलख।ें ू 17. राष्ट्रीय एकीकरि के विर्दे नकारी शवक्तयों को सचीबि कीविए । ू 18. वशक्षा आयोग 1964-66 ने अपने प्रवतिदे न म ें ्राषा के माध्यम से राष्ट्रीयकरि के वलए िो सझाि वदए थे, उनका सक्षेप में उललेख कीविए । ु ं 19. ्राषा वशक्षि की समस्याओ ए ि चनौवतयों का उललेख कीविए । ु ं ं 5.10 सारांश ्राषा एक अवत व्यापक शब्द ह।ै इसम ें मनष्य ए ि मनष्येतर प्राियों दोनों की ्राषाओ को शावमल वकया ु ु ं ं िाता ह।ै लेवकन िब हम अध्ययन-अध्यापन के एक विषय के रुप म ें या ज्ञान की एक शाखा के अथभ में बात करते ह ैं तो ्राषा का अथ भ सकवचत हो िाता ह ै और इसका आशय वसफभ मनष्य की ्राषा से हो िाता ु ु ं ह।ै प्रस्तत इकाई में ्राषा को परर्ावषत करते समय वसफभ मनष्यों की ्राषा की ही बात की गई ह।ै इकाई ु ु के अगले खड म ें ्राषा के आिश्यक तत्िों पर प्रकाश डाला गया ह।ै ्राषा ज्ञान की एक शाखा ह;ै कै से? ं इस कथन पर ्री पयाभप्त चचाभ इस अध्याय में की गई ह।ै इसके साथ ही साथ पाठयिम म ें ्राषा का क्या ् स्थान होना चावहए, इसकी ्री व्याख्या की गई ह।ै समरस समिा के अथभ को समझाते हए समिा के विवर्न्न इकाइयों में समरसता स्थावपत करने म ें ्राषा की र्वमका का िणिभ ्री वकया गया ह।ै राष्ट्रीय ू एकीकरि, िो वक ितभमान की सबसे बड़ी चनौती ह,ै म ें ्राषा की र्वमका का िणिभ इकाई के अतररम ु ू ं ्राग म ें वकया गया ह।ै इकाई के अवतम ्राग म ें ितभमान पररदृश्य म ें ्राषा वशक्षि की चनौवतयों को प्रस्तत ु ु ं वकया गया ह।ै इस प्रकार यह इकाई स्थावपत करती ह ै वक ्राषा वसफभ ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम ही नहीं ह ै िरन स्िय ्री ज्ञान की एक शाखा ह ै विसका अन्य विषयों की ही ्राँवत अध्ययन-अध्यापन होना चावहए। ं इकाई द्वारा की गई यह स्थापना ्राषा-वशक्षि ए ि अवधगम को प्रोत्साहन प्रदान करेगी। ं 5.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. ्राष ् 2. पाविनी 3. नहीं 4. मनष्य ु 5. ्राषा उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 122 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 6. ्राषा उच्चारि अियि से उच्चररत यादृवच्छक ध्िवन प्रतीकों की िह व्यिस्था ह ै विसके द्वारा वकसी ्राषा ्राषी समिा के लोग आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते ह।ैं 7. ्राषा यादृवच्छक ध्िवन सके त प्रिाली को कहते ह ैं विसकी सहायता से मनष्य परस्पर विचार- ु ं विवनमय या सहयोग करते ह।ैं 8. अथभपि भ उच्चररत ध्िवनयों की वनयमानशावसत व्यिस्था ्राषा ह।ै ू ु 9. यादृवच्छक का अथभ होता ह ै मनगढ़त या अपनी इच्छा से वनवमतभ । ध्िवन सके त विस अथभ का ं ं प्रवतवनवधत्ि करते ह ैं इनका उसके साथ कोई सबध नहीं होता ह।ै िसै े- आम िो वक एक िक्ष ृ ं ं का प्रवतवनवधत्ि करता ह,ै सस्कत में उसी के वलए रसाल तथा अग्रिे ी में मगैं ो शब्द का ृ ं ं प्रवतवनवधत्ि करता ह।ै दसरे शब्दों में हम यह कह सकते ह ैं वक ध्िवन और अथभ में कोई तावकभ क ू सबध नहीं होता ह।ै ं ं 10. समय के साथ-साथ एक अथभ विशेष का प्रवतवनवधत्ि करने के वलए विशषे ध्िवन सके तों का ं समह समिा में प्रवसि हो िाता ह।ै इसे ही ध्िवन सके त या ध्िवन सके त के समहों का रुढ़ हो ू ू ं ं िाना कहा िाता ह।ै 11. ्राषा 12. िन्मिात 13. समिा 14. सोिपरर 15. इस प्रश्न के उत्तर के वलए इस इकाई का खड 5.7 दखे ।ें ं 16. इस प्रश्न के वलए इस इकाई का खड 5.8 वलखें। ं 17. राष्ट्रीय एकीकरि की विर्दे नकारी शवक्तयाँ वनमनवलवखत ह:ैं िाविवाद साम्प्रदावयकता ं ्राषािाद क्षेत्रिाद िोट की रािनीवत तथा प्रातिाद ं 18. इस प्रश्न के उत्तर के वलए इस इकाई का खड 5.8.1 दखे ें। ं 19. ्राषा वशक्षि की चनौवतयाँ ए ि समस्याए ँ वनमनवलवखत ह:ैं ु ं ्राषा के कायभ का अपिभ प्रचार ू ्राषाई कौशल का समयक विकास ्राषा ए ि सावहत्य के प्रवत रुवच का अ्िा- ्राषा का मानक रुप ि ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 123 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं स्थानीयता ितभमनी उच्चारि सबवधत त्रवटयाँ ु ं ं पारपररक वशक्षि विवधयाँ ं सहायक उपकरिों के अ्िा की समस्या 5.12 सदं र् भ ग्रंथ सची एवं सहयोगी पुस्तकें ू

1. कमार, कष्ि (2004), बच्चे की ्राषा और अध्यापक, राष्ट्रीय पस्तक न्यास, नई वदलली। ृ ु ु कौवशक, ियनारायि (1987), वहन्दी वशक्षि, हररयािा सावहत्य अकादमी, चडीगढ़। ं 2. गप्ता,मनोरमा (1984), ्राषा अवधगम, कें िीय वहन्दी सस्थान, आगरा। ु ं 3. चतिदे ी, रामस्िरूप (2005), वहन्दी सावहत्य और सिदे ना का विकास, लोक्ारती प्रकाशन, ु ं वदलली। 4. िोसेफ िस्े सी(1997), ्राषा की िवै ज्ञकता, ज्ञानोदय प्रकाशन, धारिाड़। 5. वतिारी, ्रोलानाथ(1990), वहन्दी ्राषा वशक्षि, वलवप प्रकाशन वदलली। 6. वद्ववदे ी, हिारी प्रसाद ्राषा, सावहत्य और दशे (गगल पस्तक)। ू ु 7. पाविनी, अष्टाध्यायी या सत्रपाठ गगल से प्रप्त वकया हआ। ू ू 8. पाण्डेय, रामशकल(1993), वहन्दी

वशक्षि, विनोद पस्तक मवदर, आगरा। ु ं 9. पाडेय, हमे चन्ि (2001), ्रावषक समप्रेषि और उसके प्रवतदश।भ ं 10. लहरी,रिनीकान्त (1975), वहन्दी वशक्षि, राम प्रसाद एड सस, आगरा। ं ं 11. ाियगॉत्सकी (2009), विचार और ्राषा(अन०), ग्रथ वशलपी, नई वदलली। ू ं 12. शमाभ, रामविलास (1978), ्रारत की ्राषा समस्या, रिाकमल प्रकाशन, नई वदलली। 13. श्रिीास्ति, रीन्िनाथ (2009) , ्राषाई अवस्मता और वहदी, िाी प्रकाशन, नई वदलली। ं 14. वसह, वनरिन कमार (1981) माध्यवमक विद्यालयों में वहन्दी वशक्षि, रािस्थान वहन्दी ग्रथ ु ं ं ं अकादमी, ियपर। ु 15. शमाभ, दि ि नाथ, यथा उित शमाभ, िापेयी, कष्िदास; वहदी शब्दानशासन, ािरिसी। ृ ु ं ृ 5.13 वनबधात्मक प्रश्न ं 1. ्राषा के तत्िों का उललेख कीविए। 2. ्राषा ज्ञान की एक शाखा ह।ै इस कथन की वििेचना कीविए । 3. पाठयिम म ें ्राषा के स्थान पर एक वनबध वलवखए । ् ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 124 ु शास्त्रों एव ववषयों का अवबोध CPS 2 ं 4. समरस समाि से आप क्या समझते ह?ैं 5. समाि के विवर्न्न इकाइयों म ें समरसता स्थावपत करने म ें ्राषा कै से योगदान करता है? 6. राष्ट्रीय एकीकरि से आप क्या समझते ह?ैं 7. राष्ट्रीय एकीकरि म ें ्राषा की र्वमका का िािनभ कीविए । ू 8. ितभमान पररदृश्य म ें ्राषा वशक्षि की चनौवतयों पर एक वनबध वलवखए । ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 125 ु

Disclaimer:

This report must be correctly interpreted and analyzed by a qualified person who bears the evaluation responsibility!

Any information provided in this report is not final and is a subject for manual review and analysis. Please follow the guidelines: Assessment recommendations

Plagiarism Detector - Your right to know the authenticity! © SkyLine LLC